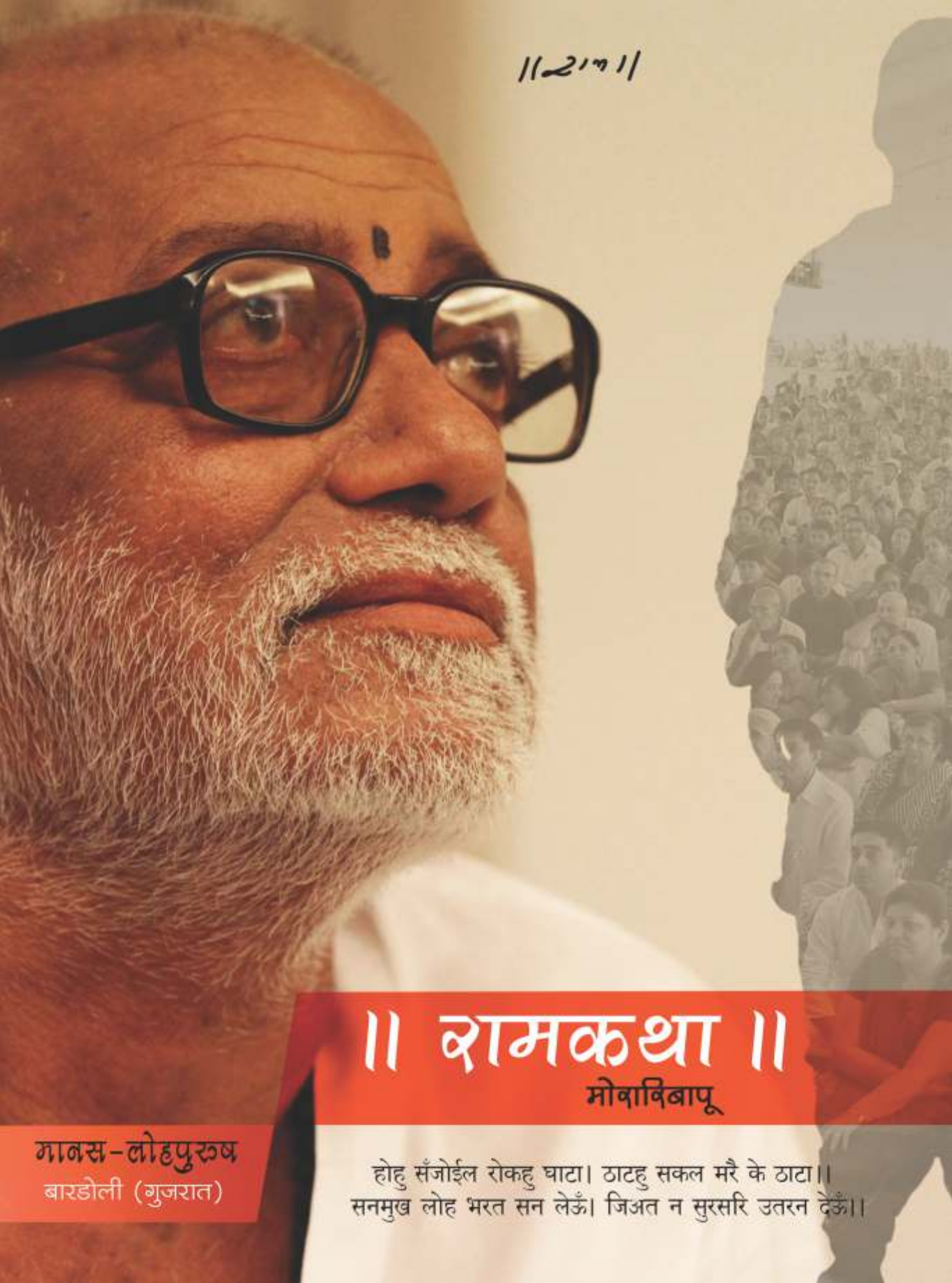

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

मानस-लोहपुरुष

बारडोली (गुजरात)

होहु सँजोईल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरै के ठाटा॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ॥

॥ રામ ॥
॥ રામ ॥

।। **रामकथा** ।।

मानस–लोहपुरुष

मोरारिबापू

बारडोली (गुजरात)

दिनांक : ०७-१२-२०१३ से १५-१२-२०१३

कथा-क्रमांक : ७५३

प्रकाशन :

जून, २०१४

प्रकाशक

श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,

तलगाजरडा (गुजरात)

www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट

© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक

नीतिन वडगामा

nitin.vadgama@yahoo.com

राम–कथा पुस्तक प्राप्ति

सम्पर्क–सूत्र :

ramkatha9@yahoo.com

ग्राफिक्स

स्वर एनिम्स

प्रेम–पियाला

मोरारिबापू की रामकथा 'मानस–लोहपुरुष' दिनांक ७–१२–२०१३ से १५–१२–२०१३ दरमियान बारडोली (गुजरात) की ऐतिहासिक भूमि में सम्पन्न हुई। 'लोहपुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व की कई विलक्षणताओं भी 'मानस' के पात्रों–प्रसंगों के संदर्भ में इस कथा अंतर्गत उद्घाटित होती रही।

विचार की, वाणी की और वर्तन की मक्कमता को साधक के आंतरिक लोहतत्त्व के रूप में निर्दिष्ट कर बापू ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व की यह त्रिविध मक्कमता का निर्देश किया एवं सरदारसाहब के जीवनप्रसंगों का स्मरण करते हुए उसके प्रमाण भी दिए। वेश के नहीं, बल्कि वृत्ति के साधु के रूप में सरदार पटेल का परिचय देते हुए बापू ने ऐसा निवेदन भी किया कि, 'सरदार सहज है, सबल है और सजल भी है।'

'सरदार' शब्द का निजी अर्थ प्रकट करते हुए मोरारिबापू ने कहा कि 'स' मानी सहजता, इस आदमी में सहजता बहुत है। 'र' मानी रक्षा करना। समग्र राष्ट्र की रक्षा के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया। 'दा' मानी दायित्व। सरदार को अपने दायित्व की संप्रज्ञता है। 'र' मानी रहम। जिनके दिल में रहमत हो वह दूर हो तो भी रक्षा करेगा। इस तरह 'सरदार' शब्द के प्रत्येक वर्ण के विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने के अतिरिक्त बापू ने सरदार पटेल में निहित यह सभी गुण–लक्षण प्रति भी अंगुल्यानिर्देश किया।

'सरदार पटेल शंकर की तरह नीलकंठ और अकिंचन थे।' ऐसा साधार सूत्रपात भी मोरारिबापू ने किया; तो, साथ ही 'रामायण' के कुछ पात्रों के साथ सरदारसाहब का साम्य प्रकट करते हुए ऐसा भी कहा कि 'रामायण' के एक गायक के नाते मैं बहुत सावधानी के साथ कह सकूं कि, सरदार पटेल में लक्ष्मण की जागृति थी, शत्रुघ्न का मौन था, भरत का समर्पण था और हनुमान का धैर्य तथा स्थैर्य था।

बारडोली में आयोजित मोरारिबापू की यह रामकथा के प्रेमयज्ञ समांतर वल्लभकथा का विचारयज्ञ भी चलता रहा, जिसमें कथा के प्रारम्भ में सर्वश्री नगीनदास संघवी, दक्षाबहन पट्टणी, जय वसावडा और गुणवंत शाह के वक्तव्य का आयोजन भी हुआ। उन वक्तव्यों के माध्यम से सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं विचारों का परिचय भी मिला। 'मानस–लोहपुरुष' निमित्त यों रामकथा और वल्लभकथा दोनों की एक साथ उपलब्धि हुई।

– नीतिन वडगामा

मानस–लोहपुरुष

।। १ ।।

सरदार पटेल बाह्य वेश के साधु नहीं थे, वृत्ति के साधु थे

होहु सँजोईल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरै के ठाटा।।

सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ।।

बाप, परमात्मा की अहेतु कृपा से पुनः एक बार स्वराज आश्रम, बारडोली द्वारा आयोजित रामकथा का आरंभ हो रहा है तब मैं भी व्यासपीठ पर से पूज्य विश्ववंद्य गांधीबापू और जिनका यह बहुत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र तीर्थ रहा है ऐसे लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की परमचेतना को प्रणाम कर कथा का आरंभ कर रहा हूं। यहां उपस्थित सभी आदरणीय महानुभाव, श्रोता भाई-बहनों और समग्र कथा के आयोजन में निमित्तमात्र यजमान स्नेही कांतिभाई वाणंद का यह वतन है उनका समग्र परिवार, अन्य सभी को व्यासपीठ पर से मेरे प्रणाम।

बाप, बारडोली में यह तीसरी रामकथा है। प्रथम कथा किस हेतु हुई थी यह स्मरण में नहीं है। दूसरी कथा परम आदरणीय, परम बौद्धिक विद्यापुरुष रमणलाल बापा पाठक, जिनके एक विचार से शीघ्र ही सहमत होकर मेरी व्यासपीठ ने उस विचार को पकड़ा कि मंदिरों के लिए बहुत कुछ होता है पर अब शौचालयों के लिए कुछ होना चाहिए। यह विचार मुझे पसंद आया। रमणबापा के इस विचार से सहमत होकर पूरी कथा हमने बारडोली में की। इस रामकथा में आदरणीय विचारयज्ञ के आचार्य गुणवंतभाई शाह का संकेत रहा

कि, ''बापू, सरदार पटेल की स्मृति में एक कथा होनी चाहिए। यदि यह हो सके तो मैं भी दो दिन के लिए आऊंगा।'' पूजनीय नगीनदास बापा ने शुभकामना व्यक्त की। यह कथा हम सरदार पटेल साहब की स्मृति में गाने जा रहे हैं।

मेरी हेसियत नहीं कि सरदार साहब के बारे में कुछ कहूं। पर मुझे यह फायदा हुआ कि बापा (नगीनदास संघवी) दो दिन सरदार पटेल के बारे में बोलेंगे। दो दिन जय वसावडा बोलेंगे। एक दिन दक्षाबहन पट्टणी बोलेगी। दो दिन आदरणीय गुणवंतभाई शाह बोलेंगे। मैं सोच रहा था कि अब मैं क्या बोलूं? पर हमें इतने अधिकारी, अनुभवी वक्ता मिले हैं। इस प्रेम यज्ञ में आहुति देने के लिए सस्नेह आ रहे हैं। मुझे खुशी है कि कम मेहनत करनी पड़ेगी। मैं कुछ कहने जाऊं तो इन सभी चेतनाओं की ओर मेरा अहोभाव कायम रहा है, मेरा प्रणम्यभाव हंमेशा रहा है। अत: शायद अहोभाव भी व्यक्त हो। भाव होने के कारण आधार न भी हो। आप सभी आधार सह अनुभवपूर्ण वाणी से बोलनेवाले हैं। अत: हम सबको काफी प्रेरणा मिलेगी। इन सभी गुरुजनों की शुभकामना से, उनसे जो सुना और मैंने जो कुछ पढ़ा तो मैं भी इन गुरुजनों के पीछे छपक छय्या करूंगा। बापा ने यहां प्रवचन दिया। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल एक साधु है। ऐसा कोई कहे तो मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। अत: एक साधु की स्मृति में हम सब मिलकर भगवद्कथा का गायन करेंगे।

साधु का मुख्य कार्य भजन है। बिना भजन सब व्यर्थ है। सरदार का ऐसा एक वचन है। सरदार पटेल का बाह्य वेश भले साधु का न रहा हो, पर वृत्ति अवश्य साधु की रही है। प्रश्न वेश का नहीं है। हर एक को अपना अपना वेश होता है; पर सरदार भीतर से साधु थे। उनकी स्मृति में हम सब मिलकर भगवद्कथा का गान करेंगे। यह एक विशेष प्रकार का यज्ञ है। राम कथा के यज्ञ के साथसाथ एक विचारयज्ञ भी इसके साथ जुड़ा हुआ है।

फिर से मैं एक बार अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। प्रश्न यह है कि मुझे सरदार पटेल की स्मृति में 'रामचरित मानस' का गायन करना है। मैं इस कथा को सरदार पटेल के साथ कैसे जोडूं? यथार्थ क्या है? आज दोपहर तक निश्चित नहीं था। मेरे एक युवा श्रोता ने आज दो बजे कहा कि, बापू, 'रामायण' में इतनी बार 'लौह' शब्द आया है। हम सरदार पटेल को 'लोहपुरुष' कहते हैं। आज मैंने 'अयोध्याकांड' में से दो कठिनतम चौपाईयां ली है। समझने और समझाने में कठिन है और हमें गाने में और याद रखने में तो बहुत ही कठिन है! इसमें 'लोह' शब्द है। यद्यपि वहां 'लोह' शब्द मुठभेड़ के अर्थ में है। यह पंक्ति लोहे से लोहे के टकराने की है। मुझे यहीं से मार्ग मिला। गुरुकृपा से काफी विचार आने लगे। मैं खुशी के मारे सो न सका! साधुपुरुष सरदार पटेल जैसा लौह की ताकतवाला होना चाहिए।

मेरु रे डगे पण जेनां मनडां डगे नहि,
मरने भांगी रे पडे भरमांड रे.
विपद पडे पण वणसे नहि,
इ तो हरिजननां परमाण रे ...

मुझे इसमें से काफी मार्गदर्शन मिला। यूं अनजाने में ही गुरुकृपा से विचार आने लगे तब मुझे ऐसा लगे, मैं जो बोल रहा हूं यह सब मुझे 'रामचरित मानस' में से मिल रहा है! वह सब सच होता जाय। सरदार पटेल का स्वभाव, उनका व्यवहार, उनकी आंतरिक वृत्ति, उनके निर्णय, उनका त्याग ऐसी एक लोकोत्तर व्यक्ति पटेलसाहब है। उनके जीवन के कितने पहलू है! उन्होंने 'भगवद्कथा' कंठस्थ की। मुझे प्रसन्नता हुई। 'गीताप्रेस' का छोटा-सा गुटका वे अपने साथ रखते थे। उनकी स्मृति में कथा गानी ही चाहिए। उनका ऋण अदा करना ही चाहिए। प्रभु यह योग बना देता है। कांतिभाई कितने ही समय से कथा मांगते थे! सुयोग हुआ कि इतनी बड़ी चेतना की स्मृति में कथा हो रही है। उन्होंने पूरी सेवा स्वीकार कर ली।

भरत स्वयं लोहपुरुष है। गुह्यराज लोहपुरुष है। जंगल में रहते भील, कोल, किरात लोहपुरुष है। परशुराम के साथ जिनका वर्णन किया जाता है वह भगवान शंकर के धनुष्य के लिए तुलसी ने 'अधमय' शब्द लिखा है। जिसका अर्थ है फौलादी। जब रावण के दरबार में अंगद का पांव स्थिर है तब वहां 'लोह' शब्दप्रयोग नहीं है। पर 'अंगद का पांव!' पहले लगा 'मानस-अंगद' कहूं और अंगद के चरित्र के साथ सरदार पटेलसाहब के जीवन के किन-किन पक्षों को जोड़ सकूं? वालि की मृत्यु के बाद राज्य का उत्तराधिकारी अंगद था फिर भी राम ने सुग्रीव को गद्दी दी। अंगद एक शब्द तक न बोला। उसने वह पद छोड़ दिया। अंगद ने वह पद रावण के दरबार में गाड दिया। इससे पूर्व उसने अपना पद जाने दिया। जो पद जाने दे उनको सरदार का पद दुनिया के चौक में प्राप्त होता है। यह प्रमाण है। हम सब जानते हैं कि प्रदेश कोंग्रेस समिति इनके पक्ष में थी कि यही प्रधानमंत्री बने पर इस साधु ने (गांधीजी ने) एक चिठ्ठी लिखी। इस साधु ने (सरदारने) बिना एतराज़ वह पद जाने दिया।

बापा (नगीनदास संघवी) उस दिन बता रहे थे कि प्रधानमंत्री पद जाने दिया। भले ही ये पदासीन न हुए पर देश में स्वीकार्य बन गए। जो पदमोह न रखे उनका ही पद समाज की रावणसभा में लोहस्तंभ की तरह मज़बूती से आरोपित होता है। किसी की ताकत नहीं कि उसे टस से मस कर सके। मैं ऐसा लेना चाहता था। पर आज मुझे 'लोह' शब्द का स्मरण कराया गया। हम ये सब प्रसंग लेंगे! लोह माने लोह। सुवर्ण सत्ता का प्रतीक है, लोहा सेवा का प्रतीक है। लौहे में से औज़ार बनते हैं। यह एक ऐसी धातु है जिसे पारस की प्रतीक्षा रहती है ताकि वह सुवर्ण बन सके।

'रामचरित मानस' अनुसार तीन प्रकार के जीव विषयी, साधक, सिद्ध है। मैंने चौथा 'शुद्ध' जोड़ा है। विषयी कौन है? जो कुधातु है, लोहा है। साधक कौन? जो गुरु की खोज करे। जिसे पारसमणि छू जाय वह साधक। सिद्ध कौन? जिस गुरु ने लोहे का स्पर्श करा, सोना न बनाया हो पर उसे पुन: पारस बना दिया हो वह सिद्ध है। तीनों के केन्द्र में लोहा है। हम सब जानते हैं कि शरीर में लोहतत्त्व कम हो जाय तो तकलीफ़ होती है। 'रामायण' में काफ़ी बातें लोहतत्त्व की है।

तो बाप, इस कथा का विषय 'मानस-लोहपुरुष' रहेगा। मैं तोड़मरोड़ कर खड़ा नहीं करना चाहता। 'मानस' का आधार रहेगा। हम उस पर सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा करेंगे। संवाद रचेंगे। पहले दो चौपाई का अर्थ कह दूं।

राम को मनाने के लिए भरतजी चतुरंगी सेना लेकर चित्रकूट जाते हैं। गंगा तट पहुंचे। वहां श्रृंगबेरपुर भीलों की नगरी थी। सबको पता चला कि भरत आ रहे हैं। सबको भरत के बारे में गलतफ़हमी है। चतुरंगी सेना के कारण ज्यादा गलतफ़हमी हुई कि यह निष्कंटक राज्य चलाने के लिए निकल पड़ा है। ऐसे में गुह्यराज बोले, 'होहु सँजोईल रोकहु घाटा।' गुह्यराज ने अपने भीलों से कहा, सभी सावधान हो जाओ। गंगा तट के सभी घाट रोक लो। 'ठाटहु सकल मरै के ठाटा।' सबके मरने के लिए ठाट तैयार करो। पता है कि भरत से जीतना मुश्किल है। गुह्यराज कहते हैं, 'सनमुख लोह भरत सन लेऊँ।' भरत के सामने लोहा लोहे से टकरायगा। पर 'जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ।' हम जब तक जीवित है तब तक गंगापार इस भरत के किसी भी आदमी को आने नहीं देंगे। तैयारी करो। इस तरह गुह्यराज भी लोहपुरुष है। भरत स्वयं भी लोहपुरुष है। यह मुठभेड दो समान के

बीच में है। एक दूसरा प्रमाण दूं। 'रामचरित मानस' का दोहा है -

कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर।।

भरत कहते हैं हंमेशा कार्य से ज्यादा कठिन कारण है। मेरी माने जो कार्य किया इसमें कारण तो मैं हूं। यह बहुत कठिन है और यह नियम है। यूं कि हड्डी में से वज्र उत्पन्न होता है और पथ्थर में से लोहा उत्पन्न होता है। मैं लोहे जैसा हूं, कठोर हूं, ऐसा निवेदन भरत का है। पटेलसाहब भी ऊपर से कठोर है पर भीतरी बात अलग है। 'रामायण' से जो लोहसंदेश आ रहे हैं इसका मैं स्वागत करता हूं। मैं आपके साथ शेर करूंगा। मेरा भरोसा दृढ होता जा रहा है कि 'मानस' से मुझे सब कुछ मिलता है।

तो बाप, गुह्य फ़ौलादी है; भरत फ़ौलादी है; कोल-किरात फ़ौलादी; 'रामायण' में पंक्ति है 'लोह लै लौका तिरा।' साहब, हम सब का अनुभव हो, नौका में आप लोहा डाल दे तो वह तैर जाएगा। उसने लकड़ी का आश्रय लिया है। पर लोहे पर नौका उलटी करके डाल दे तो नौका तैरेगी नहीं। डूब ही जाएगी। तुलसी लिखते हैं, भील ऐसे लोहे के हैं कि उन्होंने लोह लेकर उस पर नौका रखी और पार कर दी। यह सरदार ऐसा लोहपुरुष कि पूरे देश की नौका पार लगा दी।

तो, मेरी व्यासपीठ इस कथा का नामकरण 'मानस-लोहपुरुष' करती है। क्योंकि 'रामायण' से ऐसे चरित्र मिल रहे हैं। अपने जीवन के विकास और विश्राम के लिए भी ऐसा लोहतत्त्व समझना आवश्यक लग रहा है। अपने विचार पुरुषों को सुनते-सुनते उसमें से मार्गदर्शन प्राप्त करते-करते हम इस कथा में आगे बढ़ेंगे।

सरदार पटेलसाहब की स्मृति में इन दो पंक्तियों को केन्द्र में रखकर यह रामकथा 'मानस-लोहपुरुष' का गान होगा। विश्व की सर्वोच्च प्रतिमा बनाने का सरकार श्री का मनोरथ है, तो इसमें पूरे देश में से लोहा उगाही की बात है न? इतना कहकर आज की कथा की औपचारिकता का निर्वाह करता हूं कि यह एक ऐसा लोहपुरुष था जिसको जंग नहीं लग सकता था। नहीं तो लोहे को जंग लगती है। कितना बड़ा त्याग! ऐसी यह चेतनामयी लोहप्रतिमा। प्रभु ने मेरी व्यासपीठ को बहुत बड़ा योग दिया है।

हमने नेल्सन मंडेलाजी को श्रद्धांजलि दी। उनका प्रसिद्ध वाक्य है कि, 'आपने साउथ आफ्रिका को बेरिस्टर गांधी दिए। हमने हिन्दुस्तान को महात्मा गांधी दिए।' ये कितने वर्षों तक जेल में रहे! मुझे साउथ आफ्रिका स्थित उनके स्मृति स्थान में कथागान का अवसर मिला। इसकी प्रसन्नता है। हम सब ऐसी विभूति को श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

'रामचरित मानस' के सात सोपान, यह आप सब जानते हैं। उसका बाह्य रूप बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका, उत्तर, सात भागों में विभाजित है। किस तरह से विकसित हो, जो उत्तरावस्था तक हमें विकसित रखें ऐसी एक अंतर्यात्रा रामकथा की है। जो हमें छोटी समझ से प्रौढ समझ तक पहुंचाये। हमारी छोटी समझ में उठे प्रश्नों को क्रमश: आगे बढ़ाकर उनके जवाब मिलते जाय ऐसी एक अंतर्धारा 'रामायण' की बहती रहती है, जो 'उत्तरकांड' है। मैं इस तरह 'रामायण' का दर्शन करता रहा कि हम सबका आंतरिक विकास इसमें है। यह हमें एक ही जगह बांधकर नहीं रखती। एक-एक कांड एक-एक मुकाम है। यह परखना चाहिए कि साधक कहां पहुंचा है। मैं इस दृष्टि से रामकथा को देखता हूं। गांधीबापू का प्रिय ग्रंथ 'रामचरित मानस' है। 'आश्रमभजनावलि' में गांधीजी ने तुलसी के पद लिए हैं। विनोबाजी तो कहते थे 'रामचरित मानस' माँ का दूध है, घी नहीं। घी का पचना भारी है। दूध आसानी से पच जाता है। इन सभी महात्माओं ने हमें बहुत बल दिया है।

'रामचरित मानस' में सात बार 'रामचरित मानस' शब्द आया है। गलती हो तो सुधारिए। स्पर्धा नहीं करनी है। आध्यात्मिक यात्रा संपन्न करनी हो, पूर्ण संतोष प्राप्त करना हो तो स्पर्धा दूसरों के साथ नहीं स्वयं के साथ करनी चाहिए। इसके फायदे हैं। मैं स्वयं से स्पर्धा करूं और हार जाऊं तो मैंने ही खुद को हराया। निरुत्साह नहीं होना चाहिए। और जीत जाऊं तो मैं खुद को ही जीत गया। जब हम दूसरों को जीतते हैं तो अपने मन में अहंकार पैदा होता है। शायद हम सावधान रहे तो अहंकार न हो पर अपने मन में हर्ष उत्पन्न होता है। वह हर्ष किसी के पराजय पर खड़ा है। किसी की उदासीनता पर अपनी प्रसन्नता खड़ी है। यह ठीक नहीं है। हम हारने पर निरुत्साह होते हैं। कथाश्रवण कर क्या हम इतना नहीं कर सकते कि मैं स्वयं से स्पर्धा करूं; हारूं तो मैंने खुद को हराया और जीत जाऊं तो मैं खुद को जीत गया! बहुत प्रसन्नता होगी। क्यों दूसरों के साथ स्पर्धा? यह मुझे बहुत पसंद है। आप भी सोचियेगा।

'रामचरित मानस' शब्द का सात बार ही उल्लेख हुआ है। 'रामायण' संगीतमय शास्त्र है, उसमें सात स्वरों की सुंदर हार्मनी है। किसी भी शास्त्रीय राग में 'रामायण' गाई जा सकती है। किसी भी तर्ज पर गाई जा सके ऐसी यह सुरावलि है। अपने यहां सात लोक ऊपर है और सात पाताल है। यानी 'रामचरित मानस' चौदह भुवन में व्याप्त है। तो सात लोक ऊपर, सात पाताल के - यह सब राममय है। ऐसे सात-सात के टुकड़े 'रामचरित मानस' में बहुत है।

'बालकांड' के आरंभ में अपनी अंतर्यात्रा का पहला मुकाम जिसमें सात मंत्र, जिसमें पहला मंत्र 'वन्दे वाणीविनायकौ।' अपने यहां किसी वस्तु का आरंभ हो तो गणपति से होता है। 'रामायण' मातृदेवी की वंदना से शुरू हुआ है। सरस्वतीवंदना से 'रामायण' का आरंभ हुआ है -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

सभी जगह मातृशक्ति को अग्रीमता दी। फिर -

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।।

फिर आगे -

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।

जानकीजी को अग्रस्थान दिया। यूं सात मंत्रों में अपना पहला मुकाम इस तरह आगे बढ़ता है। फिर पांच सोरठें में श्लोक को लोक में उतारने का कार्य किया। तुलसी का यह एक अद्‌भुत विश्वमंगल कार्य संपन्न होता है। तुलसी ने यह शास्त्र ग्राम्यगिरा में उतारा। 'रामचरित मानस' के प्रथम प्रकरण में पूरी गुरुवंदना है।

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

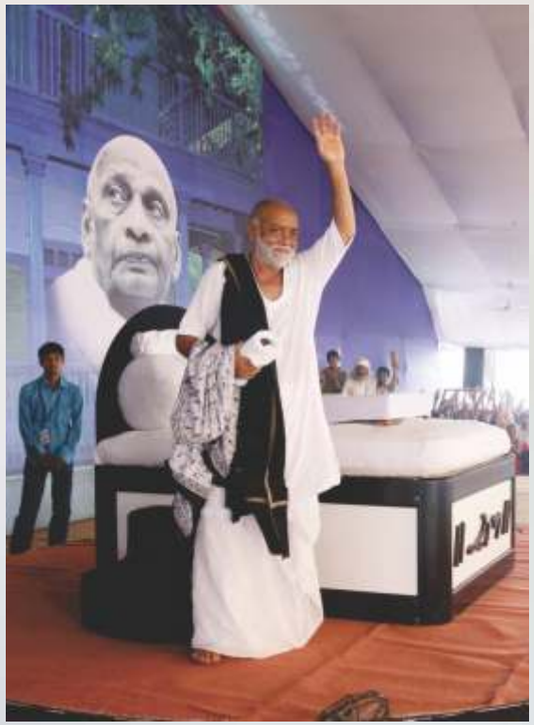

तो, प्रथम प्रकरण गुरुवंदना है। मेरी व्यासपीठ इस प्रकरण को 'गुरुगीता' मानती है। यहां गुरुमहिमा है। जिसे गुरु की आवश्यकता नहीं है, गुरु में आस्था न हो उसे कोई बाध्यता नहीं है। मुझे तो गुरु की जरूरत है। मार्गदर्शक की जरूरत है। दलपत पढियार साहब ने 'अस्मितापर्व' में एक बार कहा था, शायद गुरु कमजोर हो सकता है, गुरुपद कमजोर नहीं होना चाहिए। दीक्षित दनकौरी का शे'र है -

या तो कुबूल कर मुझे कमज़ोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तनहाईयों के साथ।

मानव में कमजोरियां होती है। पर गुरुपद कभी भी कमजोर नहीं होना चाहिए। इसीसे इस देश की मनीषा ने व्यक्ति नहीं, गुरुपद का स्वीकार किया है। तो बाप, जो हमें अंधेरे से ऊजाले की ओर ले जाए वही अपना गुरु, मार्गदर्शक है। जो मृत्यु के भय में से अमृत का आस्वाद कराए वही गुरु है। असत्य में से सत्य की ओर ले जाय वही गुरु है।

तो बाप, तुलसीदासजी ने प्रथम प्रकरण में गुरुमहिमा कर गुरुपदवंदना की है। गुरु की पदधूलि से, छोटी-सी प्रेरणा से, एक छोटा-सा सूत्र प्राप्त कर जो अपनी दृष्टि को उज्वल करेगा उसे संपूर्ण जगत राममय दिखेगा।

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

आंख के पवित्र होने से सब सुंदर लगा। सब में ब्रह्मदर्शन होने लगा। किसी एक मार्गदर्शक से थोड़ी-सी समझ मिलने से यह सब होता है। फिर महावीर हनुमानजी की वंदना हुई। हनुमानजी को भी हम गुरुपद दे सकते हैं। उनसे काफी प्रेरणा मिलती है। 'विनयपत्रिका' की पंक्तियां -

सकल-अमंगल-मूल-निकंदन।
मंगल-मूरति मारुत-नंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजी ने की। फिर सीताजी-रामजी की वंदना और रामनाम की वंदना है। यथा समय इस क्रम का निर्वाह करते-करते 'मानस-लोहपुरुष' की सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा हम अपने गुरुजनों को सुनने के बाद प्रतिदिन करेंगे। आज की कथा विराम लेती है।

आध्यात्मिक यात्रा संपन्न करनी हो, पूर्ण संतोष प्राप्त करना हो, तो दूसरों से स्पर्धा नहीं करनी चाहिए, स्वयं से करनी चाहिए। इसके फ़ायदें हैं। मैं खुद से स्पर्धा करूं, हार जाऊं तो मैं खुद से हारा; निरुत्साही न बनूं। जीत जाऊं तो मैं खुद से जीत गया। हम जब दूसरों से जीत जाते हैं तब अहंकार जन्म लेता है। शायद हम सावधान रहे तो अहंकार नहीं करते। पर अपने मन में हर्ष तो उत्पन्न होता ही है। यदि हम हारे तो निरुत्साह होते हैं। कथाश्रवण से क्या हम इतना नहीं कर सकते कि मैं खुद से स्पर्धा करूं। हार जाऊं तो मैंने खुद को हराया और जीता तो मैं खुद को जीत गया।

मानस-लोहपुरुष
।। २ ।।

विचार, वाणी और व्यवहार की दृढता साधक का आंतरिक लोहतत्त्व है

पुनः एक बार विश्ववंद्य महात्मा गांधीबापू की परम चेतना को और वंदनीय सरदार वल्लभभाई पटेल की कर्मठ चेतना को वंदन कर विषय प्रवेश करते हैं। रामकथा तो चलती रहती है। साथ-साथ वल्लभकथा भी चलती है। रामकथा के मतानुसार शब्द मात्र लें तो राम और वल्लभ में क्या फ़र्क है? 'भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं।' तुलसीदासजी अत्रिजी के मुंह से राम की स्तुति कराते 'वल्लभ' शब्द का प्रयोग करते हैं। ये शब्द अहोभाव में खींचे हुए या तो दूसरे भाव से नहीं कहे गए हैं। अत्रि के शब्द है; अत्रि का अर्थ त्रिगुणातीत है। अतः ये तटस्थ चेतना के होठों से कहे गए शब्द हैं। 'रामचरित मानस' अंतर्गत 'उत्तरकांड' में एक छोटा-सा उल्लेख है। संत और असंत में भेद क्या है? ऐसा एक प्रश्न आया। 'रामचरित मानस' में संत की व्याख्या, साधु की व्याख्या कई बार मिलती है। असंत की व्याख्या भी है। संत-असंत का भेद बताती 'रामायण' की व्याख्या -

संत असंतन्हि कै असि करनी।
जिमि कुठार चंदन आचरनी।।

संत और असंत के भेद को व्यक्त करते 'मानस'कार कहते हैं कि ये भेद उतना है जितना वंदन और कुल्हाड़ी का आचरण! कुल्हाड़ी चंदन के वृक्ष को काटे तो भी चंदन काटनेवाले के मुंह में माने कुल्हाडी के मुख में खुश्बू (फल) देती है -

ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड।।

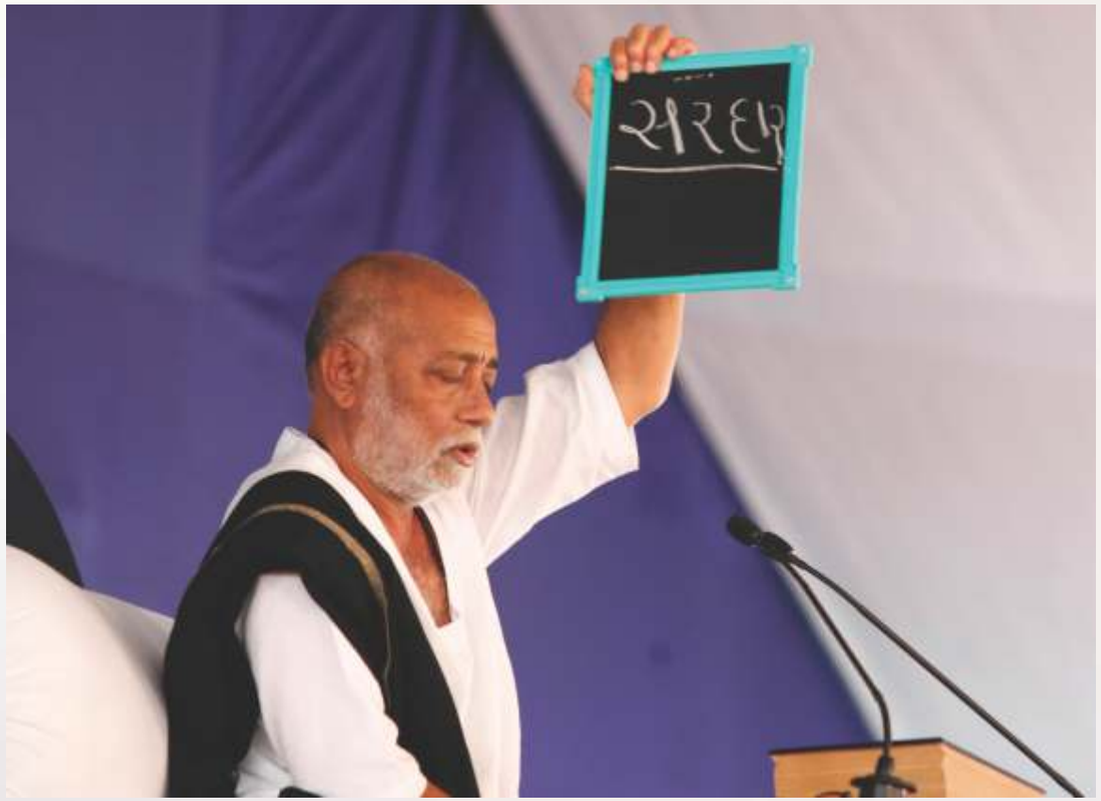

परिणाम? काटे तो भी उसे खुश्बू देनेवाले चंदन 'जगवल्लभ' हो गए। वल्लभ माने प्रियता। कटने पर भी चंदन खुश्बू दे। फलस्वरूप देवताओं के मस्तक-ललाट पर चंदन चढ़ता है और कुल्हाड़ी को अग्नि में तपाकर, उस पर भारी हथौड़े से मारकर उसके मुंह को पीटकर आकार दिया जाय। कारण? उसे दंड दिया जाय। यहां भी 'वल्लभ' शब्द है। पता नहीं क्यों रावण को 'वल्लभ' शब्द याद आया! 'समर भूमि भए वल्लभ प्राना।' भयानक से भयानक आदमी को भी अपने संदर्भ में 'वल्लभ' का नाम तो लेना ही पड़े। मुझे कहा गया है कि आप एक ही वाक्य में गांधी और वल्लभभाई की तुलना कर दीजिए न।

साहब, बापू, बापू है। पंडितजी पंडितजी है। सभी अपनी-अपनी जगह है। जीन्स के संस्कार है। वल्लभभाई ने कहा था गांधीबापू को 'बापू, आप बनिया है न अमुक वस्तु आपमें आ ही जायगी।' ये विनोद कर लेते थे। बारडोली में बापू बिराजमान थे साथ में सरदार भी थे। सुदूर से चलकर एक आदिवासी आया और बापू, बापू करने लगा। पर 'बापू' को कैसे मिला जाय? तो उसे हुआ जुगतराम बापा को मिलूं तो काम बन जाय। वे तो यहीं होंगे। तो कहा कि जुगतरामबापू मिलेंगे? तो जवाब मिला वे तो वेडछी गए। वह बेचारा दौडता दौडता वेडछी पहुंचा। वेडछी आश्रम में आकर पूछा 'काका है?' तो जवाब मिला, 'वे तो बारडोली गए।' वह बेचारा वापिस आया और जुगतराम बापू से मिला और उन्हों ने बापू से कहा, एक आदिवासी आप से मिलना चाहता है। बापू ने बुलाने को कहा। आदिवासी अंदर गया तो पहले

वल्लभभाई बैठे थे। उन से मिला। पूछा गया, 'किससे मिलना है?' तो कहे, 'बापू से।' सरदार पटेल ने कहा, 'मैं ही बापू हूं। मिल ले।' साहब, अपने देश का आदिवासी क्या बोला? 'जो मैं मैं करे वह बापू हो ही नहीं सकते!' इसीलिए नरसैंया गाता था -

हुं करुं हुं करुं अे ज अज्ञानता,
शकटनो भार जयम श्वान ताणे ...

बहुत मार्मिक बात कर दी। फिर बापू से मुलाकात हुई। पटेल साहब का ऐसा विनोदी स्वभाव था।

तो, बापू बापू है; पंडितजी, पंडितजी है; कृपलाणीजी, कृपलाणीजी है। सब अपनी-अपनी जगह है। मुझे कहा गया एक वाक्य में इन दो महापुरुषों के बारे में कहिए। भाई, डेढ़ वाक्य हो तो माफ करना। एक वाक्य में सुनिए साहब, गांधीजी का चर्खा लकड़ी का था। तकली लोहे की थी। इनमें से जो सूत निकला उसीसे हिन्दुस्तान के एक पोत का निर्माण हुआ। तकली भले ही छोटी हो। कहां इन दोनों की अपनी-अपनी चेतना! साहब, सरदारबापा का जो चेहरा दिखाई देता है तो नहीं लगता कि यह ऐसा ही होना चाहिए? आक्रमकता तो आनी ही चाहिए। ज्यों गायक संगीत की फ़रामात पेश करे तब उसके चेहरे की मुद्रा परावर्तित होती है। जिसे राष्ट्रगीत गाना था, सच्चे अर्थ में विश्व को एक राष्ट्रसंगीत देकर जाना था उनके चेहरे पर के ये भाव है। सरदार के चेहरे पर सूजन नहीं है। वे खुद सर्जन है। इस चेहरे पर कोई शारीरिक विकार नहीं है। यह आदमी अंदर से सर्जनशील है। यह दूसरा भरत है। विठ्ठलभाई पटेल समाजसेवा में लग गए। ये बहुत बड़े वकील, अकेले को कमाई करनी पड़ती थी। विठ्ठलभाई ने कह दिया एक ओर सेवा करनी और दूसरी ओर कमाई यह संभव नहीं है। विठ्ठलभाई सेवा करे और यह कमाई में खटता रहे। मैं 'रामचरित मानस' के गायक के रूप में देखूं तो मुझे इनमें लक्ष्मण के कई आवेश दिखाई पड़े। कभी-कभी इसी आदमी में शत्रुघ्न का मौन भी दिखाई दे। कभी-कभी इसी व्यक्ति में भरत दिखाई दे। जब-जब विठ्ठलभाई अहमदाबाद आए, सरदार दरवाजे के पास उनके जूते की डोरी खोले! यही तो भरत कर्म है। विठ्ठलभाई वापस जाय तो उनकी जेब में रूपये डाल दे। कुछ न बोले कि इतने रूपये दिए। ऐसा समर्पणभाव! इसीलिए ऐसा चेहरा मुझे पसंद है। बापू का ध्यानस्थ चेहरा और इनका यह चेहरा। यह चरखा और यह उनकी तकली।

तो यह त्याग और तपस्या। मुकद्दमा लड़ रहे थे और खबर मिली कि देहांत हुआ है। चिठ्ठी जेब में डालकर अपनी ड्यूटी पूरी करके गये। कितना दु:ख! इस आदमी ने भयानक दु:ख सहन किए। जगवल्लभ बनने के लिए चंदन को बहुत सहन करना पड़ता है। ऐसा यह तपस्वी और त्यागी! जगदीशभाई त्रिवेदी की कविता है -

कठण तोय कोमळ, तपसी ने त्यागी,
सवायो साधु सरदार साव रूखड।

तो, चरखा लकड़े का और तकली लोहे की। तो, 'वल्लभ' शब्द रावण भी बोला है। 'समर भूमि भए वल्लभ प्राना।' आपको प्राण प्रिय लगता है? रावण ऐसा गुस्से में बोला है। समांतर रूप से बारडोली में एक प्रेमयज्ञ रचा गया है। तो बाप, यहां साथ ही साथ रामकथा! ये द्वेत नहीं है। मूल्यो में समानता है। जो अमूल्य तत्त्व होते हैं उनके आंतरिक मूल्य लगभग एक समान रहते हैं। 'सभी सयाने मत।' गांधीबापू और वल्लभभाई सभी अपनी जगह बराबर है। गांधीबापू साधनशुद्धि के बेहद आग्रही। वहां सत्याग्रह दौरान अंग्रेज अधिकारी आनेवाले थे तो पटेल साहब ने सभी बहनों के लिए खद्दर की साडियां भेजी और कहा कि खद्दर की साडी पहनकर जाना ताकि उन्हें पता चले कि आंदोलन बराबर चल रहा है। इसमें

शायद साधनशुद्धि न हो। सरदार ऐसा न करे। गांधीबापू के साथ सभी बातों में कहां सहमत थे? मैंने सोच समझकर उन्हें तकली कहा है। तकली की धार होती है, तीक्ष्ण होती है। दोनों काम करती है। बुने भी, चुने भी। बापू-सरदार की ऐसी जमी कि गांधी को कहना पड़ा कि सरदार के साथ जेल में रहने का विशेष आनंद मिला।

तो यहां, वल्लभकथा हो रही है। अपने गुरुजन सुंदर मार्गदर्शन दे रहे हैं। गुरुजनों से मिली जानकारी मैं आपके सामने रखता जाऊंगा। हम इसमें क्यों पड़े कि यहां इसने यह-वह भूल की। हमें जितना प्राप्त हुआ उसी में से मक्खन निकाल ले तो विशेष आनंद आयगा।

तो, निषादराज गुह्य के ये शब्द, जब भरतजी भगवान राम से मिलने गए गंगातट पर तब गलतफहमी के कारण निषादपति ने कहा 'सावधान हो जाओ और सभी घाट रोक लो कि कोई गंगापार न कर सके।' उसे पता है कि भरत के सामने मुकाबले में हार जायेंगे पर मरने के लिए सज्ज हो जाओ। अपने सेवकों को कहता है भरत के सामने टकराने से, लोहा लोहे की टक्कर से, मुठभेड करने से चार फायदे होंगे। एक तो, रणमैदान में मृत्यु होने से स्वर्ग प्राप्त होगी। हमारे यहां ऐसा कहा जाता है कि ऐसा कह-कह कर कितनों को मृत्यु के घाट उतार दिए! सही बात है कि कोई देश के लिए मर-खप जाय तो उसकी मुठ्ठी में स्वर्ग आ जाय। कुरबानी ही स्वर्ग है। गालिब ने कहा कि 'खयाल अच्छा है।'

त्यां स्वर्ग ना मळे तो मुसीबतनां पोटलां,
मरवानी एटले में उतावळ करी नथी।

- जलन मातरी

तो बाप, रणमेदानमां मरेंगे तो स्वर्ग मिलेगा। 'समर मरनु।' रणमैदान में मृत्यु से स्वर्ग मिलेगा। दूसरा, 'सुरसरि तीरा' गंगातट पर मृत्यु का कितना फायदा! गंगालहरी के रचयिता पंडित जगन्नाथ ऐसा कहे कि मृग की नाभि में बसती कस्तूरी का उबटन बनाकर चंदन मिलाकर राजा-रानी लेपन करे फिर गंगा में स्थान करे उनका तो उद्धार हो जाय पर जिनकी नाभि से कस्तूरी निकली है ऐसे हिरनों का भी मोक्ष हो जाय! यह गंगा महिमा है। गंगा की बात करूं तो दूसरी नदियां सामान्य नहीं, गंगा माँ है। दूसरी उनकी बेटियां है। गंगा गंगा है। पर अन्य सभी नदियों का प्रवाह है वहां पुण्य है। अत: मैं प्रवाही परंपरा की बात करता हूं और गंगा के देश की परंपरा तो हमेशा प्रवाही ही रहनी चाहिए।

तो बाप, स्वग-नर्क प्रश्नार्थ है। मैं नहीं जानता। तो -

समर मरनु सुरसरि तीरा।

राम काजु छनभंगु सरीरा।।

रणमैदान में मरेंगे तो स्वर्ग मिलेगा; गंगा तट पर मरेंगे तो मुक्ति मिलेगी; तीसरा फायदा बताते हैं अपने आदमियों को 'रामकाज'; रामकार्य करते मरेंगे। 'रामचन्द्र के काज सँवारे।' रामकार्य में लग जाने से इतिहास बन जायेंगे। चौथा फायदा, 'छनभंगु सरीरा' क्षणभंगुर शरीर एक बार तो नष्ट होना ही है। इतने सारे फायदे सामने है तो तैयारी करो। घाट रोक लो, मरने का निर्णय कर लो। मैं स्वयं भरत से लोहा लूंगा। यद्यपि गलतफहमी थी फिर भी यूं सब तैयारी में लग गए। बाप, अच्छा विचार करने में भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। कभी आवेश के कारण सामनेवाली व्यक्ति को पहचानने में गलती कर बैठे तो जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। धैर्य रखना चाहिए। यह आदमी जल्दबाजी कर गया। जब खबर हुई तोअसली बात और ही निकली।

भरतजी ने सुंदर विचार रखा। जब मैं भरतजी को लोहपुरुष कहता हूं तब ये स्वयं ही कहते हैं। कोई कार्य करते समय कारण कठिन होता है। मेरी माँ ने रामवनवास का कार्य किया; मेरी माँ ने राजगद्दी दिलाने का कार्य किया इसका कारण मैं हूं। कार्य तो हुआ पर कारण मैं हूं। कार्य करते-करते कारण हमेशा कठोर होता है। इस सिद्धांत के प्रतिपादन हेतु दो दृष्टांत दिए। 'कुलिस अस्थि तें', हड्डी और वज्र। इसमें ज्यादा कठोर कौन? लोहा पथ्थर में से निकलता है। तुलना में पथ्थर इतना सारा कठोर नहीं होता जितना लोहा होता है। 'अस्थि तें लोह कराल कठोर।' कराल माने भयंकर और कठोर। इसका जन्मस्थान पथ्थर है। पर यह वस्तु बहुत कठोर सिद्ध होती है। मैं ऐसा हूं। भरतजी स्वयं की तुलना लोहे से करते हैं।

मेरी दृष्टि से तीन वस्तु की दृढता लोहपुरुष के लक्षण बताती है। इस तरह का जो आदमी हो उसे हम लोहपुरुष कह सकते हैं। एक, विचार की दृढता। पर व्यावहारिक रूप से हमें अपने विचारों में परिवर्तन लाना चाहिए। मुझे लगता है कि इस समय जिस समाज में हम जीते हैं उसमें लोगों की दो प्रकार की तकलीफ़ें हैं। लोग सत्य का स्वीकार नहीं कर सकते, सत्य सहन नहीं कर सकते। ये दो बड़ी तकलीफ हैं। उच्चार करते हैं पर दूसरों के सत्य का स्वीकार नहीं कर सकते या तो सहन नहीं कर सकते। सत्य की उपासना पर यह एक दाग है। दरवाजे खुले रखिए। विचारों की दृढता के लिए ताजी हवा जरूरी है।

मेरे श्रावक भाईयों और बहनों, मैं आपको उपदेश देने नहीं बैठा हूं। मुझे पता है उपदेश मेरे क्षेत्र में नहीं है। मैं आपके साथ बातें कर रहा हूं। अपने विचारों में दृढता होनी चाहिए। और ऐसे विचार कि जो त्रिकाल में बदले न जाय। विचारों में दृढता होनी चाहिए। स्वार्थवश हम विचारों में बदलाव कर देते हैं। सरदार में सच्चे विचारों की दृढता रही। मैंने अभी कहा कि वे बापू को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थे। बापू के सभी विचारों में सहमत न हो यही उनकी स्वतंत्रता रही। सच्चे विचारों की दृढता लोहतत्त्व का लक्षण है। हम सब जानते हैं कि लोहे को गर्म कीजिए तो प्रवाही में बदल जाय। दुनिया में जितने भी लोहपुरुष आए वे उपर से दृढ लेकिन अंदर से पानी जैसे थे।

दूसरा लक्षण वाणी की दृढता। वाणी के सत्य को बदले नहीं। क्या गांधीबापू के वक्तव्य की शैली प्रभावशाली थी? वाणी प्रभावशाली थी? पर जो बोले इसका प्रभाव पड़े। कारण वाणी का लोहतत्त्व, वाणी की दृढता। हम तो वाणी बदल देते हैं! हमारी वाणी कितनी व्यभिचारिणी है! एक क्षण किसीकी स्तुति करें तो दूसरे पल निंदा करे! ये पानी के बुदबुदे की तरह है!

अमे तो समंदर ऊलेच्यो छे, प्यारां,
नथी मात्र छबछबियां कीधां किनारे,
मळी छे अमोने जगा मोतीओमां,
तमोने फक्त बुदबुदा ओळखे छे।

- शून्य पालनपुरी

तो बाप, खास कर युवा भाईयों बहनों, हम शत-प्रतिशत सत्यवादी न हो सके। हमारा सत्य जितनी मात्रा में दृढ रहेगा हमारा आध्यात्मिक लोहतत्त्व बढ़ेगा। शरीर का लोह भले कम हो जाय पर अंदर का लोहतत्त्व बढ़ेगा।

तीसरा लक्षण, व्यावहार की दृढता। यह भी साधक का लोहतत्त्व है। भूखे को अन्न मिलना चाहिए, हम ऐसा बोलते हैं और जब दरवाजे पर चार-पांच भूखे आ जाय तो दरवाजा बंद कर खाना खा लेते हैं! हमने लोहतत्त्व पचाया नहीं है। सरदार और गांधीबापू, इसमें गांधीबापू खास है। जब कोई मिलने आता था तब कहते थे, 'महादेव, पहले उसे खाना दे दो।' हमारे व्यवहार में जितनी दृढता उतना ही साधना में अपना लोहतत्त्व है।

तो, ये तीन प्रकार की दृढता। जब हमें ऐसा लगे कि इस विचार को हमने दृढता से पकड़ा है पर यह ठीक नहीं है तो उसे बदल सकते हैं। सत्यपूत विचार, वाणी और आचरण हो तो समझना चाहिए कि साधक में लोहतत्त्व प्रबल है। भरत में ये सब है। भरत के विचार बदलने की पूरी जनता कोशिश करती है कि, 'भरत, जिसे पिता गद्दी सौंपे वही राज्य का वारिस है।' पर भरत ने अपने विचार नहीं छोड़े। उन्हों ने एक ही विचार पकड़ रखा कि, 'मैं सत्ता का नहीं, सत् का आदमी हूं।'

तो बाप, व्यवहार, विचार और वाणी की दृढता। यह साधक का आंतरिक लोहतत्त्व है। यह रहेगा तो पारस अपने अंत:करण का स्पर्श करेगा। वक्त आने पर लोहतत्त्व में से हमें, हमारे जीवन को सच बना देगा, खरा सोना बना देगा। 'कंचन बरन बिराज सुबेसा।'

कथाक्रम लें। कल हमने हनुमान की वंदना की। सीताजी की वंदना की, जो 'रामचरित मानस' में है। 'रामचरित मानस' में सात बार 'रामचरित मानस' शब्द आता है। मैं गिनती करा दूं। प्रथम 'बालकांड' में -

रामचरितमानस एहि नामा।
सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा।।

पुनः 'बालकांड' में -

रामचरितमानस मुनि भावन।
बिरचेउ संभु सुहावन पावन।।

'बालकांड' में तीसरी बार -

तातें रामचरितमानस बर।
धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर।।

'बालकांड' में चौथी बार -

संभु प्रसाद सुमति हयँ हुलसी।
रामचरितमानस कबि तुलसी।।

'बालकांड' में पांचवी बार -

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़।।

'उत्तरकांड' में छठ्ठी बार -

मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा।
रामचरितमानस तब भाखा।

सातवीं बार -

श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसार पतङ्गघोरकिरणैर्वह्यन्ति नो मानवा:।

'रामचरित मानस' में सात बार 'रामचरित मानस' शब्द प्रयोग है। इन सातों के कारण है। किसी बुद्धपुरुष द्वारा कोई सर्जन होता है तब ह्रस्व-दीर्घ के भी कई अर्थ होते हैं। कोई प्रयोजन है, कारण है। व्याकरण की ज्यादा चिन्ता नहीं की है। 'रामचरित मानस' में चार बार 'रामायण' शब्द प्रयोग है। 'रामायण' का निर्देश करते ऐसे ग्यारह शब्द है। इनके तात्त्विक अर्थ जो मेरी समझ में आते हैं इनकी मैं आगे चर्चा करता रहूंगा।

श्री हनुमानजी महाराज की वंदना के बाद सीतारामजी की वंदना की है। तुलसीदासजी ने प्रारंभ में बहुत बड़ा वंदना प्रकरण लिखा है। जो तुलसीजी के जीवन का मूलसूत्र है, वह तुलसी की नामनिष्ठा है, प्रभुनाम की निष्ठा। तुलसी की जो नामनिष्ठा है वह नौ दोहों में पूर्णांक में विस्तरित है -

बंदऊ नाम राम रघुबर को।
हेतु कृसानु भानु हिम कर को।।

रामनाम महिमा है। मैं हरबार स्पष्ट करता हूं कि इसका कोई संकुचित अर्थ न करे। व्यासपीठ का राम इतना छोटा नहीं है। एक फ्रेम में समा जाय ऐसा नहीं है। वह परमतत्त्व है। फिर आप कृष्ण, शिव, दुर्गा, अल्लाह का नाम ले पर कोई भी नाम आखिर में एक ही तत्त्व है।

भगवान रघुवीर के अनेक नाम है। तुलसी कहते हैं इनमें से मैं रामनाम की वंदना करता हूं। जो सूर्य, चंद्र और अग्नि का हेतु है। बीज तत्त्व है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश परमात्मा का नाम लेते हैं। प्रभुनाम ले तो साधक के हृदय में वह ब्रह्मा बनकर सात्त्विक भावों की सृष्टि करे, विष्णु बनकर सात्त्विकता का पोषण करे वही नाम शिवतत्त्व बनकर दूसरे गलत तत्त्व अंत:करण में घूस जाए तो झूठी सृष्टि का संहार करे। वह ओमकार तत्त्व है। रामनाम का उच्चारण करने से ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों की साधना एक साथ है।

साहब, भजन भोजन है। भूखा न रखे। आप नौकरी करने जाय, आपके बच्चों के साथ घूमे। गृहस्थ जीवन को सुगंधमय रखे। आप घूमते जाईए। ये सब कर लेने के बाद आपके पास थोड़ा समय मिले तो हरिनाम लेना। साधक को कलयुग में बचे हुए समय को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

मेरी दृष्टि में तीन वस्तु की दृढता को लोहपुरुष के लक्षण मानने चाहिए। एक, विचार की दृढता। व्यावहारिक रूप से हमारे विचारों में परिवर्तन जरूरी हो तो स्वीकार करना चाहिए। दूसरा लक्षण वाणी की दृढता। वाणी का सत्य रहना चाहिए। तीसरा लक्षण व्यवहार की दृढता। यह भी साधक का लोहतत्त्व है। भूखे को अन्न देना चाहिए, ऐसा हम बोलते हैं और आंगन में कोई सच्चा गरीब और भूखा आ जाय ऐसे समय पर हम दरवाजा बंद कर खाना खा लें, तो हमने लोहतत्त्व पचाया नहीं है।

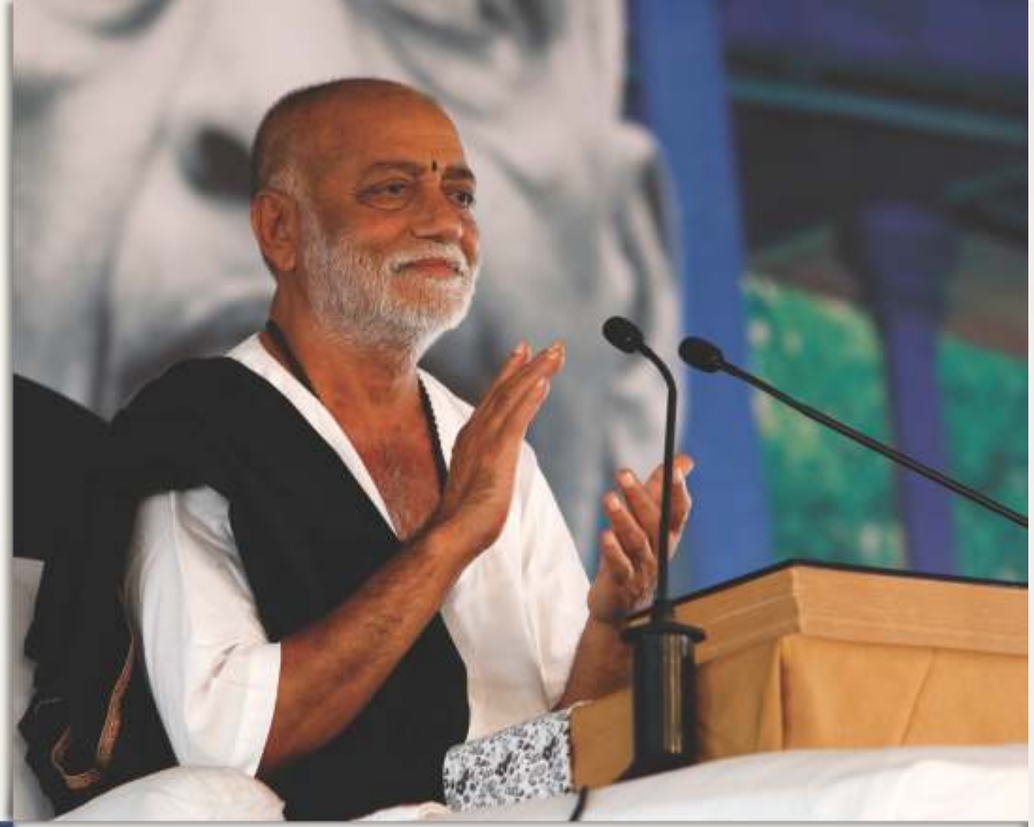

मानस-लोहपुरुष
॥ ३ ॥

सरदार सहज है, सबल है और सजल भी है

'अयोध्याकांड' की दो पंक्तियों का आश्रय लेकर नौ दिवसीय रामकथा 'मानस-लोहपुरुष' को लेकर संवाद कर रहे हैं। इस बातचीत में हम प्रवेश करें इससे पूर्व कल की मेरी प्रसन्नता व्यक्त करूं। कल गंगाधरा हाईस्कूल का हीरक महोत्सव था। मैं वहां गया, आनंद हुआ। रमणबापा ने सुंदर बातें की। आदरणीय नगीनबापा ने दो दिनों के लिए 'गीता : नवी नज़रे' इस पर बोलने की शुरूआत की। कल आपने प्रथम प्रवचन पूरा किया। प्रसन्नता मिली। बापा ने बहुत अच्छी प्रेरणा और प्रकाश मिले ऐसी बातें बताई। मैं उन्हें कथाकार कुल में लाना नहीं चाहता। मुझे पता हैं कि आप आयेंगे भी नहीं! आने जैसा भी नहीं है! तुलसीदासजी ने कलियुग का वर्णन करते लिखा है कि कलियुग में कवि काफ़ी होंगे। अब तो हम पर भी कविताएं लिखी जाने लगी है! कर्म की कठिनाई और क्या?

इतने बदनाम हुए हैं इस जमाने में,
लगेगी सदियां आपको हमें भुलाने में।
न पीने का सलिका न पिलाने का सुलुक,
कैसे-कैसे लोग आ गये हैं मयखाने में!

- नीरज

'कथा' शब्द कहता हूं। यह शब्द खराब नहीं है। 'कथा' तो बहुत पवित्रतम शब्द है। यह तो अमुक वर्ग का विषय हो गया तो कथा को थोड़ा सहन करना

पडता है! कथा ने सार्वभौम कार्य किए हैं। कथा ने प्रत्येक विद्या में प्रवेश किया है। बिनती करने का मन होता है बापा, आपको अनुकूल हो इतने दिन वल्लभकथा न करे? गांधीकथा तो ओलरेडी शुरू हो गई है। कितना बड़ा काम हुआ है! मणिभाई पटेल ने सरदार पटेल की कथा की। मणिभाई ह. पटेल की एक कविता किसीने मुझे दी है -

गाम करमसदना माणसनी अचरज जेवी वात,
फूलोशां कोमळ हैयामां पथरीली ताकात।
झीणी नजरे जोनारो ए पळने परखी काढे,
गोळ-गोळ ना बोले ए तो एक झाटके वाढे।

- मणिलाल ह. पटेल

तडाक-फडाक! बापा ने अभी कहा कि सरदार कम बोले, परंतु स्पष्टवादी थे। सुरेशभाई दलाल, हरीन्द्रभाई और हम साथ में बैठे। छोटी-सी महेफिल जमे और परिचय देना हो तो सुरेभाई हमेशा यह वाक्य कहे कि 'हरीन्द्रभाई कम बोले और मैं कटु बोलनेवाला!' तब मैं कहता था इन में से कम बोलनेवाला कौन? समाज को अल्प नीर जैसा बोलनेवाला चाहिए। वक्ता में तीन लक्षण होने चाहिए। वह स्पष्टवादी हो, अल्पभाषी हो और न बोलना हो तब किसी मौन की गहन गुफ़ा में जाता हो। मैं बचपन से वल्लभभाई पटेल प्रति आदर रखता हूं। साहब, मैंने करमसद में दो बार कथा की है। मेरा आंतरिक भाव था कि सरदार के गांव में कथा करनी है। मुझे यहां कथा करनी ही है। सरदार पटेल की दैनिक बही देखियेगा। उसमें आप पायेंगे कि सुबह चार बजे उठा, कभी साढे चार बजे। प्रार्थना की। 'गीता' और 'रामायण' का पाठ किया।

तो बाप, मुझे बहुत आनंद है कि यहां पटेल साहब की स्मृति में हम रामकथा के आधार पर दर्शन कर रहे हैं। लोगों के पास अनेक एन्गल से सच्चा परिचय पहुंचना चाहिए। रामकथा होती ही रहेगी इनके मूल गहरे हैं। लेकिन अर्वाचीन जगत को इन कथाओं की भी इतनी ही जरूरत है। विनोबाजी की कथा होनी चाहिए। ऐसी ही एक तेजस्वी महिला गंगासती। इनकी कथा होनी चाहिए। मेरी इच्छा है करने की। मीरांबाई की कथा भी होनी चाहिए। वाल्मीकि कहते हैं मेरी कथा का केन्द्रीय विचार सीता का चरित्र है। राम गौण है। जिस देश में आर्यनारी पुरुष की परछाई बने। धन्य है आदिकवि वाल्मीकि को जिसमें सीता की परछाई रघुनाथ बने। तुलसी भी चूके नहीं। वंदना प्रकरण हुआ। विचार करने लगे राम मेरे इष्टदेव है। प्रथम वंदना किसकी करूं? राम और जानकी को केन्द्र में रखकर उसे कथा गानी है। तुलसी कहते हैं -

सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरन को।।

कैसी द्विधा? और साहब निर्णय भी कैसा लिया?

जनकसुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुना निधान की।।

शुरूआत यहां से होती है। प्रथम सीता को याद करते हैं -

बन्दऊँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।

पुन: प्रथम सीता। मैं क्यों चरण छूता हूं? कारण भी रखा है। 'जीव हूं' मैंने सुना है कि, 'हे माँ, आपको खिन्न लोग ज्यादा प्रिय है जो उपेक्षित, तिरस्कृत, अकिंचन है। अत: मैं सीता और राम को प्रणाम करता हूं।'

वाल्मीकि के 'रामायण' का केन्द्रबिन्दु सीता है। तुलसी ने भी उसी प्रवाही परंपरा का अनुसरण किया है। ऐसे नारी पात्रों को लेकर भी कथा होनी चाहिए। राधा को केन्द्र में रखकर तो होती ही है। नगीनदासबापा

की प्रेरणा से एक प्रयोग बम्बई में हुआ 'गार्गी से गंगासती।' अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट ऐसे महिला पात्रों की वंदना की। अनसूया को केन्द्र में रखकर बोलना चाहिए। सामर्थ्य तो देखिए! तीन देवताओं को बालक बना दिया! भगवान राम वन में गए। वनवासी व्रत के कारण जानकीजी के आभूषण उतार दिए गए थे। राम को वनवास था, जानकी तो स्वेच्छा से गई थीं। सूर्य को छोड़कर उनकी प्रजा कैसे अलग रह सके? पंक्ति याद आती है -

तुम मेरे साथ होते हो, कोई दूसरा नहीं होता ...

यह उर्दू का अद्वैत है। तू ही मेरे साथ होता है, जब कोई दूसरा नहीं होता। मैं कभी अकेला नहीं होता। सूफ़ी दर्शन में परमात्मा को प्रेयसी कहने की छूट है। कभी कश्मीर की लल्लादेवी के बारे में स्वतंत्र चिंतन होना चाहिए।

तो, जानकीजी वन में गई और आभूषण उतारने की बात आई तब अरूंधती ने विरोध किया। वशिष्ठजी ने सूर मिलाया। पर जानकीजी ने स्वेच्छा से थोड़े अलंकार उतार दिए। अत्रि के आश्रम में पहुंचे तब तुलसीदासजी लिखते हैं 'दिव्य बसन भूषन पहिराए।' अनसूयाजी ने दिव्य वस्त्रालंकार जानकीजी को पहनाए। अनसूया के बारे में भी विशेष चिंतन होना चाहिए। गंगासती का भजन है -

नवधा भगतिमां निरमळ रे'वुं ने,

राखवो वचनुंमां विश्वास रे,

सद्गुरुने पूछीने पगलां भरवां ने,

थइने रहेवुं अेना दास रे ...

सद्गुरु माने जाग्रत पुरुष। स्वराज आश्रम में एक वाक्य लिखा है। सरदार पटेल को पूछा 'आपका धर्म कौन सा है?' तो उन्होंने कहा 'जाग्रत रहकर जगत को जाग्रत रखना यही मेरा एकमात्र धर्म है।' सद्गुरु कौन? जो जाग्रत है। मेरी व्यासपीठ जिसे 'बुद्धपुरुष' कहती है।

सद्गुरुने पूछीने पगलां भरवां ने,

थइने रहेवुं अेना दास रे।

किसीके दास बनकर रहना उचित नहीं लगता! यह तो परतंत्रता और गुलामी है। मुझे इतना ही कहना है, भरोसा रखे तो जम जायगा। पता नहीं तर्क करने पर क्या होगा? मैं तो अनुभव से कहता हूं कि उदास नहीं रहना है तो किसी के दास हो जाइए। गुलामी नहीं। ऐसा दासत्व कि स्वामी को भी ललकार सके। ज्यों सरदार, बापू को ललकार सकते थे। जहां ठीक न लगे उनके सामने दलील करते थे। बारडोली सत्याग्रह दौरान गांवों पर जो असर हुई, मुश्किलियां हुई तीन-चार घर जला दिए गए। सबको तकलीफ़ हुई। बापू को खबर मिली अत: सरदार को कहा, 'पटेल, वहां शीघ्र सहायता भेजिए।'सरदार ने क्या जवाब दिया? सरदार ने कहा, वे जल जायेंगे पर मदद नहीं लेंगे। आप से पढ़े हुए हैं। जाग्रत ही जगा सके। मेरी दृष्टि से लोहपुरुष वह है जो पूरे समाज को फौलादी बनाए। जाग्रत वह है जो दूसरों को जगाए। चेहरे पर सच्चा हास्य वही है जो दूसरों के चेहरे पर मुस्कुराहट ला सके। दासत्व का अर्थ गुलामी नहीं, सत्य पथ पर चलने का शिव संकल्प है; जागृति के मार्ग पर चलते कदम है। कोई बुद्धपुरुष किसी को गुलाम न बनाए। और गुलाम कर दे वह बुद्धपुरुष नहीं है।

तो, वल्लभकथा। सरदार पटेल विषयक अभ्यासपूर्ण प्रवचन होंगे तो नई पीढी पसंद करेगी। नई पीढी हाथ खुल्ले रखकर बैठी है। देनेवाला चाहिए। समाज को पोषकतत्त्वों की बहुत जरूरत है।

अब हम मानस-लोहपुरुष को लें। पता नहीं इस लोहे ने कितनों को मजबूत किया है! कितने दृढ हुए! तो बाप, 'मानस-लोहपुरुष' की दो पंक्तियों का आश्रय 'अयोध्याकांड' अंतर्गत किया है। गुह्यनिषाद और भरतजी दोनों लोहपुरुष हैं। भरत संत है। 'उत्तरकांड' में संत का परिचय इस तरह दिया है -

संत हृदय नवनीत समाना।

कहा कबिन्ह परि कहै न जाना।।

निज परिताप द्रवइ नवनीता।

पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता।।

हम कल वल्लभनामावलि का दर्शन करते थे कि 'मानस' में कहां-कहां 'वल्लभ' शब्द के उच्चारण से संकेत मिले हैं। मैंने अभी कहा, सरदार स्पष्टवादी है, 'अयमय खांड़ न उखमय।' बहुत आक्रमक पुरुष परशुराम। उनके शरीर पर लोहे का सामान रहता था। बाण, तरकस। परशुरामजी जब बहुत आक्रमक बनकर बोलते हैं। लगभग लोहे के शस्त्र शरीर पर धारण किए हैं। तुलसीदासजी ने काफी सुंदर वर्णन किया है।

तेहि अवसर सुनि सिवधनु भंगा।

आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।

परशुरामजी आए।शिवधनुष की आवाज सुनी।आवाज की दिशा पकड़ आक्रमक बनकर आए हैं। तुलसीदासजी उनका परिचय देते हैं, 'भृगुकुल कमल पतंगा।' भृगुकुल के कमल को विकसित करने में सूर्य जैसे हैं। हम पृथ्वी पर रहेते हैं वहां दो सूरज तो नहीं। तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' में जनकपुर में एक साथ दो सूरज एकत्र किए। अब वे जिनके सामने आए हैं वे भी एक सूरज ही है। 'उदित उदरगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।' जब राम धनुषभंग करने खड़े हुए तब तुलसी ने कहा, रघुवर सूर्य की तरह खड़े हुए।

किसी ने तुलसी से पूछा दो सूरज कैसे? तो कहे, 'दो नहीं, एक ही है।' दोनों राम है। इन्हें शास्त्र की प्रियता है अत: आगे थोड़ा 'परशु' का टूकड़ा जोड़ दिया। बाकी राम ही है। फिर भी दो सूरज इसलिए कि राम सुबह उगता सूरज है। परशुराम दोपहर का जलता सूरज है। 'बालपतंग' माने सुबह का कोमल सूर्य और यह प्रखर सूर्य!

बहुत लंबा प्रसंग है। मैं लौह प्रसंग को लेना चाहता हूं। जब परशुरामजी कठोर भाषा बोलते हैं तब तुलसी कहते हैं, मुनि को सब हरा ही नजर आता है। सभी क्षत्रिय मार डाले अत: परशुरामजी ऐसा मानते हैं कि इसे भी मार डालूं। पर 'असमय खांड न उखमय।' उख माने गन्ना। गन्ने में से शक्कर बनती है। शक्कर द्विअर्थी है। शक्कर माने खडग-तलवार। तुलसीदासजी संकेत करते हैं कि इस मुनि महाराज को पता नहीं है कि यह शस्त्र शक्कर नहीं है, गन्ना नहीं है। गन्ने से बनी शक्कर नहीं है कि मुंह में डालो कि पीघल जाय और कंठ में मीठास आये। यह शस्त्र तो लोहे का है। ये लोहे के चने हैं जो चबाए नहीं जाते। यहां धनुष की ओर संकेत है। 'गीता' ने कहा जिसे प्रवृत्ति-निवृत्ति का ज्ञान नहीं है वह तामसी है। हमारी दशा भी लगभग ऐसी ही है। हमें पता नहीं रहता कि क्या प्रवृत्ति-निवृत्ति है? हमें प्रवृत्ति तो करनी ही चाहिए। बिना प्रवृत्ति के कोई भी एक क्षण नहीं सकता। प्रवृत्ति इस ढंग से करें कि सत्संग में से विवेक प्राप्त कर प्रवृत्ति करते-करते अंदर से निवृत्ति का संस्पर्श चालू रहे।

हुं तो बस फरवा आव्यो छुं.
हुं क्यां एके काम तमारुं के मारुं करवा आव्यो छुं?

- निरंजन भगत

निरुद्देशे
संसारे मुज मुग्ध भ्रमण
पांशु-मलिन वेशे.

- राजेन्द्र शाह

तो बाप, बहुत कठिन है। बुद्धपुरुष ही कर सके। प्रथम संपूर्ण निवृत्ति की दीक्षा लेकर फिर जंगल में गए। कोई व्यापारी निजी देश छोडकर परदेश जाय, खूब धन कमाय पुन: निजी देश लौटे फिर सबको जलसा करादे यों साधु भी प्रथम निवृत्ति में जाय, साधना कर इतनी संपदा इकठ्ठी करे कि फिर अंदर की निवृत्ति का स्पर्श चालू रखकर लोकप्रवृत्ति में प्रवृत्त होता है। विवेकानंदजी ने किया। निवृत्ति और प्रवृत्ति का जिन्हें होश है वे लोग अलग ही होते हैं।

मेरी दृष्टि से सरदार का अर्थ यों होता है। 'स' सहज। ये बहुत सहज है। जो सहज हो वही सबल होता है। सबल तत्त्व आंखों की सजलता से सदैव बना रहता है। मैं 'मानस' का 'सहज' शब्द लेकर बोलना चाहता हूं। 'रामायण' में क्या-क्या सहज है? कोई दंभ नहीं है। सरदार प्रपंची नहीं, सहज है। इसी से सबल है। सबल है इसी से सजल है।

'र' माने रक्षण करना। समग्र राष्ट्र का रक्षण करने अपना जीवन समर्पित किया। देश के रक्षण हेतु कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं। हिन्दु-मुस्लीम की बात आई तब सरदार पर झूठे आरोप लगाए गए। गांधीजी स्पष्टता करे। सरदार को बचाने के लिए गांधीबापू स्पष्टता से कहे 'आप सरदार को नहीं जानते।' सरदार शारीरिक कमजोरी अनुभव करते हैं। इस फौलादी आदमी ने शरीर से बहुत काम लिया। पचहतर साल की उम्र से डेढ सौ वर्ष का काम लिया। उनके और पंडितजी के काफी मतभेद थे। फिर भी वे कहते थे हमारे मतभेद हैं पर वे प्रधानमंत्री है मैं उनके तहत हूं; प्रमाणिक सिपाई हूं जवाहरलाल नेहरू का। यह इनकी निर्दंभता थी। एक पत्र लिखते हैं, 'बापू, मुझे लेकर आपको स्पष्टताएं करनी पड़े यह अच्छा नहीं लगता! मेरे पिता को यह करना यह ठीक नहीं है। आप मुझे जानते हैं यह पर्याप्त है। दूसरे मुझे न जाने पर मैं आपकी साधुदृष्टि में से उत्तीर्ण हूं तो मुझे

ऐसा लगता है कि यदि आप आज्ञा दे तो मैं त्यागपत्र दे दूं?' पदत्याग का इतना बड़ा संकल्प!

'दा' माने दायित्व। सरदार को अपने दायित्व की जानकारी है! जिसे दायित्व का ज्ञान न हो वह दादागीरी करता है! जो शिक्षक वर्ग में विद्यार्थी को पीटता हो उसे दायित्व का ज्ञान नहीं है। व्यासपीठ शास्त्र की मर्यादा तहसनहस कर दे तो व्यासपीठ को दायित्व का ज्ञान नहीं है। मूल सवाल दायित्व का है। जो दायित्व समझे वह दादागीरी नहीं करता। जिस शिष्य को दायित्व की खबर हो वह गुरु के सामने दादागीरी नहीं करता।

'र' माने 'रहम'। रक्षक भक्षक बने यदि उसके अंत:करण में रहम न हो, कारुण्य भाव न हो। जिसके दिल में रहमत हो वह दूर होगा तो भी रक्षण करेगा। जिसे अपने दायित्व का ज्ञान होता वह राष्ट्र के लिए विभूति मानी जायगी। यदि नई 'गीता' लिखी जाय और इसका दसवां अध्याय यदि 'विभूति योग' हो तो कृष्ण निश्चित रूप से यह कहे कि 'जगत के फौलादी तत्त्व में मैं वल्लभ हूं।' यह मैं संपूर्ण जिम्मेदारी से व्यासपीठ पर से बोल रहा हूं।

तो, 'रामायण' में गुह्यराज लोहपुरुष, श्रीभरतजी लोहपुरुष, शिवधनुष फौलादी है। मैंने पहले दिन सूचि दी थी उसी क्रम में जाऊं, बीच में कुछ याद आयेगा तो जोड़ता जाऊंगा।

लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं।।
नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लानि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा।।

स्थान चित्रकूट। कौल, भील, बनवासी लोग। रघुनाथजी के चरणों में अबूधवासियों ने जब उनसे मिलना, भाव समर्पण करना - यह सब देखकर 'लागे सराहन भाग।' वे भीलों के भाग्य की सराहना करने लगे। प्रेमपूर्ण वचन सुनाते हैं। उनके जैसा कौन? 'तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा।' यह भीलवासी है 'मणि'। यहां 'मणि' माने 'पारसमणि'। क्योंकि लोहे को छूना है। कृपा पारसमणि है। पटेलसाहब को जिस अर्थ में लोहपुरुष कहते हैं इस अर्थ में नहीं लेता हूं। लोहतत्त्व माने जड़ तत्त्व। मूढता। कृपा की नौका लोहे को तार गयी। लोहपुरुष ने देश की नौका तट पर रख दी। गांधीजी बहुत ही स्थितिस्थापक, अवाहक लकड़ी की तरह। लकड़ी अवाहक है उसे असर नहीं होती। गांधीबापू को राग-द्वेष-निंदा की असर नहीं होती थी। गांधीबापू तो संत है, अवाहक है। लकड़ी तेरे और तारे। गांधीजी का चर्खा लकड़ी का पर तकली लौहे की। सरदार उनकी तकली है। गांधी काष्ट है। नौका में लोहा आए तो तैर जाय। उसे नौका ले जाय। पर लोहे के उपर नौका रखे तो डूब जाय।

भवसागर तैर जाय ऐसा सुंदर कलिकाल है। तुलसी कहते हैं 'कलिजुग सम जुग आन नहीं।' अभी तो कली है, फूल बनेगी तो लहरायेगी। मेरी दृष्टि से यह कलियुग नहीं, कथायुग है। लोगों में काफी रुचि जगी है भगवद्कथा में। यह माध्यम सफल हुआ है। हां, जरूर कहीं-कहीं ऐसा होता है! आज ही डंकेशभाई ने चिठ्ठी लिखी है कि, 'बापू, कल हम कथा सुनकर जा रहे थे। फाटक बंद था। जानेवालों का तांता लगा था। एक लाईन भी खुली नहीं थी। तो क्या कथा फाटक तक ही?' अब, मैं क्या करूं? पर मैं पोज़िटिव लेता हूं कि कथा फाटक तक तो पहुंची! मेरा हरि फाटक खोलेगा तो आगे बढ़ेगी। पर नियमों का जतन तो होना चाहिए। किसीको क्यों कहना पड़े? हम अपना कर्तव्य निभाए। हमें इतनी जल्दी क्यों है? ऐसा लिफ्ट में बहुत होता है। 'जल्दी खोल डालूं!' वे भी आधी राह पर है। मैं ज्यादा उतरना-चढ़ना न हो तो लिफ्ट का उपयोग न करूं। लिफ्ट अच्छी नहीं है। स्वयं चढ़ना चाहिए। दूसरों की

लिफ्ट कभी पछाड़ दे! तुझे हरि की लिफ्ट हो। तेरा उडनखटोला शास्त्र है। हमारे नीतिनभाई लिखते है -

पोथीने परतापे क्यां क्यां पूगिया,

भगवा रे अंकाशे जईने ऊडिया।

- नीतिन वडगामा

नियमों का पालन होना चाहिए। व्यासपीठ को कोई कुछ कह जाय ऐसा क्यों करते हैं? व्यासपीठ बोलते-बोलते दो मिनट मौन धारण करे तो ऐसा लगे कि मैदान सूमसाम हो गया है। यह शांति किसकी है? आपके अंत:करण में रही हुई सात्त्विक श्रद्धा और यहां निर्माण होती स्वयंशिस्त भावना का प्रभाव है। पर उसे दीर्घायु बनाईए कि यहां से जाने के बाद भी सयाने प्रसन्न हो। गांधी बापू अवाहक तत्त्वों का बना हुआ पुरुष। पर उस लकड़ी के जहाज में इस लोहपुरुष की कीलें थीं। उन्होंने सबको एकसूत्र में बांधा अखंड भारत का निर्माण किया। सबको एकसूत्र में बांधा। इस लोहपुरुष ने। 'मानस' की चौपाईयों को केन्द्र में रखकर उनका मूल्यांकन कर रहे हैं।

कथाक्रम आगे बढ़ाऊं। कल तुलसी की नामनिष्ठा को लेकर बात कर रहे थे कि कलियुग में प्रधान साधन, सरल साधन, सहज साधन, राजमार्ग जैसा साधन हरिनाम। सतयुग में लोग ध्यान धरते थे। अभी कोई करे तो प्रणम्य है। हमारी हैसियत नहीं कि ध्यान लगे! त्रेतायुग में लोग बडे-बडे यज्ञ करते थे। यज्ञ महान है। 'गीता'कार ने कहा कि सयानों को यज्ञ-दान-तप का त्याग नहीं करना चाहिए। ये बुद्धि को बारबार क्रमश: शुद्ध करनेवाले तत्त्व है। पर कलियुग में हम और आप कहां यज्ञ करेंगे? द्वापर में घंटों तक पूजा चलती थी। कलियुग में हमारे पास समय कहां है?

तुलसी कहते हैं कलियुग केवल नाम आधार है। नाम का अभ्यास अधिक होगा। भावसह करे तो ध्यान होने में देर नहीं लगती। नारदजी नामस्मरण करते थे। पर क्या हुआ? साहब, ध्यान को भी ओवरटेक किया तो समाधि लगी! मूल में हरिनाम। जो नाम ध्यान बन सके, वही नाम यज्ञ हो जाय। 'गीता' में संकेत है, 'यज्ञानाम् जपयज्ञोस्मि।' क्या अर्थ है? जीव मेरा नाम नहीं लेता। मैं उससे करवाता हूं। त्रेतायुग में यज्ञ की महिमा। पर आज कलियुग में हरिनाम लेंगे। तुलसीदासजी ने नाम महिमा बताया। कथा विराम के समय कहूं ध्यान धर सको तो धरिए। यज्ञ चाहो तो करो। घंटो तक पूजा पाठ, मुबारक। पर न हो सके तो व्यासपीठ से प्रार्थना कि जिसे मानते हो उस हरि का नाम लेना।

मैं सरदार का अर्थ अपने ढंग से यों करूं। 'स' मानी सहजता। इनमें काफ़ी सहजता है। 'र' मानी रक्षण करना। समग्र राष्ट्र के रक्षण हेतु जीवन समर्पित किया और देश के रक्षण के लिए कठोर निर्णय लेने पड़े। 'दा' मानी 'दायित्व।' सरदार को अपने दायित्व का ज्ञान है। जिसे अपने दायित्व का ज्ञान न हो वे दादागीरी करते हैं। 'र' मानी रहम। जिसके दिल में रहमत हो वह दूर होगा तो भी रक्षण करेगा। दायित्व का ज्ञान होने से वे राष्ट्रीय विभूति होंगे। यदि नई 'गीता' लिखी जाय और दसवां अध्याय 'विभूति योग' हो तो कृष्ण अवश्य कहे 'जगत में फ़ौलादी तत्त्व में मैं वल्लभ हूं।' मैं जिम्मेदारी से व्यासपीठ पर से बोलता हूं।

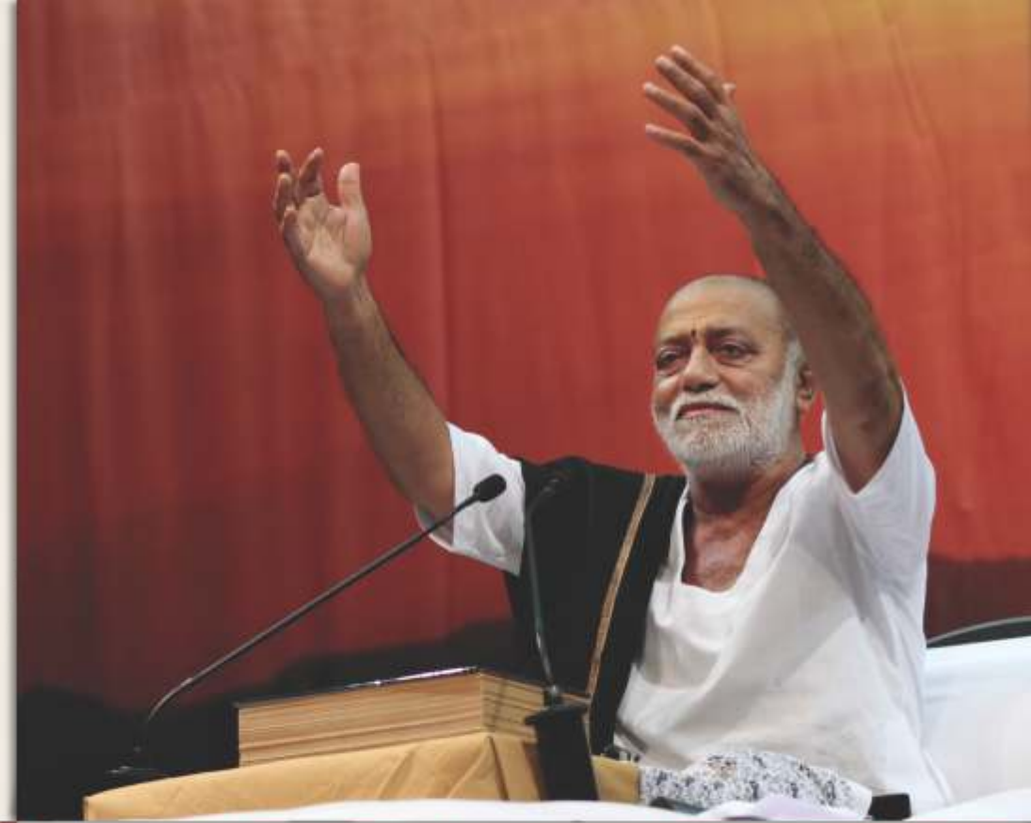

मानस-लोहपुरुष
॥ ४ ॥

महापुरुष को नापने के लिए नहीं, पाने के लिए जाय

विश्ववंद्य पूज्य महात्मा गांधीबापू की चेतना की स्मृति सह हम सब नौ दिनों के लिए सरदार पटेल साहब का स्मरण कर रहे हैं। पुन: मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि व्यासपीठ के इस प्रेमयज्ञ के साथ समांतर चलता वल्लभकथा का वह विचार यज्ञ, इसमें आज दक्षाबहन पट्टणी ने दर्शन कराया। सरदार साहब के बारे में कहा जा रहा है अनुभव के साथ। तो मुझे क्या बोलना? मुझे ग्रंथ और ग्रंथि मुक्त वक्ताओं से प्रसाद रूप में मिल रहा है उसे मैं बांटता हूं। सरदार साहब के बारे में कई गलतफहमियों का निराकरण हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति में इतना कुछ अच्छा होता है ऐसा अहोभाव व्यक्त करने की क्या जरूरत है? नासमझी में बारबार अधोभाव रीपीट क्यों करें? ऐतिहासिक भूमि बारडोली में हम वास्तविक दर्शन प्राप्त कर रहे हैं।

तो बाप, ऐसे स्पष्टवादी आदमी। उनके जीवन की दिखाई देती वस्तु जो ग्रन्थस्थ हुई है जो समकालीनों ने देखकर कही है, क्या हमें ऐसी वस्तु की अपेक्षा न हो? मोरारजीभाई देसाई के लिए अलग-अलग मत है। उनकी छोटी-सी पुस्तक में वक्तव्य है, "मुझे 'भगवद्गीता' संपूर्ण कंठस्थ है। मैं पहले सुबह चार बजे उठकर 'भगवद्गीता' का पाठ करता था। मैंने जेलवास दौरान एक बार बिनती की और जेल के अधिकारीगण ने मेरी

बिनती का स्वीकार किया। मेरी इच्छा पूरी हुई। मैंने एक बार कहा, मुझे 'रामचरित मानस' दो। मैं दोपहर में 'रामायण' का दर्शन करता था।'' ऊपर से देखकर तो हमें ऐसा लगे कि ये सब ऐसा करते होंगे? पर ये सब ग्रंथिमुक्त महापुरुष थे। ग्रंथिमुक्त न हो तब तक आंख सजल नहीं होती।

सरदार साहब के बारे में तो हम सुन रहे हैं। हमें ऐसा लगे कि ऐसी बातों में इन्हें रुचि रहती होगी? तू-तडाक! जो कुछ कहना हो वह स्पष्ट कर दे। और बापू की पूरी जांच पडताल कर स्वीकृति दी। बापू उन्हें पत्र लिखे तो शुरू-शुरू में लिखते कि 'मोहनदास का वंदेमातरम्।' फिर एक मोड ऐसा आया कि वे लिखने लगे, 'बापू का आशीर्वाद।' लड़का बड़ा हुआ कि छोटा? सरदार पटेल साहब की ऋजुता देखी होगी या जिस तरह उनका टर्न आया होंगा और बापू यों लिखने लगे। एक समय ऐसा आया कि बापू लिखने लगे 'चिरंजीव वल्लभभाई।' जीवन के तबक्के बदलते रहते हैं। एक समय ऐसा आया कि बापू कहने लगे यदि यह आदमी न होता तो देश में मुझे जो काम करना था वह मैं इतनी मात्रा में न कर सका होता। 'वल्लभभाई का जय हो' ये शब्द बापू के हैं। ऐसा जय बोलने की बापू को आदत थी। जातुष का शे'र है -

कदी चहेरो, कदी चरणो,

कदी बस पीठ देखाती।

नजरमां क्यां कदी पूरेपूरो दरवेश आवे छे?

कभी हमने चेहरे ही देखे हैं, चरण नहीं देखे, आचरण नहीं देखा! चेहरे से ही आकर्षित हो गए है! तो कई बार चरण ही देखे। उसकी आंखों में पूजारी भाव है या शिकारी भाव यह देखने हम रुके ही नहीं! और कभी पीठ ही देखते हैं। पीठ देखनी माने निंदा करनी। हम कहां दरवेश को संपूर्ण रूप से जान सके हैं? हमने तो इनको तोड़े हैं! हमने सबको इस दृष्टि देखकर भूल कर डाली! ये सभी रहस्यपूर्ण महापुरुष है। इनको नापने के लिए नहीं, पाने के लिए जाय।

सरदार साहब की अंतिम सांसें। 'गीता' पढ़ते, 'रामायण' पढते। प्रार्थना करते। मुझे उनके आखिरी पलों की बात नहीं करनी। उनके जीवन के दो पल बहुत करुण है। एक, गांधी बिदाई के बाद की स्थिति। यह तो सरदार ही विषपान कर सके! जवाहरलालजी के विशेष प्रिय जयप्रकाशजी का आक्षेप था कि गांधी की हत्या में इनका हाथ था! आप कल्पना कीजिए क्या दशा हुई होगी! ऐसा आक्षेप इतना बड़ा आदमी रखे! उन्हें समकालीन कम पहचान पाए हैं! नारायणभाई देसाई भी उल्लेख करते हैं कि गांधी बिदाई के बाद वल्लभभाई बहुत उदास रहते थे। सरदार पटेल साहब के निर्वाण की ओर नहीं जाना है। थोड़ा-सा स्पर्श करें। पटेल साहब का आखिरी समय। वे 'गीता' और 'रामचरित मानस' का पाठ करते थे। उन्होंने और किसी को 'गीता' पाठ करने को नहीं कहा। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। क्या कटुभाषी ऐसा हो सकता है? उनके भीतर के सजल स्तर को देखें। अंतिम समय में कहा, कोई बीना सुनाइए। कर्णाटक के वी.के.नारायण मेनन साहब आए और सरदार की आखिरी सांस तक बीना के सूर बजते रहे! दृष्टि तो देखिए, कितना बिनसंप्रदायी वाद्य पसंद किया!

कुछ और पुरनम मिसाल ले। पुरानी नाट्यसंस्था पृथ्वी थीयेटर नुक्सान में जा रही थी। पृथ्वीराज और राजकपूर दोनों सरदार साहब से मिलने गए और कहा, नुक्सान के कारण पृथ्वी थीयेटर बंद हो जायगा। सरदार ने नाट्यकला का सम्मान करते ग्रान्ट देनी शुरू की। उस्ताद अल्लादीन खां, मध्यप्रदेश। उस जमाने का प्रसिद्ध मेहरबेन्ड। अभाव के कारण बंद पडने की तैयारी में था। सरदार को समाचार मिले। उन्होंने उस्ताद से पूछा कितने रूपये चाहिए? इस देश में ये वाद्य बंद नहीं पड़ने चाहिए।

सरदार साहब को क्रिकेट में ज्यादा रुचि नहीं थी। एक घंटे तक खेल देखा। कोमनवेल्थ इलेवन और दिल्ली के बीच का। प्रसन्न होकर कहते गए, हमारे खिलाडियों को कहना, थोड़े स्वच्छ रहे और स्वस्थ भी रहे। क्रिकेट को प्रोत्साहक दी जाती थी वह बंद हो जाने पर सरदार साहब ने पुनः शुरू कराई।

कटु भाषी को साहित्य में इतनी रुचि? खास कर नाट्य और नृत्य में? वीणावादन में भी रुचि? पहचानना बहुत मुश्किल है। उपर से अलग दिखाई दे पर अंदर के कितने आर्द्र मुकाम? आदरणीय उर्वीश कोठारी ने लिखा, 'सरदार : साचो माणस, साची वात।' इसमें महत्त्वपूर्ण बातें बताई। कितने ही आदरणीयजनों ने अपनी लेखिनी का सद्उपयोग किया है। ये समांतर चलता विचार यज्ञ, इससे सरदार को नज़दीक से जानने का स्तुत्य प्रयास है। तो बाप, गुरुजनों से मिले प्रसाद में से मैं कुछ बोलता हूं। सरदार की स्मृति में हम इस तरह विचार कर रहे हैं। बहुत आनंद आता है।

पहले दिन लोहपुरुष को लेकर कुछेक संकेत रखे थे। उसमें एक था अंगद का पांव। मैं आपसे प्रश्न पूछता हूं आदमी आवेश में आ जाय तो हाथ पटके या पांव? अंगद ने रावण की सभा में दोनों वस्तु की है। हाथ भी पटके हैं और पांव भी। मैंने तो अपनी धरती की बात

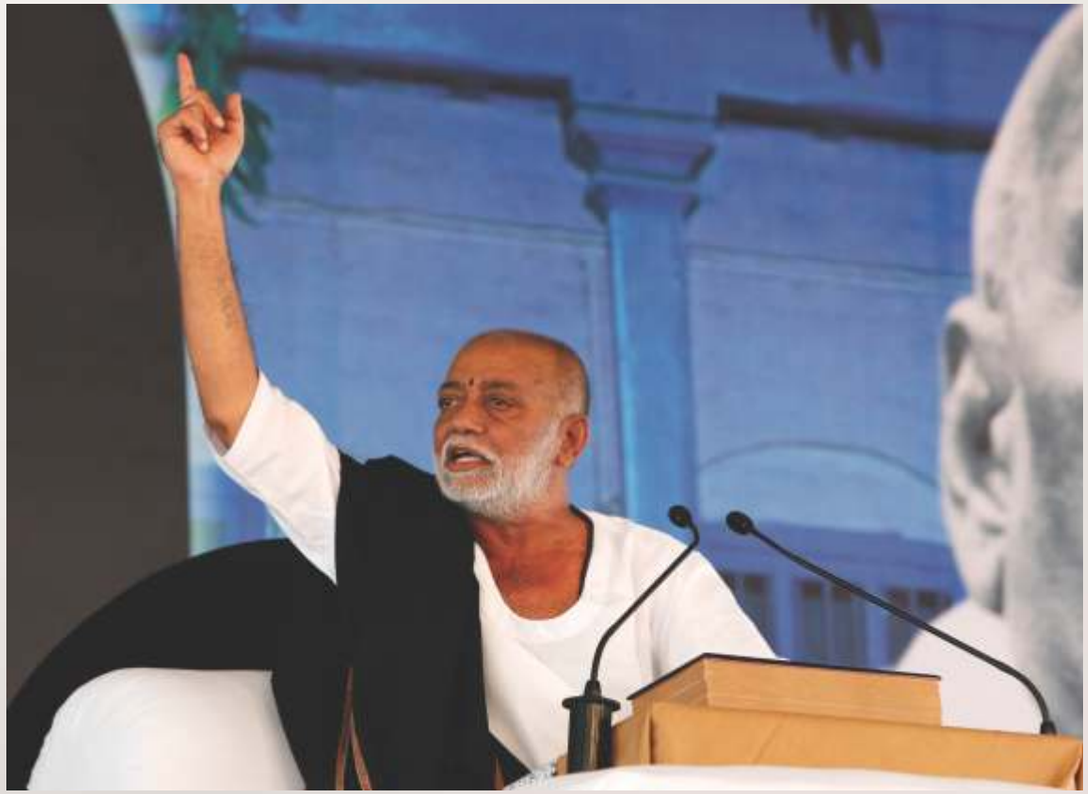

की कि आवेश में आया आदमी ऐसा करे? मैं नहीं मानता कि अंगद आवेश में है। आवेश में सच्चे निर्णय नहीं होते। कोई अपनी बात न स्वीकारे ऐसे वक्त में हम अपने हाथ गुस्से में पटकते हैं, पांव पटकते हैं। यह हमारा पराजय है। 'जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा।' जब रावण ने राम की निंदा शुरू की तब अंगद एकदम क्रोध में आ गया और फिर उसने हाथ-पांव पटके।

बुद्धपुरुष के पास रहे आदमी में, बुद्धपुरुष ने जिसका वरण किया हो, जिसे अपने असंग संग से दीक्षित किया हो, ऐसे आदमी में छोटी ऐसी बातों पर आवेश आ जाय ऐसा कम बनता है। पर हाथ-पांव पटकने के कई अर्थ है। अपने यहां हाथ घिसना एक रीत है। हाथ घिसकर बैठे रहना यह अकर्मण्यता की निशानी है। हाथ फैलाना यह स्वीकार की निशानी है। हाथ उपर उठाना यह किसी पर दृढ भरोसे का प्रतीक है। ऐसी अलग-अलग हाथ की अदाएं कोई बड़ी सांकेतिक भाषा है। मेरी व्यासपीठ को पसंद है हाथ फैलाना माने सबका स्वीकार करना। कोई खराब बोले, कोई अच्छा! कोई विरोध करे, कोई बोध ले। बस, स्वीकार कीजिए। मैं सुधारने के लिए नहीं निकला हूं। सबका स्वीकार करने का यह प्रयास है। क्या हम कोई न्यायधीश है? किसी के लिए निर्णय देने में शीघ्रता मत कीजिए। पछताना पड़ेगा।

निषेध कोईनो नहीं, विदाय कोईने नहीं,

हुं शुद्ध आवकार छुं, हुं सर्वनो समास छुं.

- राजेन्द्र शुक्ल

उपर उठा हाथ यह किसी विश्वास की ओर हमें संकेत करता है। जुड़े हुए हाथ समाज का शिष्टाचार है, विवेक है। मुठ्ठी दबा देनी दो वस्तु का संकेत करती है। एक, आदमी मुठ्ठी मींचता है कि उसे किसी पर प्रहार करना है। दूसरा संकेत, मुठ्ठी दबा देनी यह कृपणता का संकेत है। लोभ का परिचय है। मुठ्ठी खुली होनी चाहिए। बंद मुठ्ठी रहस्यों को छूपाने का संकेत है। हम पर अस्तित्व ने उदारता से करुणा की है। हमें दूसरों के प्रति उदार रहना चाहिए। पैसे देकर पाई उदारता नहीं; क्षमा देकर पाई उदारता; भावुकता से भरी उदारता; किसी के दोषों को भूलने की उदारता।

तो बाप, हाथ की मुद्राएं बहुत कुछ कहती है। हाथ की एक अर्थमुद्रा है। हाथ की एक धर्मसंज्ञा है, ज्ञान संज्ञा है। ऊंगलियों के गलत संकेत काममुद्रा है। हाथ का बहुत बड़ा विज्ञान है। आखिर में मोक्ष संज्ञा। मेरे लिए तो भजन ही मोक्ष है। भजन आहार है। आप माला फेरे यही मोक्षमुद्रा है। यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी अपने हाथ में है। 'उज्ज्वलनीलमणि'कार ने बहुत काम किया है। मैं इस पर बोलूंगा। इस ग्रंथ ने हाथ की मुद्रा के बारे में बहुत बताया है। आप सबकी तबीयत अच्छी हो तो! क्योंकि इसमें तबीयत बिगड़ने के काफी खतरे हैं।

स्वामी नारायण संप्रदाय के संत निष्कुळानंद। इनका एक पद मुझे बहुत प्रिय है, 'त्याग न टके वैराग्य विना।' और साहब, जिसे वैराग्य में रुचि जगे इसका ऐसा अर्थ नहीं कि सब छोड़कर भाग जाय। हम किसीसे यह अपेक्षा न रखे, यों जगत में जहां भी हो, द्वेष न करे तो सफेद वस्त्रों में, लाल वस्त्रों में या चाहे किसी वस्त्र में हो, सभी संन्यासी है। संन्यासी उम्र का चौथा भाग नहीं, वैचारिक विभाग है।

बाप, महम्मद पयगंबर साहब के जीवन की घटना। वैराग्य किसे कहे? आईए थोड़े समय के लिए मक्का-मदिना। हम अपनी तरह से हज पढ़ आए। पुत्री फातिमा से मिलने गए। आंगन में प्रवेश किया। बेटी गद्‌गद् हो गई कि मेरे अब्बा आए! प्रणाम करने जाती है। पयगंबर साहब ने हाथ की और देखा। चांदी के कड़े थे। नजरें हटाई। कमरे की खिड़की को सिल्की पर्दे थे। महम्मद साहब लौट गए। सीधे मस्जिद में गए। नमाज़ का समय नहीं था। कई बार सच्ची नमाज़ यूं ही हो जाती है। मस्जिद में कोई नहीं था। महम्मद साहब ने एक खंभा पकड़ा। जार-जार रोने लगे। वहां फातिमा दु:खी है। उनका बेटा पूछ रहा है, 'अम्मा, क्यों रोती हो? मेरे नाना आकर चले क्यों गए? मैं अभी जाता हूं। नाना को ले आऊं।' वह जानता था कि फकीरों के लिए कौन-सी जगह होती है? नाना मस्जिद में होंगे। महम्मद साहब खंभा पकड़कर बहुत रोते थे। 'नाना, मेरी माँ रो रही है। क्या हुआ?' गले लगा लिया बेटे को। 'बेटा, ऐसा कुछ नहीं है।' 'तो फिर चले क्यों गए?' महापुरुष रहमदिल होते हैं। वापस आए। 'हमारी कोई भूल हुई? आप खफा क्यों है? बाबा, आप खफा तो नहीं है न?' 'ना बेटी!' 'आप चले क्यों गए?' 'बेटा, कुछ नहीं। तेरे हाथ में चांदी की चूड़ियां देखी। खिड़की पर रंगीन पर्दे रखे। मुझे ऐसा लगा कि पयगम्बर की बेटी को तो वैराग्य में जीना चाहिए।'

बेटी ने पर्दे फाड़ डाले! कड़ा फेंक दिया! बेटी ज्यों-ज्यों त्याग करती जाय त्यों-त्यों मोहम्मद साहब के चेहरे पर मुस्कुराहट आती जाय! तुंबडी में सब भर लिया। मोहम्मदसाहब बाज़ार जाकर सब बेच आए। खाने की सामग्री ले आए। फातिमा के घर के आसपास जो गरीबों के झोंपडें थे उनके कितने ही हसन भूखे थे इन सबको खिला दिया। बेटी से कहने लगे, 'बेटी, अपने घर के आसपास इतने भूखे हो तो हम चांदी के कड़े कैसे पहन सकते हैं? लोगों के पास कपड़ें न हो, हम ऐसे पर्दे कैसे रख सकते हैं?'

चर्चा चल रही थी कि हाथ में कई संकेत छूपे हुए हैं। अंगद रावण की सभा में हाथ पटकता है वह केवल आवेशात्मक क्रिया नहीं है। अंगद रावण की सभा में पांव स्थापित करता है। दोनों का इसने उपयोग किया है। जब अंगद ने हाथ पटके तो रावण नीचे गिर पड़ा! रावण जैसा रावण! क्या वह सिंहासन से नीचे उतरना पसंद करे? अंगद ने एक मेसेज दिया। विश्व के सत्ताधीशों को कि सत्ता कायम सलामत नहीं है। कभी बंदर के हाथ से भी गिर पड़ती है। गुणवंतभाई शाह का वाक्य है, राजकारणी आनेवाले चुनाव पर नज़र रखे पर जो सचमुच राजपुरुष है वह आनेवाली पीढ़ी पर नज़र रखे। अंगद ने हाथ पछाड़े और रावण नीचे गिर पड़ा। अंगद ने पृथ्वी पर हाथ पटका मानो पूछा, 'चूप क्यों है? तेरी बेटी सलामत नहीं है।' इस तरह धरती को सावधान किया। यों माँ को जाग्रत कर दी। यह भी एक संकेत है। अंगद पांव रखता है तब तुलसी सरस शब्द प्रयोग करते हैं, 'भूमि न छांड़त कपि चरन।' चाहे कितने राक्षस आए। पर अंगद का पांव पृथ्वी से हटता नहीं था। एक संत कहते हैं, रावण बंदर का पांव न उठा सके ऐसा नहीं हो सकता पर 'भूमि न छांड़त', पृथ्वी उसे उठाने नहीं देती थी।

अंगद का रावण की सभा में यह दूसरा प्रयोग है पांव जमाने का। जिसका पहले दिन संकेत किया था, जो अंगद किष्किन्धा के राज्य का पदत्याग करता है। सुग्रीव को राजगादी मिल गई। अपने पद का त्याग किया। जगत में जो अपने पद का त्याग करेंगे, सभा में से कोई उसका पांव उखाड नहीं सकेगा। ऐसा ही सरदार ने कर दिखाया। सरदार ने बापू के संकेत से प्रधानमंत्री पद या कोंग्रेस प्रमुखपद छोड़ दिया। रावण भी उस पद को हिला न सका। दुनिया की कोई ताकत आज इस फ़ौलादी पद को नहीं हिला सकती।

'विनयपत्रिका' में भी लोहतत्त्व की चर्चा है। 'दोहावलि' में भी लोहतत्त्व की चर्चा है। तुलसी साहित्य में लोहतत्त्व की सांकेतिक चर्चा है। मुझे सहायरूप हो

रही है। दूसरे अर्थ में 'मानस' का अर्थ हृदय होता है। हृदय व्यभिचारी नहीं होना चाहिए। वह भी मानसिक रूप से लोहतत्त्व है। वह सरदार साहब में है। मुझे ऐसे उपक्रम बहुत पसंद है। यह युवा जनता है। कथा में काफ़ी युवा आते हैं। मैं पुन: आपकी एकाग्रता की दाद देता हूं।

कथाक्रम आगे नहीं बढ़ रहा है! आज आगे बढ़ें। हरिनाम महिमा किया। फिर रामकथा की पीठिका बताई। सर्वप्रथम 'रामचरित मानस' की रचना भगवान शिव ने की। अपने मन में और मानस में रखी। इसीलिए 'रामचरित मानस' नामकरण किया। 'रामायण' के वाल्मीकि आदि कवि है। पर 'रामचरित मानस' के अनादि कवि शंकर है। उचित समय, पात्र मिलने पर अमृत उंडेला। योग्य समय पार्वती के सामने यह कथा प्रकट की। अनादि भगवान महादेव ने वही रामकथा कागभुशुंडि को दी। एक ओर शिखर है नीलगिरि। इच्छामरण कागभुशुंडिजी को यह कथा शिवजी द्वारा मिली। और उन्होंने उचित समय आने पर गरुड को सुनाई। यह कथा अभी शिखर पर है, जहां सभी जा नहीं सकते। पर कथा का कर्तव्य धरा पर आना है। शिखरस्थ वक्ताओं का दायित्व है कि लोग जहां पर है वहां पहुंचे। वहां से उछलती-कूदती दो किनारों पर बहती रामकथारूपी गंगा का धरती पर अवतरण हुआ। याज्ञवल्क्यजी ने प्रपन्न भरद्वाजजी के पास गाई। तुलसी कहते हैं वहां से यह कथा वराहक्षेत्र में आई। जहां मेरे गुरु नरहरि आचार्य बिराजमान थे। उनके पास कथा आने पर मैं वहां पहुंचा तब गुरुजी ने मुझे रामकथा दी। पर मेरा

वह बचपन काल था। मैं समझ नहीं पाया। कृपालु गुरु ने बार-बार यह कथा गाई। कथा बार-बार कहनी चाहिए। तभी समाज का कोई तुलसी समझ सकता है। तुलसी कहते हैं जब कथा समझ में आई -

भाषाबद्ध करबि मैं सोई।

मोरे मन प्रबोध जेहिं होई।।

गोस्वामीजी ने पक्का निश्चय किया कि मैं इस कथा को भाषाबद्ध करूंगा। दुनिया को एक महान ग्रंथ देने के लिए? ना। 'मोरे मन प्रबोध जेहिं होई।' मेरे मन को बोध हो, दुनिया को नहीं। दुनिया को फायदा हो तो लूट भी लिया जाय। लोक में श्लोक उतारे। एकदम आखिरी आदमी भी समझ सके ऐसी ग्राम्यगिरा का उपयोग किया। संवत् १६३१ की साल। रामनवमी का दिन। अयोध्या में इस कथा का प्रकाशन हुआ। चार स्थानों पर कथा हुई। कैलास, नीलगिरि, तीर्थराज प्रयाग और तुलसी अपने मन को कथा कहने तैयार हुए। कैलास ज्ञानपीठ, नीलगिरि उपासना पीठ; तीर्थराज प्रयाग कर्मपीठ और तुलसी की प्रपन्नता की पीठ।

याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी के आश्रम में कुंभमेले में आए हुए है। भरद्वाजजी ने कुंभमेले की पूर्णाहुति के बाद याज्ञवल्क्यजी को आग्रह कर रोके हुए हैं। बिनतीकी, 'महाराज, आपको सभी शास्त्र हस्तामलक हैं, वेद के रहस्य आपकी मुठ्ठी में है। मुझे समझाइए कि रामतत्त्व क्या है?' याज्ञवल्क्य मुस्कुराए, 'आपको 'रामायण' में गूढ रहस्य सुनने हैं। अत: मूढ की तरह प्रश्न किया है। आप जैसे प्रपन्न श्रोता मिले तो प्रसन्न होकर कथा गायन करूंगा।' यों प्रयाग की कर्मपीठ पर कथा का आरंभ हुआ है। फिर कथा आगे बढ़ती है। फिर शिवविवाह की कथा है। फिर भगवान महादेव ब्याहकर कैलास पधारे हैं।

शिवजी कैलास पर वेदविदित वटवृक्ष के साये में सहज आसन पर बैठे हैं। पार्वतीजी योग्य अवसर देखकर शिव के पास आई है। पार्वतीजी को वामपक्ष में सादर आसन दिया है। फिर पार्वतीजी ने प्रसन्न चित्त हो महादेव को प्रश्न किया है, 'अभी मेरे मन की दुविधा का नाश नहीं हुआ है कि राम ब्रह्म है या मनुष्य? राम की मनुष्यलीला देखकर मन में संदेह हुआ और मुझे एक जीवन गंवाना पड़ा। अभी तक समझ में नहीं आया कि रामतत्त्व क्या है? आप मुझे रामकथा द्वारा रामतत्त्व समझाइए।' शिव प्रसन्न होकर पार्वतीजी के सामने रामकथा शुरू करते हैं।

सरदार पटेलसाहब के निर्वाण की ओर ज्यादा नहीं जाना है। पर थोड़ा स्पर्श करूं। पटेलसाहब का आखिरी समय था। वे 'गीता' और 'रामचरित मानस' का पाठ करते थे। आखिरी समय में किसी से गीतापाठ नहीं करवाया। मुझे यह बात पसंद आई। स्पष्टवादी ऐसे हो सकते हैं? उनके भीतर के सजल स्तर देखें। उन्होंने आखिर में यों कहा कि कोई बीना बजाये। कर्नाटक के वी. के. नारायण मेननसाहब बुलाए गए। सरदारसाहब के आखिरी सांसों के रीधम के साथ बीना के सूरों ने संगत की। दृष्टि तो देखिए, कितना बिनसांप्रदायी वाद्य पसंद किया!

प्रेमतत्त्व एक प्रकार का तप है

विषयप्रवेश करने से पहले मैं अपनी विशेष प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। गत सायंकाल रामकथा के मंच से लोकसंगीत और संगीत की अनेक विधाओं का हमने आनंद उठाया। शब्द और सूर में डूब गए। मायाभाई ने ओसमाण को सादर पेश किया। ओसमाण ने बखूबी आकंठ गाया। अलग-अलग क्षेत्र की सभी चेतनाओं को जब हम सुनते हैं तब लगता है कि वे हररोज नई कोंपले लेकर आते हैं। आज जयभाई ने ओजस्वी वक्तव्य दिया। यह सरदार तपा न होता तो? मैं आज तीन वस्तु कहना चाहता हूं - लोहतत्त्व, लोहधातु और लोहपुरुष। मेरी दृष्टि में इन तीनों के तीन-तीन वर्गीकरण है। मैं अपनी जिम्मेदारी से बोलूंगा। स्वीकृति देने में बाध्यता नहीं है। मैं चाहता हूं कि आप सोचिए। जयभाई ने कहा कि यह आदमी को अपना घर कहीं नहीं। फिर भी पूरा हिन्दुस्तान उसका घर है। 'वसीम' बरेलवी का शे'र -

वो जिधर भी रहेगा रोशनी फ़ैलाएगा,

चरागों को अपना मकां नहीं होता।

दीये को अपना मठ नहीं होता। लोकमंगल के लिए स्थान खड़े हो यह अलग बात है। दीये को जहां भी रखो वह उजाला फैलाता है। उसे अपना-पराया नहीं होता।

तो बाप, 'मानस-लोहपुरुष', जो इस नौ दिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विचार है। गुह्यराज लोहा है। 'रामायण' में भरतजी स्वयं को लोहा कहते हैं, 'लोह कराल कठोर।' 'रामचरित मानस' में भील, वनवासी मार्ग में आते हैं, उनके भाग्य की सराहना करते हुए कहा गया है कि ये लोग लोहा लेकर तैर गए। आज मुझे तत्त्व के रूप में लोहा, लोहतत्त्व, धातुरूप लोहा के बारे में कुछ बात करनी है। हम सब धातु के रूप में लोहे को जानते हैं। समस्त जगत लोहे पर चलता है। मुझे एक प्रश्न ऐसा भी हुआ कि क्या हनुमानजी को लोहपुरुष कहेंगे? ना। वे उपर से सुवर्ण पुरुष है। 'हेमशैलाभदेहं', 'कंचनबरन बिराज सुबेसा', 'कनक भुधराकारं शरीरं।' पर अंदर से वे दृढ निश्चयी है। लोहतत्त्व आध्यात्मिक तत्त्व है। साधनामय तत्त्व है लोहधातु। पूरे जगत में लोहे का उपयोग होता है। मैंने कहा था, सुवर्ण सत्ता का प्रतीक है, लोहा समग्र समाज की सेवा का प्रतीक है। धातु के रूप में लोहा, तत्त्व के रूप में लोहा और इस व्यक्ति को लोहपुरुष कहते हैं तब फ़ौलादी पुरुष का अर्थ है।

मुझे 'अथर्ववेद' से संकेत मिला कि तात्त्विक रूप से आदमी कब दृढ निश्चयी होता है? वेद की ऋचा लिखकर लाया हूं -

तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि।।

अपने जीवन में ऐसा कौन-सा तत्त्व आए कि हम अंदर से फ़ौलादी बने रहे? गंगासती का कथन है -

मेरु रे डगे पण जेनां मनडां डगे नहि,

मरने भांगी रे पडे भरमांड रे।

विपद पडे पण वणसे नहि,

इ तो हरिजननां परमाण रे ...

निश्चलता, नीडरता, अटलता।

वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्ष्या बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति।

एवं कुलीना व्यसनाभिभूता न नीतिमार्गं परिलङ्घयन्ति।।

शेर चाहे जितना भूखा हो घास नहीं खायगा। उसी तरह कुलीन लोग दु:खों से घिर जाय पर नीति का त्याग नहीं करते। सत्य, प्रेम, करुणा का त्याग नहीं करते।

तो बाप, हमारी अटलता, निश्चलता, निर्भयता इस अर्थ में लोहतत्त्व है। जिसका संबंध भीतरी स्थिति से है। कल नया विचार Inner Process सुना, एक भीतरी अंतर्यात्रा। उसे मज़बूत रखनी हो, निकम्मा खत्म करना हो, नया उत्पन्न करना हो तो भगवान वेद से तीन सूत्र मिलते हैं। प्रत्येक साधक के लोहतत्त्व के लिए, भीतरी दृढता के लिए जिसका सदुपयोग कीजिए। ये तीन वस्तु कठिन नहीं है जो आपके सामने रखी है।

तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि।।

तपोवन के ऋषि के पास जब विद्यार्थी आए तब उसकी कूटि पर करधनी दर्भ की बनी हुई बांधे। तीन बात कहे, तू बराबर इस वस्तु को पकड ले। जन्म-जन्म का तेरा भीतरी लोहतत्त्व, मजबूत तत्त्व का जतन करेगा। कभी कमजोर नहीं पड़ेगा। ब्रह्मचर्य, तप और श्रम ये तीन सूत्र हैं।

ब्रह्मचर्य की चर्चा कठिन है। उसके भाष्य और वक्ता अनेक है। हम सब तो संसारी है। आज कितने सारे प्रश्न है, गांधीबापू के ब्रह्मचर्य प्रयोग स्वीकार्य है कि नहीं? मैं तो यही समझता हूं 'चारों जुग परताप तुम्हारा।' चारों युग में इसका प्रभाव माने तो दुनिया में ब्रह्मचारी होगा। यह हनुमान, कौन ना कहेगा? दूसरे भीष्म दादा।समर्थ को जब परेशानी हो तो भीष्म से प्रेरणा लेनी चाहिए। जब बैचेनी हो तो भीष्म की स्थिति क्या थी उस स्थिति को महसूस करनी चाहिए। भीष्म पर भी चर्चा होती है कि क्या उनकी प्रतिज्ञा उचित थी? यह सब छोडिए। रामकथा में परशुराम अपने मुंह से बोले हैं,

'बाल ब्रह्मचारी अति कोही।' वे कहते हैं, 'मैं बालब्रह्मचारी हूं।'

मैं वढवाण में कथा करता था। मेरा मुकाम तालाब के किनारे पर था। एक चालीस वर्षीय भाई आए और कहा मैं चालीस वर्ष का ब्रह्मचारी हूं। एक प्रश्न पूछना है। मैंने कहा, बुरा न लगे तो एक बात कहूं? आप ब्रह्मचारी नहीं पर कवारे है। उन्होंने चौंककर कहा, हें, आपको कैसे पता चला? मैंने कहा, जिनका चालीस वर्ष का ब्रह्मचर्य हो वे प्रश्न पूछने भटकते नहीं है। उसकी भीतरी ऊर्जा ही समाधान कर देती है।

साहब, यह बड़ा विचित्र विषय है। मैं ब्रह्मचर्य के बारे में इतना ही कहूंगा कि हम सब संसारी है। पर हमारा चित्त यदि ब्रह्म में ही बसा रहे तो समझना चाहिए कि हम ब्रह्म में चारा चरते हैं। हमारा खेत ब्रह्म है। हम तो किसी सद्गुरु के बछड़ें हैं। जब वे मुक्त हो तो ब्रह्म के खेत में घास खाते हैं। पर हनुमानजी के लिए क्या कहे?

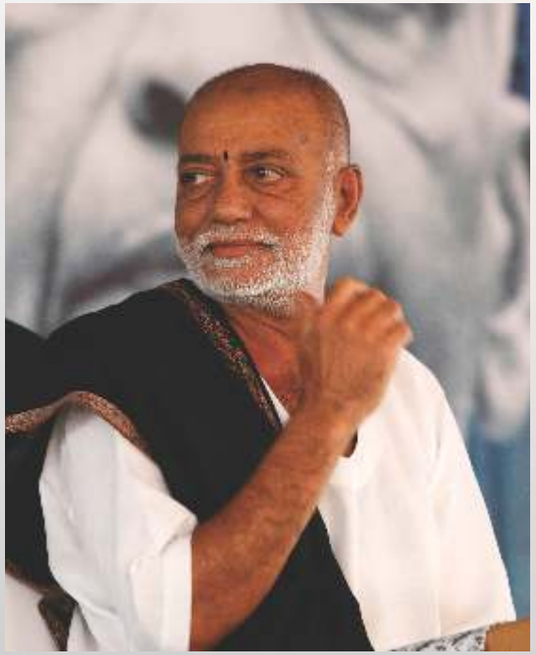

उनका आंतरिक लोहतत्त्व है। मैं तो ऐसा सोचूं सत्य का उच्चार जितनी मात्रा में हो, आचरण हो ऐसी ऊर्जा का रक्षण माने ब्रह्मचर्य। दूसरा प्रेम। नगीनदास (संघवी) बापा ने उस दिन 'गीता : नवी नजरे' में अच्छा कहा कि भक्ति किसी से ली नहीं जाती, की नहीं जाती पर भक्ति हो जाती है। जिस तरह प्रेम हो जाता है। प्रेम में क्या हो जाता है यह आप सब जानते हैं।

हर दिल जो प्यार करेगा, वो गाना गायेगा।

दीवाना सेंकडों में पहचाना जायेगा।

सैंकडों में क्या, नरसैयो लाखों में पहचाना गया! उसने कृष्ण से प्रेम किया। इस भूमंडल पर मीरां पहचानी गई। 'मेरे तो गिरिधर गोपाल।' प्रेम सीखना हो, प्रेम का प्राकट्य करना हो, तो कभी 'भागवत्' को केवल धार्मिक भाव को एक ओर रखकर वास्तविक भाव से पढ़िए। धार्मिकता हमें अहोभाव में खींचकर ले जाती है।

बाप, सत्य हमारे अंदर का लोहतत्त्व है उसे लेकर सोचे, बोले, व्यवहार में रखे। आध्यात्मिक जगत के साधक का यह लोहषत्त्व है। इस तरह सत्य के साथ तादात्म्य ब्रह्मचर्य है। प्रेम एक बंदगी है। रूखड बावा के भजन में एक पंक्ति है -

जेम झळूंबे नरनी माथे नार जो ...

'नर के उपर नार' का अर्थ क्या है? मैं तो 'रामायण' से पूछूं। 'रामायण' में ज्ञान और वैराग्य पुरुष है और भक्ति नारी है। प्रेमतत्त्व भक्तितत्त्वरूप नारी ज्ञानरूपी नर पर मंडराती है।

सोह न राम पेम बिनु ग्यानू।

करनधार बिनु जिमि जल जानू।

यही तुलसी का सिद्धांत है। इसमें हम ज्ञान को निम्न नहीं मानते। पर भक्ति छा जाती है। मर्हूम खुमार बाराबंकवी साहब का शे'र है -

अक्ल और दिल अपनी अपनी कहे 'खुमार',

तो अक्ल की सुनिए दिल का कहा कीजिए।

प्रेमतत्त्व हमारा एक प्रकार का तप है। प्रेम में तपना-सहना होता है। भक्ति तप्त कराती है। 'अथर्ववेद' तीन वस्तु कहे; ब्रह्मचर्य, श्रम और तप। ये लोहतत्त्व के कारण हैं। उपनिषद ने ऐसा भी कहा, 'सत्येन लभ्यस् तपसा ह्येष आत्मा।' आत्मा सत्य से मिले, तप से मिले या सत्य जितनी मात्रा में हम निर्वाह कर सके यही बड़ा तप है। प्रेम एक बड़ी तपस्या है। अश्रु सब से बड़ा तप है। यह प्रवाही तप है। बाकी सब जड़ है।

सरदार साहब ने कभी भी ऐसा नहीं कहा कि मैं गांधी की तरह सत्य कहूंगा। वे बिलकुल निर्दंभ है। वे अहमदाबाद की कॉलेज में संबोधन करने गए। लड़के खड़ें ही रहे, बैठे ही नहीं! उन्होंने बोलना शुरू किया, 'सुनिए, दुनिया में चार हठ है एक राजहठ, दूसरी बालहठ, तीसरी स्त्रीहठ और चौथी अंग्रेजों की पीछेहठ और पांचवी आप लोगों की खड़े रहने की हठ!' बस, लडके बैठ गए। सत्य उनका लोहतत्त्व है। लोहा दृढ ही होता है। हर लोहे को पीघलना पड़ता है। यह लोहतत्त्व अंदर से पीघलता लोहतत्त्व है। श्रमिक मज़बूत होता है। भीतर से श्रमिक पर भरोसा किया जा सकता है।

तो, सरदार साहब में भीतरी लोहतत्त्व है। लोह को धातुरूप में ले तो उस पर जंग लगता है। लोहे को क्षारयुक्त प्रदेश में रखो तो जल्दी जंग लग जाता है। आज लोहे का प्रोसेस किया जाता है और उसके मूल में से जो नव-नव निर्मित होता है उसमें धातुरूप में भी जंग नहीं लगता है। यह स्टील की थाली क्या है? लोहा ही है न? स्टील की थाली को जंग नहीं लगता। धातु में तामसी धातु लोहा है। तांबा सात्त्विक धातु है। सोना रजोगुणी है। लोहा भले तामसी हो पर उसका बड़ा गुण है कि पारस उसे छू जाय तो वह सोना हो जाता है। हमारे जीवन में तमस हो तो भी चिंता की बात नहीं। कोई पारस जैसा बुद्धपुरुष मिल जाय और उनके संसर्ग में हम जीयें तो बाप हम सोने जैसा हो सके। सोने जैसा जीवन माने एक अच्छा जीवन, प्रसन्न जीवन! लोहे की हम चाहे उतनी टीका करे, धातुरूप में उसी का उपयोग होता है। चुंबक के पास लोहा ही खींचा चला जाता है। अन्य धातु में वह खींचाव नहीं होता। अच्छी वस्तु के पास तो जेसल जैसा लोहा भी खींचा चला जाता है। वह कैसी कुधातु था? जब कोई ऐसा तत्त्व मिलता है तब 'पारस परस कुधातु सुहाई।' पारस के स्पर्श से कुधातु अच्छी होती है। सरदार को सभी लोहपुरुष मानते हैं। वे तामसी नहीं, न तो उन्हें प्रलोभन का कोई जंग लगा और न तो पद-प्रतिष्ठा का।

तो बाप, 'मानस-लोहपुरुष' में 'एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।' इसीको लेकर मैं आपसे बातें कर रहा था। मैंने कहा था कि रामजन्म तक कथा को ले आऊंगा। अब शेष समय में रामकथा का विहंगावलोकन करा दूं।

मैंने कल शिवविवाह की कथा बताई थी। भगवान सहजासन पर बिराजमान है। पार्वती उचित अवसर देख शिव के पास आई। अपनी प्रिया को सादर वामभाग में आसन दिया। अपने यहां स्त्री को हमेशा बाई ओर आसन दिया जाता है। संतों से सुना है, हृदय हंमेशा बाई ओर होता है। सच्चा गृहस्थाश्रमी अपनी देवी का हृदय से सन्मान करता है। यह आदर्श गृहस्थाश्रम है।

पार्वती बिराजमान है। महादेव को प्रसन्न देखकर पूछती है, भगवन्, अभी तक मन से संदेह नहीं गया कि सचमुच राम ब्रह्म है कि मनुष्य है? दीर्घकाल के सत्संग से भ्रम निवारण होता है। सती कहती है, 'मुझे रामकथा सुनाकर मेरा भ्रम तोड़िए।' रामकथा सुनाने का अवसर मिला तो वे ध्यानरस में डूब गए। महादेव ने कहा, 'देवी! रामजन्म का कोई कारण नहीं है फिर भी अनेक कारण है। ईश्वर को कार्यकारण संबंध लागू नहीं होता। यद्यपि हरि जब कोई विशेषरूप धारण करते हैं तब उसके अमुक कारण भी होते हैं।'

रामजन्म हो इससे पहले रावण का जन्म बताया है। माने सूर्य उगने से पहले रात होती है। रावण रात का प्रतीक है। राम सूर्य के प्रतीक है। पूरा जगत रावण के कारण भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। भ्रष्टाचार मात्रा में कमोबेश हुआ है। पर सभी काल में दीखते हैं। पूरा जगत भ्रष्टाचार में डूबा है। धरती अशांत हो गई। गाय का रूप लिया। धरती गाय का रूप लेकर ऋषिमुनि के पास पहुंची। उन्होंने कहा, हम भी विवश हैं। देवताओं के पास गए। उन्होंने भी विवशता जताई। सब मिलकर ब्रह्म के पास गए। अब एक ही उपाय है कि हम सबको सहायरूप हो सके ऐसे परम तत्त्व को पुकार लगाए। ब्रह्मा के नेतृत्व में, समूह स्वर में परमात्मा को पुकार लगाई। आकाशवाणी हुई, 'धैर्य रखिए। वैसे कोई कारण नहीं पर गिने तो अनेक कारण है। मैं धरती पर अयोध्या में, रघुवंश में अवतार लूंगा।' सभी आकाशवाणी सुनकर प्रसन्न हुए।

मेरी व्यासपीठ इस प्रसंग को तीन सूत्रों में विभाजित करती है। प्रथम हमें कुछ कर लेना चाहिए। पर अपनी सीमा खत्म होने पर पुकार लगानी चाहिए। फिर तीसरा सोपान प्रतीक्षा है। सबसे पहले हम परमात्मा के दिए सामर्थ्य का उपयोग करे। पर इससे पूरा न हो तो फिर उसे पुकार लगाए। फिर प्रतीक्षा करे। तब जाकर उपलब्धि होती है।

हमें तुलसीदासजी चौपाईयों के माध्यम से अयोध्या ले जाते हैं। जहां प्रभु का प्राकट्य होनेवाला है। वर्तमान शासक रघुवंशी सम्राट दशरथजी में ज्ञान, उपासना और कर्म, वेद के तीनों खंड समाहित है। उनकी रानियां पवित्र आचरण करती है। राजा अपनी रानियों से बहुत प्रेम करते हैं। रानियां राजा को बहुत आदर देती है। सब मिलकर परम तत्त्व की साधना भी करते हैं। तीन वस्तु इकठ्ठी हुई है। गुरुकृपा भी शामिल है। उनके घर ब्रह्म ने बालरूप प्रकट किया। कितना सुंदर गृहस्थ जीवन होगा कि ईश्वर को अवतार लेना पड़ा! आज भी कोई ऐसा हो सके तो उनके घर में राम जैसे संतान का प्राकट्य हो सकता है। बस इतना ही करना है, पुरुष पत्नी को प्रेम दे, पत्नी पुरुष को आदर दे और दोनों हरिभजन करे।

समय बीतता है। राजा की प्राय: चौथी अवस्था आने लगी है। संतान नहीं है। अब क्या करे? हमें सुंदर मार्गदर्शन मिलता है कि जब हमें कहीं से जवाब न मिले तब कहां जाना यह दशरथजी ने बताया कि किसी बुद्धपुरुष के पास जाना चाहिए। वे गुरु के द्वार पहुंचे और नि:संतान होने की पीडा बताई। गुरु ने कहा कि मैं प्रतीक्षा ही कर रहा था कि आप एक बार आकर ब्रह्म जिज्ञासा कीजिए। ब्रह्म का अवतरण करवा दूं। आपको चार पुत्र होंगे। पर एक प्रक्रिया में से गुज़रना पड़ेगा। यज्ञ करना होगा। शृंगिऋषि बुलाए गए हैं। पुत्रकामेष्टि यज्ञ का आरंभ हुआ। भक्तिसहित आहुति दी गई। अंतिम आहुति पर यज्ञकुंड में से यज्ञपुरुष अग्नि रूप में हाथ में प्रसाद का चरु लेकर निकले। वशिष्ठजी को प्रसाद का चरु दिया और कहा कि, 'महाराज, यह प्रसाद सम्राट को दीजिए। और कहिए कि रानियों में यथायोग्य वितरित करें।' प्रसाद का वितरण ही होना चाहिए, बिकना नहीं चाहिए। प्रसाद के रूप में राम का वितरण होता ही रहा।

रानियां बुलाई गई है। प्रसाद का चरु राजा के हाथ में है। कौशल्या को आधा, एक चौथाई कैकेयी को और एक चौथाई के दो हिस्सेकर कौशल्या और कैकयी के हाथों सुमित्रा को दिया गया। तीनों रानियों ने प्रसाद का स्वीकार किया। प्रसाद माने कृपा। कृपा के कारण हरि गर्भ में आए। परम तत्त्व उर और उदर में निवास करते हैं। क्या कोई भी नई चेतना गर्भ में आए वह ईश्वर नहीं है? चाहे वह पुत्र हो या पुत्री? पुत्री आए तो मुंह टेढ़ा मत कीजिए। चेतनाओं का स्वागत कीजिए।

परम चेतना के प्राकट्य का समय नजदीक है। पंचाग अनुकूल है। भगवान के प्रकट होने का समय हुआ है। त्रेतायुग, चैतमास, शुक्लपक्ष, नवमी तिथि और मध्याह्न का सूरज! ईश्वर किसी विशिष्ट तिथि पर ही जन्म ले ऐसा नियम नहीं करना है। हमारे अंत:करण की अयोध्या में रामतत्त्व का अनुभव किसी भी तिथि को हो सकता है। मेरी व्यासपीठ तो ऐसा कहती है जिस तिथि को हरि का स्फुरण अनुभव करे वही तिथि नवमी है।

मंद सुगंध शीतल वायु बहती है। ऐसा लगे कि नदियों में अमृत बहता है! मणियों की खदानें निकलने लगी! गर्भस्तुतियां होने लगी है। ऐसे समय पूरे विश्व में जिनका निवास है, ऐसे परमतत्त्व माँ कौशल्या के राजभवन में प्रकट होते हैं। भवन प्रकाश से भर गया है! माँ देखने लगी कि यह क्या हो रहा है? चतुर्भुज विग्रह दिखता है और गोस्वामीजी की लेखिनी कहती है -

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।

गोस्वामीजी कहते हैं भगवान का प्राकट्य हुआ है। माँ को ज्ञान हुआ। परमात्मा मुस्कुराते है। कौशल्या भगवान से कहती है, 'प्रभु, आप आए पर आप वचन चूक गए हैं। आपने ऐसा कहा था कि मैं तुम्हारे यहां मनुष्य के रूप में आऊंगा। आप नारायणरूप पधारे हैं। मुझे नररूप में हरि चाहिए। आप पिता बनकर पधारे हैं।' भगवान ने कहा, 'आप मुझे मनुष्य बनाइए।' भारत की माँ परमात्मा को मनुष्य बना सके ऐसा सामर्थ्य रखती है। प्रभु नवजात शिशु बनकर माँ की गोद में आकर रोते हैं। शिशुरुदन सुनकर अन्य राणियां भ्रमवश आ गई। वशिष्ठजी ब्रह्म देवताओं के साथ पधारे हैं। महाराज दशरथजी को भरोसा हुआ तब वे परमानंद में डूब गए। समग्र अयोध्या में रामजन्म की बधाईयां शुरू हो गई।

लोहा तामसी धातु है। तांबा सात्त्विक धातु है। सोना रजोगुणी धातु है। हम लोहे को तामसी मानते हैं। पर उस कुधातु का सबसे बड़ा गुण यह है कि उसे पारस का स्पर्श हो तो सोना हो जाने में देर नहीं लगती। यूं हमारे जीवन में तमस हो तो भी चिंता नहीं करनी चाहिए। कोई बुद्धपुरुष जैसा पारस मिल जाय, उसके संसर्ग में जीये तो हम भी सोना हो सकते हैं। सोना जैसा मानी एक अच्छा जीवन, प्रसन्न जीवन।

कथा-दर्शन

'रामायण' संगीतमय शास्त्र है, उसमें सात स्वरों की सुंदर हार्मनी है।

जो वस्तु मुझे और आपको आराम दे वे तमाम तत्त्व राम है।

भजनानंद तकलीफ़ें कम करता है।

जिनके भजन पक्के हो गए हो वह सो नहीं पाता।

भजन का भी अतिरेक नहीं होना चाहिए।

सद्गुरु हमारे मानसिक रोगों की औषधि है।

असत्य में से सत्य की ओर ले जाय वही गुरु है।

जो मृत्यु के भय में से अमृत का आस्वाद कराए वही गुरु है।

कोई बुद्धपुरुष किसीको गुलाम न करे और जो गुलाम करे वह बुद्धपुरुष नहीं।

उदास न होना हो तो किसीके दास हो जाय।

दासत्व का अर्थ गुलामी नहीं, बल्कि सत्य के मार्ग पर चलने का शिवसंकल्प।

निंदा और निद्रा जिनको विक्षिप्त न कर सके वह जाग्रह है, वह लोहपुरुष है।

सच्चे विचारों में अड़ग रहना वह लोहतत्त्व का लक्षण है।

सुवर्ण सत्ता का प्रतीक है, लोहा सेवा का प्रतीक है।

ग्रंथिमुक्त न हो तब तक आंख सजल नहीं होती।

इतिहास प्रसिद्ध होता है, अध्यात्म बहुत गोप्य होता है।

प्रसाद का वितरण ही होना चाहिए, प्रसाद बिकना नहीं चाहिए।

प्रेम एक बड़ी तपस्या है।

जो दूसरों को जगाता है वह जाग्रत है।

साधु का मुख्य कार्य भजन है।

मानस-लोहपुरुष
॥ ६ ॥

जीवन की प्रत्येक घटना को भजन का हिस्सा मानिए

कथा के विषय और प्रसंग में प्रवेश करे इससे पहले हम प्रसन्नतापूर्वक साक्षी है कि कल भी भाई जय वसावडा ने इतना सुंदर और सहज वक्तव्य दिया। कोई भी वक्ता 'दिने दिने नवम् नवम्' होना चाहिए। इस देश में अब बासी वक्ता नहीं चल सकता।

तीन प्रकार के मानव होते हैं। एक, विचारक हो। विचारक मानव जरूरी है। दूसरा सबका उद्धार करनेवाला उद्धारक होता है। वह सबका उद्धार करे।

दावा था जिसे हमदर्दी का खुद आके न पूछा हाल हमें,
मेहफ़िल में बुलाया है हमको हंसने को सितमगारों की तरह।

दावा तो सभी करे पर कोई हाल नहीं पूछता! वह उद्धारक होना चाहिए। आखिर में वह स्वीकारक होना चाहिए। कृष्ण ने क्या किया? विचारक तो थे ही वे उद्धारक भी हुए। फिर स्वीकारक भी हुए। उस जमाने में भोंमासुर के यहां बंदी बनी स्त्रीयों को स्वीकारने की हिम्मत केवल गोविंद ही कर सके। उन्होंने सभी का स्वीकार किया। राम ने आहिल्या का स्वीकार किया। शबरी, केवट, सुग्रीव, विभीषण सभी का स्वीकार किया। इस स्वीकारक तत्त्व की देश को बहुत ज़रूरत है। इस देश की एक स्त्री कृष्ण के गुण सुनकर उसके भाव में डूबे और समर्पण का शिव संकल्प कर डाले! उसका भाई विरुद्ध में था। कितने ही राजा-महाराजाओं की आंख उस पर थी। कृष्ण को चिट्ठी लिखे कि, 'मैं भवानी की पूजा करने जाऊं तब मुझे ले जाना। तेरे बाहु में ताकत हो तो मेरा स्वीकार करना।' कृष्ण कोरे विचारक ही नहीं थे।

'रामायण' में कितने ही वल्लभ पड़े हैं! तुलसीदासजी राम को भी वल्लभ कहते हैं।

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

राम वल्लभ है। अत्रि ने भी ऐसा ही कहा है। मेरे तुलसी ने शंकर को भी वल्लभ कहा है। 'शंकरं शंप्रदं।' 'विनयपत्रिका' के पद में वे शंकर को वल्लभ कहते हैं। मैंने तो भरत को लोहपुरुष माना है। 'विनयपत्रिका' में तुलसी ने शत्रुघ्न और श्रुतकीर्ति को भी वल्लभ कहा है। लक्ष्मण भी वल्लभ है। 'रामचरित मानस' के आधार पर इन सभी पात्रों को देखता हूं तब उनके अनेक गुणों का दर्शन इस (सरदार) वल्लभ में होते हैं। साहब, वे अल्वर के राजा को बातचीत के लिए बुलाए और फिर कार्य पूर्ण करे। किसीको भनक तक न लगने दे! तुलसी राजनीति की चर्चा कर कहते हैं -

राजधरम सरबसु एतनोई।
जिमि मन माँह मनोरथ गोई।।

उसके मनोरथ को कोई परख नहीं सकता। फिर भी उस मनोरथ का फल समग्र देश को प्राप्त होता है। सरदार पटेल साहब, सुशीला नय्यर, महावीर त्यागी ये सब एक साथ जा रहे थे और मणिबहन की पैबन्दवाली साडी देखी और महावीर त्यागी ने मजाक में कहा, 'देश के उपप्रधानमंत्री की तू बेटी होकर ऐसी साडी पहनकर निकलती है? भिखारीन जैसा वेश लगता है!' सरदार हंसे। मणिबहन चूप रही। सुशीला नय्यर ने जवाब दिया कि, 'चौबीस घंटे सरदार की देखभाल कर यह पुत्री देश की पुत्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। यह चर्खा चलाती है। आपने खादीभंडार से कपड़े खरीदे हैं। सरदार का पहनावा मणिबहन ने कांता है। सरदार के कपड़ों में से बचे टूकडों से ये अपने वस्त्र बनाती है।'

पंडितजी आज़ाद भारत के राष्ट्रपति के रूप में राजगोपालाचारी को ही आसीन करवाना चाहते थे। पर सरदार का आग्रह राजेन्द्रप्रसाद के लिए था। संघर्ष हुआ था। आखिर में सरदार की बात स्वीकृत हुई। राजेन्द्रबाबू राष्ट्रपति बने। सरदार का निर्वाण हुआ। राजेन्द्रबाबू उनके अग्निसंस्कार में जाना चाहते थे। उनके आग्रह से राष्ट्रपति पद मिला इसलिए नहीं पर वे इनके भीतर को जान चुके थे। दुनिया के अंदर और बाहरी हिस्से में क्या-क्या होता है? एक सूफी शायर का शे'र याद आता है -

बलिदानी हया मेरी मुझे इतना समझ आया,
बदल जाते हैं मौके पर मोहब्बत कौन करता है?

शबरी अनंत कार्य की पहचान है। शबरी होने के लिए नारी बनना जरूरी नहीं है। पुरुष भी शबरी हो सके। मैं इन आदिवासी बहनों-बेटियों को देखता हूं। कल मैं एक जगह गया था। मैं देख रहा था कि ये कितने रंक स्वभाव के हैं! हम एक झोंपडे में गए। लोगों में स्वच्छता है। साहब, घर में और कुछ भी न हो, पांच-दस बर्तन है, थोड़े जीर्ण वस्त्र हो पर आंगन इतना स्वच्छ और सुंदर कि हमें इनका स्वीकार करना ही पड़े।

जब अकबर बादशाह ने फत्तेहपुर सिक्री बसाया तब लाखों रूपयों का खर्च हुआ था। फिर अकबर ने नौ रत्न बुलाए, विद्वान आमंत्रित हुए। सभा हुई। अकबर ने कहा, 'इस सिक्री के द्वार लिखने के लिए एक वाक्य ऐसा दीजिए कि जिस वाक्य द्वारा प्रवेश-निर्गमन में सबको प्रेरणा मिले।' सभी पंडितों ने ऐसे वाक्य के लिए संशोधन

किया। आखिर में सर्वानुमत से एक वाक्य पसंद हुआ। 'संसार सेतु है। इस पर से गुज़र सकते हैं, घर नहीं बना सकते।' यहां हमारा कायमी मुकाम नहीं है। सेतु से गुज़रे तब नदी के भी दर्शन कर सकते हैं। सेतु पर किसी को ठोकर न लग जाय इसका ध्यान रखना चाहिए। जगत के सेतु पर से गुज़रते वक्त हमें आखिरी आदमी तक का ध्यान रखना है। ऐसे समय मानव का विचारक होना ज़रूरी है। उद्धारक होना ज़रूरी है। सब से बड़ी बात कि स्वीकारक होना ज़रूरी है। विचारक घटना अच्छी है, ज़रूरी है। उद्धारक घटना बहुत अच्छी बात है। पर स्वीकृत न हो तो? राम ने अहिल्या का उद्धार किया पर उसकी स्वीकृति का क्या? राम ने वह करके दिखाया। इतने में गौतम का आगमन हुआ। उद्धारक राम ने स्वीकारक तत्त्व भी दे दिया।

न हमें अजानों से मतलब, न नमाज़ों की पाबंदी,

मोहब्बत करनेवालों का खुदा कोई ओर होता है।

समर्पित साधकों को क्या चाहिए? जो स्वीकारक, उद्धारक और विचारक भी हो।

तो बाप, 'मानस-लोहपुरुष।' रामकथा के साथ-साथ समांतर रूप विचारयज्ञ भी चल रहा है। कथा के मूल को पकड़कर मुझे भी कुछ कहना होता है। कल चर्चा कर रहे थे और व्यवस्था की दृष्टि से तीन विभाग किए थे। मैं दो बता चूका हूं। तीसरा कहता हूं। लोहतत्त्व, लोहधातु, लोहपुरुष। तत्त्व के अर्थ में ब्रह्मचर्य, तप और श्रम की चर्चा कल कर चूके हैं। 'अथर्ववेद' का आश्रय लिया था। हमें भीतर से कौन दृढ बनाता है? हमारी समझदारी भरा संयम। अपना वास्तविक तप, अवास्तविक नहीं। हमने कुछ और ही अनुमान लगाया कि तपस्वी ऐसा होना चाहिए।

सूफी बोध कथा है कि एक आदमी किसी को गुरु बनाना चाहता है। खोज में निकल पड़ा। जहां-जहां जाय उसकी परीक्षा जैसा गुरु न मिले। उसने अपने अनुसार गुरु के निश्चित मापदंड बना लिए थे। एक महात्मा के पास गया। वे हंस रहे थे। बच्चों से बातें कर रहे थे। उसे लगा ऐसा खी-खी करनेवाला गुरु कैसे हो सकता है? वह चला गया। सप्ताह बीतने पर दूसरा मिला। वे चौबसी घंटे गंभीर रहते थे। उसे लगा यह स-रस नहीं है इसे गुरु कैसे कहे? सप्ताह के बाद तीसरी जगह गया। एक महात्मा उपवास, भयंकर उपवास करते थे। उपवास खराब चीज नहीं है। 'गीता' में कहा है जो अत्यंत भूखा रहता है वह भीतरी मन को दु:ख पहुंचाता है।

लाओत्सु ने कहा कि इस जगत में प्रत्येक आदमी के पास तीन खजाने है। उस खजाने की आप रखवाली करना। ये जो सूत्र हैं उसमें वृद्धि हो ऐसा करना। आप ही आत्मसत्ता की रखवाली करना। तीन खजानें। एक, प्रेम; दूसरा, किसी भी बात में अतिरेक न करना। तीसरा लोकमंगल के लिए उपयोगी है। आपके सामर्थ्य का बहुत सदुपयोग करना। कभी भी डर मत रखना कि मैं खाली हो जाऊंगा। जितना सदुपयोग होगा उतने ही परिपूर्ण बनोगे।

अपना खजाना प्रेम है। लाओत्सु का कथन है कि प्रेम से अभय बनोगे। मेरी व्यासपीठ हंमेशा ऐसा कहती रही कि सत्य से अभय आयेगा। प्रेम से त्याग आयेगा। मैं तुलना करना नहीं चाहता। मेरा अपना सत्य है। लाओत्सु कहते हैं प्रेम से अभय आयगा। पर कई बार प्रेमी डरता भी है उसे अपने प्रेम की निंदा कोई न कर जाय। उसे लोकनिंदा से नहीं डरना है। पर लोग गलत अर्थ निकालकर शाश्वत सत्य को विकृत करने का बुद्धिपूर्वक प्रयत्न करेंगे। प्रेम अभय देता ही है। गंगासती क्यों ऐसा कहे?

भक्ति रे करवी एणे रांक थईने रहेवुं.

यहां यह डर नहीं है। यहां प्रेम को हमेशा ऐसा लगे कि मैंने कृष्ण की उपासना की है। मेरा कृष्ण बदनाम न हो इसलिए वह डरता है। भक्त संकोचशील होता है। साहब, गोपी श्रुतिरूपा, ऋषिरूपा और ऋचारूपा है। 'रामायण' की चौपाईयां गोपी बनकर आई है। आप कहेंगे चौपाईयां तो बाद में आई। ये बाद में लिखित रूप में आई। शंकर के मानस में चौपाईयां तो अनादिकाल से पड़ी थी। नटराज चौपाईयों को नचाना चाहते थे। पर कोई स्टेज नहीं मिल रहा था। पार्वती की पात्रता देखने से पूर्व चौपाईयां परेशान थी कि हमें नाचना है! शंकर ने कुछेक चौपाईयों को कहा कि तुम गोपी हो जाओ। कितनी ही चौपाईयां गोपियां बनकर आई है। फिर वे किसी पुरुष के मुख से हो

तो उस पुरुष की जिह्वा पर गोपी नर्तन करती थी। गोपीभाव के लिए नारी शरीर अनिवार्य नहीं है। मुझे 'मानस' की कितनी ही चौपाईयां गोपीभाव में डूबी हुई मिली है। यह पंक्ति देखिए -

मम गुन गावत पुलक सरीरा।

गदगद गिरा नयन बह नीरा।।

गोपी में काम कहां है? मेरा तुलसी चौपाईयों को गोपी बनाकर ले आया।

काम आदि दंभ न जाकें।

तात निरंतर बस मैं ताकें।।

रास में गई हुई गोपियों को मद चढ़ा है। मेरी चौपाईरूपी गोपियां वहां रास में नहीं थी। वे अपना घर संभालकर बैठी थी। 'तुझे पाने के लिए तेरे पास आना ज़रूरी नहीं है। तू मेरे भीतर बैठा है।' शुकदेवजी बोले हैं कि रास में गई हुई गोपियों को मद आया है। मैं जिम्मेदारीपूर्वक कह सकूं, कृष्ण वहां से अदृश्य हो गया। वह कहां गया था? जिस घर में बैठी गोपियां बार-बार रो रही थी वहां जाकर खडा था। इस अर्थ में हैं कि 'भक्ति करवी एणे रांक थईने रहेवुं।'

तो, लाओत्सु कहते हैं प्रेम का फल अभय है। मेरी व्यासपीठ ने हमेशा ऐसा कहा है कि प्रेम का परिणाम त्याग है। सही बात है कि प्रेम अभय देता है। पर हम जिस दृष्टि से भक्ति को देखते हैं उसमें तो प्रेम करनेवाले को ऐसा लगता है, मैं जिसे भजता हूं उसे 'कहीं दाग न लग जाए।' अंत में तो लाओत्सु कहता है यूं प्रेम का फल अभय है तो फिर त्याग करने पर अभय आता ही है। घर में कुछ न हो उसे कौन लूट सकता है?

तो बाप, लाओत्सु कहते हैं कि जीवन का पहला खजाना प्रेम है। उसकी रखवाली करना। दूसरा खजाना, अतिरेक मत करो। इस पर से हमने सोचा अति उपवास। वह गुरु खोजने निकला है। चौथा गुरु अति प्रेम से खा रहा था। कितने गुरु देखे पर कहीं भी मन न लगा। फिर उसने एक के बारे में सुना तो लगा कि अब उसे पकड़ लूं। महापुरुष बैठे थे। कहा, 'बापू, आपको सब मानते हैं। तो सोचा कि यहां रह पडूं।' पर उन्होंने कहा कि पर मैं तुझे रखना नहीं चाहता। तू किसे खोजता है? तो कहे, मैं परमैगुरु को खोजने निकला हूं। गुरु ने कहा, मैं परम शिष्य को खोजने निकला हूं। परमगुरु तो अनेक है। प्रश्न है हमारे भीतर रहे परम शिष्यत्व को खोजना।

तो, अतिरेक नहीं होना चाहिए। यह लाओत्सु का दूसरा खजाना है। मैं तो यहां तक कहूं कि आप बहुत भजन करते हो और आपके लड़के आकर कहे कि, 'गांव में सर्कस आया है, हमें ले चलिए।' तो, लड़कों के साथ जाइए। इसे भजन का ही भाग समझिए। आप बहुत प्रेक्टिकल रहिए। माला तोड़नी नहीं है। धीरे-धीरे सूक्ष्म करनी है। भजन माने क्या? इन सभी विभागों को भजन का भाग समझिए। उसका अनुसंधान न छूटे इस ढंग से पानी पीओ तो वह भजन है। जीवन के प्रत्येक दायित्व का निर्वाह कीजिए। सभी कर्तव्य को भजन का हिस्सा बनाइए। आपकी नौकरी को भजन का भाग बनाइए। अनुसंधान बनाए रखिए। इसे ही अभ्यास कहते हैं। और ऐसे अनुसंधान बना रहता है। बहुत कठिन नहीं है। आप रटते रहिए, रटते रहिए। फिर किसी से बातें करते हो तो भी तुम्हारा भीतर जपता रहता है। बस में भीड़ के कारण दोनों हाथ से छड पकड़नी होती है तब हाथ से माला न फेरो तो भी चले। जीवन की प्रत्येक घटना भजन का भाग है। ऐसा कर सकते हैं। साधुओं के ऐसे अनुभव है। कठिन नहीं है। थोड़े अनुभव की जरूरत है। सच्चा, बुद्धपुरुष स्वयं को परमगुरु होने की घोषणा नहीं करता। पर कहता है कि मैं परमशिष्य की खोज में हूं।

तो, जीवन में अति नहीं। युक्त आहार-विहार होना चाहिए। 'भगवद्गीता' ने कहा है, खाते-खाते एक पड़ाव ऐसा आता है जब भीतर से कोई कहे, छोड़ दो और छोड़ दो तो तुम्हारी स्फूर्ति बनी रहेगी, यह युक्ताहार है। सब छोड़ने की बात नहीं है। दो कौर छोड़ दे तो भी उपवास है। पर ठूंस-ठूंस कर खाए तो वह भोग है।

लाओत्सु कहते हैं अति न हो यह साधक का खजाना है। कितना बड़ा प्रेक्टिकल सूत्र है! मैं जिम्मेदारी से कहता हूं, भजन का भी अतिरेक नहीं होना चाहिए। घर में कोई आवश्यक काम आ जाने से पूजा न हो सके तो उसकी पीड़ा नहीं होनी चाहिए। आपके परिवार और समाज के प्रति रहा हुआ आपका दायित्व उसका प्रमाणिक निर्वाह भी भजन का ही एक भाग है।

तीसरा अपना सामर्थ्य सच्चा है, यदि अपना भीतर परहित हेतु लूटाने को कहे तो कभी भी डर नहीं रखना है कि मैं खाली हो जाऊंगा। जितना देंगे उतना पायेंगे। लाओत्सु ने ये तीन खजाने फलसहित बताए है। काफ़ी अच्छी बाते हैं।

तो बाप, लोहतत्त्व। समझदारी पूर्वक संयम। कोई कितने ही कटुवाक्य कहे तो सहन करना है। किसी के प्रति कटु भाव न जगे यों अंत:करण पवित्र रखना यह तपस्या है। तप और श्रम कीजिए। गांधीजी ने सबको श्रम करना सीखाया। श्रमिक वर्ग बनाया। मैं ऐसा कहूं तो कोई पूछे, 'आप ऐसा कुछ करते हैं?' यह कथा बड़ा श्रम है। आपके सामने चार-चार घंटे केवल आत्मानंद, इसमें से कोई कुछ ग्रहण कर सके किसी में दीया जल उठे, ऐसा श्रद्धापूर्वक बोलना यह एक बड़ा श्रम है। यद्यपि यह विश्राम है।

यह हमारे भीतरी लोहतत्त्व को अखंड रख सकता है। निश्चयात्मक बुद्धि को बराबर पक्व करता है। कल इस लोहतत्त्व की चर्चा की। तांबा सत्त्वगुणी, सोना रजोगुणी और लोहा तमोगुणी धातु है। परंतु पारस के स्पर्श से लोहा सोना होता है। लोहपुरुष के तीन लक्षण है। आज मैंने 'विनयपत्रिका' के आधार पर ऐसा कहा कि तुलसीदासजी लक्ष्मण को भी वल्लभ कहते हैं तो, लक्ष्मण के साथ वल्लभ तत्त्व को जोड़ा है अर्थात् 'वल्लभ' शब्द का प्रयोग किया है। अत: मुझे कहने की इच्छा होती है कि लक्ष्मण में जो लोहतत्त्व है वह सरदार में हम किस तरह देख सकते हैं? मेरी व्यासपीठ जिम्मेदारी से कहती है कि लक्ष्मणजी के जो तीन कार्य है वही मुझे इस लोहपुरुष में दिखते हैं। लक्ष्मण माने कौन-सा तत्त्व?

एक, निरंतर जगना। एक विशेष प्रकार की जागृति के अर्थ में लक्ष्मण को जाग्रत पुरुष मानते हैं। उसे हम 'जति' कहते हैं। जति माने यति। यति माने वीतरागी। लक्ष्मण जति। लक्ष्मणजी ऊर्मिला के वल्लभ है।

लक्ष्मणजी के तीन सूत्र। जाग्रत रहना माने एक वैचारिक जागरण। एक सावधानी, अवरनेस। जिसके भजन पक्व हो गए हैं वह सो नहीं पाता है, बाप। निंदा और निद्रा जिसे विक्षिप्त न कर सके वह जाग्रत है, लोहपुरुष है। अमुक प्रसंगों में बापू की निंदा हुई इससे ज्यादा इस आदमी (सरदार) की निंदा ज्यादा हुई है। पंडित नहेरु और सरदार पटेल के मतभेद थे। पंडित नहेरु ने बापू से कहा, मुझे ऐसा लगता है हम दोनों की वैचरिक एकता संभव नहीं है। मुझे लगता है मैं त्यागपत्र दे दूं। गांधीजी ने इस बारे में सरदार से पूछा। सरदार ने

कहा, 'बापू, त्यागपत्र की घडी आने पर पहला त्यागपत्र मैं दूंगा।' कहीं द्वेष नहीं है। साहब, क्या यह साधुता नहीं है? लक्ष्मणजी जगते रहे उसी तरह यह सपूत राष्ट्र के लिए जगता रहा। जब तक जगता रहा तब तक राष्ट्र का अकल्याण नहीं होने दिया।

लक्ष्मणजी के जीवन का एक दूसरा स्पष्ट दिखता लक्षण नई-नई रेखाएं निर्मित करने का है। उन्हों ने माँ जानकी के लिए लक्ष्मण रेखा खींची। समाज कल्याण में आवश्यकता पड़ने पर नई-नई रेखाएं अंकित करने में लक्ष्मणजी का दृढनिश्चय रहा है। सरदार पटेल साहब ने भी आवश्यकता पड़ने पर नई-नई रेखाएं अंकित की। इसका ज्वलंत दृष्टांत आज हम जहां बैठे हैं वह बारडोली का सत्याग्रह। कितकितनी नई रेखाएं अंकित की है! सभी अंग्रेज जमीन जप्त करते है। तब सरदार ने एक नई रेखा अंकित की। नया आश्वासन दिया कि, 'वे जप्त करते हैं तो क्या वे ब्रिटन ले जायेंगे? बोने के समय पर बोइयेगा।' यह नई रेखा थी। यह लक्ष्मणकर्म है कि समाज को जब-जब आवश्यकता पड़े तब-तब नई रेखाएं अंकित करनी है। उसमें खुद के भी हो उनके लिए भी अंकित करनी है। जब देश की रखवाली करनी हो गृहविभाग द्वारा, तब सरदार ने देश हित के लिए, इस सत्य को कोई चुरा न ले इसलिए, किसी रावण का हाथ इसमें न आए इसलिए कितनी नई रेखाएं निर्मित की! सरदार पटेल के जीवन से नई रेखा के प्रसंगों का चयन किया जा सकता है।

लोहपुरुष का तीसरा तत्त्व है यश राम को दिलाना, खुद को अपयश लेना। जनकपुर में जयजयकार राम का होता था। लक्ष्मण 'जय' बोले तो समस्त जनकपुर कहता था अब इस बालक को ना कहिए! उसे तो अपयश मिलता था, राघव का जयजयकार होता था। कभी-कभी किसी की बदनामी पर ही अपना जयजयकार होता है। इस आदमी (सरदार) की कुरबानी से भारतमाता की जय और बदनामी इन्होंने सहन की।

इस अर्थ में सरदार में लक्ष्मणजी जैसे लक्षण होने के कारण 'वल्लभ' शब्द जोड़ता हूं। तुलसी ने श्रुतकीर्ति के पति शत्रुघ्न को 'वल्लभ' कहा। यह मौन रहे और तू तडाक भी कर दे! सरदार में ऐसा वल्लभ 'रामायण' के आधार पर व्यासपीठ को दिख रहा है। 'मानस-लोहपुरुष' केन्द्रीय विचार की रामकथा को विराम की ओर लेता हूं। 'गीताजयंती' के पूर्व मध्याह्न पर आप सबको 'भगवद्गीता' जयंती निमित्त बधाई हो।

आप बहुत भजन करते हैं। गांव में सरकस आया हो और लड़कें आप से सरकस दिखाने का आग्रह करे तो उसे भजन का भाग समझकर ले जाइयेगा। आप बहुत प्रेक्टिकल रहिए। भजन मानी क्या? जीवन के प्रत्येक दायित्व को निभाना। सभी कर्तव्य भजन का ही भाग है। आपकी नौकरी को भजन का भाग बनाइए। अनुसंधान बना रहे। ऐसा बन जाता है। यह बहुत कठिन नहीं है। आप रटते रहिए, रटते रहिए, फिर आपका भीतर जपता ही रहेगा, भले ही आप किसी के साथ बातें करते हो। ऐसा हो सकता है। साधुओं के ऐसे अनुभव हैं।

मानस-लोहपुरुष
॥ ७ ॥

सरदार पटेल शंकर की तरह नीलकंठ और अकिंचन थे

आप सब को 'गीताजयंती' की बहुत-बहुत बधाई। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम कर, उनके मुख से निकली परमवाणी जो कालांतर में ग्रंथस्थ हुई ऐसे वैश्विक सद्ग्रंथ को प्रणाम कर, 'मानस-लोहपुरुष' जो कथा का केन्द्रीय विचार है, जिसकी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवाद के रूप में कर रहे हैं उसमें प्रवेश करें। आज के सरल स्वभाव के अतिथि आदरणीय आरिफ़ मोहम्मद खानसाहब, मुझे इनकी सरलता और विद्वता का अनुभव है। इन्हें 'भगवद्गीता' के कितने ही श्लोक याद है! आज उन्होंने थोडी कृपणता जताई। यह भी एक उदारता है -

ये अलग बात है कि खामौश खड़े रहते हैं।

जो लोग बड़े हैं वो हंमेशा बड़े रहते हैं।

खानसाहब, आपको प्रणाम।

बहुत अज़ीब है ये बंदीशें मुहब्बत की फ़राज़,

ना उसने कैद में रखा, ना हम फरार हुये।

जब सरदारसाहब और गांधीबापू करांची कोंग्रेस सम्मेलन में जाने को निकले तब नरसिंहराव दिवेटीयाजी ने एक श्लोक भेजा 'यत्र योगेश्वरः गांधी यत्र वल्लभश्च धनुर्धरः।' 'गीताजयंती' के अवसर पर यह प्रासंगिक हैं, इसलिए कहता हूं। जहां गांधीजी जैसा योगेश्वर है और सरदार जैसा धनुर्धर है वहां विजय स्वाभाविक है। 'गीताजयंती' का दिन है। इन दो महापुरुषों को केन्द्र में रखकर बात हो रही है। प्रेमयज्ञ के

साथ-साथ एक विचारयज्ञ समांतर चल रहा है। योगेश्वर कहां होते हैं? योगेश्वर के कौन से गुण आत्मसात् करे तो कृष्ण का निकट से अनुभव कर सके? मैं विजय और विभूति छोड़ देता हूं, क्योंकि इसमें मेरी रुचि नहीं है। विजय मिलने के बाद भी क्या? पांडवों का विजय तो हुआ अवश्य, पर इसके बाद क्या? कवि काग कहते हैं -

सिंहासने चडवा गया त्यां पग हेठ हिमालय हतो।

शांति कहां थी? मुझे 'विजय' शब्द नापसंद है। अत: मैंने 'भगवान की जय हो' के बदले 'रामचंद्र भगवान प्रिय हो' ऐसा किया है। क्योंकि किसी की जय किसी के पराजय पर अवलंबित होती है। वहीं से द्वैत शुरू होता है। फिर से राग-द्वेष के नये अंकुर फूटते हैं। मैं तो इतने में संतोष लेता हूं कि योगेश्वर हमारे पास ही होते हैं। कौन-सा योग करने से कृष्ण का हमें अनुभव हो? मैं दो योग ही कहता हूं। 'गीता' ने कई योग की बात कही है। 'समत्वं योगमुच्यते।' और 'योग: कर्मषु कौशलम्।'

यदि हम में समता हो; गांधीजी में थी, सरदार में भी थी। बाप, हम भगवान श्रीकृष्ण और गांधी में से एक समता सीख ले। इस देश का आदमी समता सीख जाय। मेरा दृढ मानना है कि उपनिषद सत् पर खड़े हैं; 'भगवद्गीता' सम पर खड़ी है; 'रामचरित मानस' सब पर खड़ा है।

आपको 'गीता' में सम मिलता ही रहता है। हम प्रामाणिक होकर सम पर खड़े रहे। व्यवस्था अलग वस्तु है। विषमता न आनी चाहिए। मैंने अनेकबार कहा है मुझे बोलना है, अत: मैं यहां बैठा हूं। इसका अर्थ मैं महान हूं अत: मैं यहां बैठा हूं ऐसा नहीं है। यह व्यवस्था का एक भाग है। आप नीचे बैठे हैं तो आप महान नहीं है ऐसा नहीं है। यह एक व्यवस्था है, विषमता नहीं। होनी भी नहीं चाहिए। राष्ट्र में या धर्म में कहीं भी विषमता नहीं होनी चाहिए। हम जीव है। यदि समता आए तो योगेश्वर का अनुभव हो।

दूसरा, 'योग: कर्मषु कौशलम्।' हम जिस कार्यक्षेत्र में होते हैं उस कार्य के कुशलता से, प्रामाणिकता से, अपने हेतु कम करके परहित हेतु कर बताना यही योग है। एक किसान कुशलता से खेती करता है वह योग है। आज सुबह के अखबार में एक बड़ा लेख था। उसमें घटित घटना हो या कुछ भी हो पर है बहुत अच्छा! मुझे पसंद आई। उसमें लिखा है एक शिक्षक अपने आचार्य को फोन करता है, मुझे नौ दिन की छुट्टी चाहिए क्योंकि मुझे बापू की कथा में जाना है। आचार्य ने पूछा, 'कहां से बोल रहा हैं?' जवाब मिला, 'मैं स्कूल के दरवाजे से बोल रहा हूं।' कहा, 'तू छुट्टी लेकर बापू की कथा में जा तो कितने लड़कों का अभ्यास बिगडेगा? क्या बापू ऐसी सीख देते हैं तुम अपना कर्मक्षेत्र छोड़ दो।' शिक्षक ने कहा, 'आपने होश दिलवाया। मैं कथा में नहीं जाऊंगा।'

मुझे यह बात अच्छी लगी। घटित हुई हो तो स्वागत योग्य है। मैंने कभी भी किसीको कर्मक्षेत्र छोड़ने के लिए नहीं कहा है। मैं अपने कर्मक्षेत्र में इन्वोल्व हूं। मैं दूसरों को कैसे कहूं कि कर्मक्षेत्र छोड़ो। मैं खुश हुआ। पर इस बात से मैं संपूर्ण सहमत नहीं हूं। मैं बावा हूं। रूखड़ बावा! यह बात अच्छी लगी। फिर भी इतना तो कहूंगा ही कि फर्ज़ में चूक न आए, सब संभल जाय तो शायद दो-तीन छुट्टी लेकर आ सके तो ओफिस भी उजली हो जाए। 'भगवद्कथा' सुनकर ओफिस के कर्मचारी जब उनके सामने प्रलोभन आए तब इतना ही बोले, 'प्रलोभन में फंसे पर सफेद दाढ़ी याद आती है!' मेरे पास इसके प्रमाण है। विद्यार्थीयों को मेरी कथा सुनने के लिए अपनी स्कूल नहीं छोड़नी चाहिए। शायद अनुकूलता मिले और आ जाइए तो मैं भी मास्टर हूं। कार्यक्षेत्र में कुशल रहिए। नरसिंह महेता ने कहा -

आपणे आपणा धर्म संभाळवा

कर्मनो मर्म लेवो विचारी ...

हमें योगेश्वर का अनुभव होगा। मोहन के दो लक्षण, कार्यकुशलता और समता ग्रहण करे। यह धनुर्धर (सरदार) ने लिए। उपर से जो भी कहा जाय, राष्ट्र के हित में कडक निर्णय लेने पड़े पर समत्व बना रहता है। गांधीबापू ने ३० जनवरी को निर्वाण प्राप्त किया उससे एक घंटे पूर्व सरदार उनसे बातें कर रहे थे। बापू ने बीच में दो-तीन बार कहा, 'सरदार हम पूरा करे। प्रार्थना का समय हो रहा है।' सरदार लिखते हैं, मैं बापू से मिलकर घर पहुंचा कि खबर मिली किसी ने बापू को तीन गोलियां मार दी है! बापू गिर पड़े! मैं दौड़ता पहुंचा कि सब समाप्त हो गया था। पंडित नहेरू ने आकाशवाणी पर से बापू को श्रद्धांजलि दी वह वक्तव्य और फिर सरदार साहब हिंदी में बोले उसमें उनकी समता रही हुई है। कर्म कौशल्य का स्वर है। उन्हों ने दर्द भरे स्वर में वक्तव्य दिया कि 'आज का दिन भारत के लिए बड़े दु:ख का, शोक का दिन है।' यह तो ठीक पर उन्होंने एक शब्दप्रयोग किया कि 'आज का दिन हम सबके लिए शर्म का दिन है।' शर्म का दिन है आज। छोटा सुंदर वक्तव्य है। इसमें मेरी व्यासपीठ को समता और कर्मकौशल्य का स्वर सुनाई देता है।

'रामचरित मानस' के सभी पात्र अपने-अपने कर्मक्षेत्र का प्रामाणिक रूप से निर्वहण करते हैं। हम कर्मकौशल चूक जाते हैं। फिर अपने स्वार्थ में परमात्मा को दोष देते हैं। मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने गाय खरीदने को कहा ताकि फजलु को दूध की तकलीफ न रहे। पत्नी ने दबाव डाला। मुल्ला को मानना पड़ा और गाय खरीद ली। दलील भी की थी कि आपने बाडे में कम जगह के कारण मुश्किल से गधा बंधा जाता है। पत्नी ने कहा, कोई बात नहीं, हो जायगा। गधे के साथ गाय बांध दी। गधे को जगह संकीर्ण लगने लगी। मुल्ला का गध के प्रति प्रेम जगजाहिर था। अल्लाह को प्रार्थना करता है कि ऐसा करो कि गाय मर जाय। साहब, प्रार्थना सुन ली गई। परिणाम यह आया कि गाय के बदले गधा मर गया! मुल्ला को भगवान पर खीज़ लगी कि, 'गाय और गधे का फर्क नहीं जानता?'

कर्मक्षेत्र में कुशल हो वो ईश्वर को ऐसी शिकायत न करे। वह निर्णय को कबूल रखे। मैं और आप बातें करते हैं। यह उपदेश नहीं है। गांधी की समता माने क्या? गांधीजी भी अपने परिवार के साथ अत्यंत सख्त थे। परिवार का कोई भी आश्रम में रहे तो उसके खाने का बील उसे दिया जाता ताकि वह बील भर दे। वे कहते थे यह मेरा आश्रम नहीं है, समाज का आश्रम है। ऐसी समता सरदार में आई। साहब, मुकदमा लडते वक्त, पत्नी का अवसान हुआ। ऐसी खबर के तार को जेब में डाल दिया। यही समता और कार्यकुशलता है। उनके कार्यकुशलता वर्णित करने में शब्द कम पड़ते हैं।

हम अभ्यास करते-करते समता और कार्यकुशलता प्राप्त करे तो योगेश्वर का अनुभव हो सके। धनुर्धर भी जरूरी है। जहां पार्थ हो वहां सबकुछ होता है। मैं अर्जुनत्व लाने के लिए दो ही वस्तु कहूंगा। 'महाभारत' में उसका बहुत उपयोग हुआ। अर्जुन के हाथ और अर्जुन की आंख। जिसके पास ये दो वस्तु मजबूत हो वह योगेश्वर का अनुभव कर सके। अर्जुन के हाथ माने पंख और आंख, ये दोनों मजबूत है। 'रामायण' का संपाति ऐसा कहता है मेरे पंख जल गए हैं। पर आंखें ठीक है। अर्जुन के पंख और आंख सलामत रहे। इस

आदमी (सरदार) की भी आंख और पांख सलामत रही। शारीरिक छोड़िए, भीतर से सलामत। ऐसा एक लोहतत्त्व। उसके हाथ बहुत मजबूत है।

बाप, हो सके इतनी समता रखे। अपने कार्यक्षेत्र में कुशल बने। विनोबाजी कहते थे कि कुम्हार के बेटे को मिट्टी का कार्य दीजिए तो वह जल्दी कर देगा। उसके जिन्स में यह कौशल्य पड़ा है। कर्म कौशल्य। और अपने हाथ। मैंने पहले भी हाथ का महत्त्व बताया है। 'अयं मे हस्तो भगवान।' दोनों हाथ भगवान है। ऋषि कहते हैं, समग्र विश्व की बीमारियों की औषधि मेरे हाथ है। अर्जुन और सरदार के हाथ ऐसे थे। प्रश्न है कि ऐसे हाथ कैसे बने? खींच-खींचकर लंबे हो? अपने हाथ कैसे स्वच्छ हो सके? आज ये हाथ कहां स्वच्छ है? आज देश के हाथ काफी गंदे हो गए हैं! साहब, आज देश को एक करने के लिए सरदार के हाथ काम में आयेंगे। इस मानव ने समन्वय किया।

तुलसीदासजी ने 'विनयपत्रिका' में 'ब्रह्म-कुल-वल्लभं', 'वल्लभ' शब्दप्रयोग किया तब कहा कि 'वल्लभ गिरिजाको।' शंकर वल्लभकुल का वल्लभ, गिरिजा का वल्लभ। इस वल्लभ को (सरदार पटेल को) जब हम वल्लभ कहते हैं तब इसमें वही गिरिजा का वल्लभ है। उसके कुछेक लक्षण दिखाई देते हैं। गिरिजा के वल्लभ के पास तीसरी आंख थी। इसके पास भी थी। गिरिजा का वल्लभ ज़हर पी गया। इसने भी कितने ज़हर पीये? गुणवंतभाई कहते हैं वल्लभभाई आशुतोष नहीं थे पर नीलकंठ थे। शंकर का दूसरा लक्षण-नीलकंठ का है। कितने ज़हर पी लिए!

आपको भी लगता होगा यह (सरदार) शंकर की तरह ही अकिंचन होगा। मेरा तुलसी लिखता है शंकर के लक्षण गाते समय -

अगुन अमान मातु पितु हीना।

उदासीन सब संसय छीना।।

भगवान महादेव का अकिंचनपन भी सरदार में दिखता है। बाप, भीतर से हाथ मजबूत और स्वच्छ थे। इनके पंख मजबूत थे और आंखें दूरदर्शी थी। इन महापुरुषों के पास सूक्ष्मदृष्टि थी।

बाप, तुलसीदासजी ने 'दोहावलि' में नाम को भी वल्लभ कहा है। हरि का नाम भी वल्लभ है। उसका प्रहार खाली न जाय। इस मानव का (गांधीबापू) का रामनाम खाली न गया। हरिनाम भी लोहतत्त्व से भरा है। जिसके प्रति भाव जगे उसका नाम लो। कोई भी नाम वल्लभ है। नाम की महिमा अद्‌भुत है। हमें तो उड़उड़कर वहीं जाना है।

तो, गिरिजा का वल्लभ शंकर; और वहां 'वल्लभ' शब्द आया। मैं सोचने लगा इसमें कितने महादेव दिखाई देते हैं! इसके दो-तीन दृष्टांत है। शंकर का तीसरा नेत्र होता है। यों इनके पास भी तीसरा नेत्र है। उन्होंने तीन जगह यह नेत्र पूरी तरह से खोला। तीसरे नेत्र का प्रभाव पड़ा। किसी को झुकाने के लिए नहीं पर राष्ट्र की एकता में आहुति देने के लए। ये त्रिलोचनी है, नीलकंठ है। उसने कितने ही अपमान सहे हैं। खुद अकिंचन है। शंकर के मंदिर निर्मित होते हैं, पर उसका मंदिर कहां है? गंधर्वराज कहते हैं -

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचा: सहचरा -

श्चिताभस्मालेप: स्रगपि नृकरोटीपरिकर:।

हे युवकों, अंग्रेजी बोलना। कोई अंग्रेजी बोले तो मुझे अच्छा लगता है पर गुजराती-हिन्दी-संस्कृत को छोड़कर नहीं। अपनी मातृभाषा का जतन कीजिए। थोड़ा

संस्कृत याद रख कंठस्थ कीजिए। संस्कृत में कितनी सुंदर गेयता और रमणीयता है! शंकराचार्य के स्तोत्र देखिए। मैं साहित्यजगत को निमंत्रित करता हूं कि साहित्य की कसौटी से तो शंकर को परखिए! लोह को सुवर्ण बना दे ऐसी कविता है! माँ की मार्केटवेल्यू आंकी नहीं जाती, नगरवधू की आंकी जाती है। संस्कृत तो माँ है। शरफसाहब कहते हैं -

मोहब्बत का कानों में रस घोलते हैं।

ये ऊर्दू जूबां है, जो हम बोलते हैं।

यह मानव (सरदार) संस्कृत का पाठ करता था। 'गीता' का पाठ करता था। मेरा मानना है सविता ऊपर और सरिता धरती पर बहती है पर सविता और सरिता को जोड़ने का काम करे वह कविता है।

गिरिजावल्लभ महादेव का कोई घर नहीं। स्मशान में क्रीडा करे। स्मशान किसी की व्यक्तिगत मालिकी का नहीं होता। उसी तरह वल्लभ का कोई घर नहीं। मणिबहन का एक घर, डाह्याभाई का फ्लेट, परंतु इनका कुछ भी नहीं! इसीलिए गिरिजा के वल्लभ के साथ तुलना करता हूं। मेरे शब्द इतने सस्ते नहीं है कि चाहे उधर जोड़ दूं। गिरिजा के वल्लभ शंकर और इस वल्लभ की तुलना नहीं करता। उसमें से कुछेक तत्त्वों का साम्य देखा तो अंगुलिनिर्देश करता हूं। शिव के कई लक्षण दिखाई देते हैं। हम जीव है तो शिव के अमुक लक्षण तो उतरे न। शिव का दातारूप हम में आए न। जीव शिव के कुछेक लक्षण रखता है। कुछेक कारणों को लेकर अपने हाथ खराब हुए, आंख खराब हुई अत: या तो हम प्रेत हुए या भूत हुए। पता नहीं क्या हुए?

तो, सरदार साहब में भगवान शंकर के कई लक्षण दिखाई देते हैं। उनके पंख, आंख, हाथ मजबूत है। प्रश्न वह है कि आंख बराबर रखने के लिए क्या करना चाहिए? तुलसी कहते हैं -

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।

नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन।।

तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन।

बरनऊं राम चरित भव मोचन।।

गंगासती माँ के पति कहलसंगबापू के कुछेक भजन, उसकी एक पंक्ति याद आती है, 'अमे तो काचा, मारा सद्गुरु साचा।' कोई बुद्धपुरुष कोई जाग्रत पुरुष जो शंकर के अंश लेकर आया है उसका एकाद सूत्र यदि पकड़ में आ जाय तो आंख मजबूत और दिव्य बने।

तो बाप, 'मानस-लोहपुरुष', यह तुलसी के शब्दों में से खोज-खोजकर मैं आपके साथ बातें कर रहा हूं। यहां कोई उपदेश नहीं है। आदेश नहीं है। बिनतीरूप में संदेश जरूरी है। थोड़ा कथा क्रम लें। रामजन्म के बाद अन्य माताओं ने भी पुत्रजन्म दिया है। चारों पुत्रों के नामकरण करने के लिए वशिष्ठजी बुलाए गए। कौशल्यानंदन का नामकरण करने के लिए वशिष्ठजी सुंदर बोले हैं, जो आनंद सिंधु है, सुख की खदान है, जिनके नाम लेने से लोगों को विश्राम, विराम और आराम का अनुभग होगा। ऐसे कौशल्यानंदन का नाम 'राम' रखने के लिए प्रेरित होता हूं। सूत्र रूप में कहे तो जो विश्राम दे वह राम। आराम दे वह राम। विराम दे वह राम। किसी भी चीज से आपको आराम मिले वह राम है। राम संकीर्ण नहीं मानना। उसकी बुनावट बहुत ही चौड़ी है। घर में कोई बीमार होने पर पूछिए कि, 'भाई, कैसे हो?' कहे कि, 'अब उसे आराम है।' 'कैसे हुआ?' 'वह दवा ली इसीसे।' तो, दवा राम है। राम माने जो महामंत्र गिनते हैं वह तो है ही। पर जो वस्तु मुझे और आपको आराम दे वे तमाम तत्त्व राम है। एक मित्र आपके साथ दु:ख में खड़ा रहे और आपको आराम का अनुभव कराए तो उस दिन वह मित्र आपके लिए राम है। राम को संकीर्ण न बनाए। राम विशाल है। क्यों हम बिना वजह घर्णण खड़े करते है हरि के नाम पर? जो तत्त्व आराम दे वह राम है। फिर वशिष्ठजी ने कहा, समग्र विश्व का लालन-पालन करेगा। सबको देगा, किसी का शोषण नहीं करेगा। इसका नाम मैं 'भरत' रखता हूं। इस जगत को त्याग और प्रेम से भर सकते हैं। भरत त्याग और प्रेम का साक्षात् विग्रह है। फिर कहा, राजन्! जिसके नाम स्मरण से, आचरण करने से शत्रु का नहीं, शत्रुता का नाश होगा। अत: मैं इसे 'शत्रुघ्न' कहता हूं। शत्रु का नाश करने से शत्रुता का नाश नहीं होता। शत्रुता का नाश होना चाहिए। 'रामचरित मानस' में शत्रुघ्न मौनव्रती है। जो समयोचित बोलता है। सम्यक् कहता है। उसे कोई दुश्मन नहीं है। समस्त सद्गुणों के भंडार, राम के प्रेमपात्र राम के अनुगामी, समग्र जगत के आधार, शेषावतार और उदार, मैं इसका नाम 'लक्ष्मण' रखता हूं।

मेरी व्यासपीठ ने हमेशा कहा है यह चारों भाईयों के नाम तो है ही पर साधक के साधना में उपयोगी हो ऐसे सूत्र है। राममंत्र का जप करते हो तो तीनों भाईयों के नाम और लक्षणों का आचरण करे। रामनाम जपनेवाला कभी भी शोषण नहीं करता है। भरत की तरह सभी का पोषण करता है। रामनाम जपनेवाले के चाहे जितने भी दुश्मन हो उसके प्रति कभी दुश्मनी न रखे। उसीका राममंत्र सफल होगा। रामनाम जपनेवालो को सभी का आधार होना है। अन्नक्षेत्र न खोल सके पर परोसने की सेवा दे सकते हैं। बड़ा अस्पताल न बना सके पर कभी-कभी दर्दी को १५-२० रूपये की दवाई दे सके। बड़े विद्यालय का निर्माण न कर सके पर कभी-कभी तेजस्वी छात्रों की फी भर दे। आज जितना कवर हो सके उतना तो कर ले। वशिष्ठजी ने कहा, 'राजन्, ये आपके पुत्र वेदों के सूत्र हैं।' मुझे आगे कहना है, ये जगत के नेत्र हैं। इनकी आंखों से जगत देखना है। ये अपने नेत्र हैं। ये चारों अपने मित्र हैं। राम क्या नहीं है?

फिर राम यज्ञोपवित संस्कार धारण कर गुरु के आश्रम में विद्याप्राप्त करने गए। अल्पकाल में विद्याप्राप्त की। जिनके श्वासोच्छवास में भगवती बैठी हो उन्हें क्या पढ़ना? पर बच्चों को पढ़ने का संदेश दिया। मैं प्रसन्न होता हूं आदिवासी विस्तार के बच्चे पढ़ते हैं। पढाइए। राम ने अल्पकाल में विद्या प्राप्त की। विद्या का सदुपयोग हो रहा है। उपनिषद में से सीखे। 'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव।' वे अपने जीवन में उतारते हैं। सुबह उठकर माता-पिता, गुरुदेव को प्रणाम करते हैं। मैं युवा भाई-बहनों को बिनती करता हूं घर के ज्येष्ठजनों को हररोज प्रणाम कीजिए। यह व्यर्थ नहीं है। सुबह स्कूल-कोलेज जाईए, काम पर जाईए, माता-पिता को झुक कर जाइए। फिर रात को प्रणाम कीजिए। श्रुतिकार कहते हैं, 'आयुर्विद्यायशोबलम्।' जो अभिवादन करे उसकी चार वस्तु में वृद्धि होती है। उसकी आयु बढ़ेगी। आयु बढ़े या कम हो, परंतु ज्येष्ठ जनों के आशीर्वाद से जो वृद्धि प्राप्त आयुष्य हो उसमें आनंद वर्षा होती है। विद्या, यश, कीर्ति में वृद्धि होती है। पर ध्यान रखिए यश और कीर्ति विद्या द्वारा मिले तब परस्पर ईर्ष्या मत कीजिए। शारीरिक और आत्मिक बल में वृद्धि होगी।

चारों भाई बड़े हो रहे हैं। विश्वामित्र का आगमन हुआ है। राजा के दरबार में आए हैं। उन्होंने निवेदन किया है कि, मुझे असुर सता रहे हैं। मुझे अनुज के साथ राम दे दीजिए। धन्य है मेरे देश का ऋषि

जिन्होंने सम्राट से संपत्ति नहीं, संतति मागी; द्रव्य नहीं, सपूत मागा। दशरथजी तुरंत बोले, 'महाराज, आप यह क्या माग रहे हैं? धन, गाय, भूमि ले जाय। परंतु राम को मत ले जाइए।' वशिष्ठजी राजन् को समझाते हैं, 'राजन्! हर्षित होकर दे दिजिए।' बिन गुरु संदेह कौन तोड़े? फिर तो गुरु आज्ञा शिरोमान्य। दोनों पुत्र सौंप दिए। विश्वामित्र के साथ दोनों पैदल यात्रा कर रहे हैं। ताड़का आई। उसे मारकर तार दी। ऋषि समझ गए यह बालक ब्रह्म है। दूसरे दिन यज्ञ का आरंभ हुआ। मारीच को बिना नोक का बाण मारकर शतजोजन दूर समुद्र तट पर फैंक दिया। सुबाहु को जलाकर निर्वाण दिया।

विश्वामित्रजी ने कहा, आप यज्ञ रक्षा हेतु आए थे। कार्य पूर्ण हुआ। पर अभी भी दो यज्ञ अधूरे हैं। अहल्यायज्ञ और जनकपुर का धनुषयज्ञ। धनुषयज्ञ सुनते ही रामजी की पदयात्रा आगे चली। रास्ते में गौतम का आश्रम आया। बिलकुल निर्जनता! कोई एक पथ्थरदेह और उसमें अहिल्या पड़ी है! साहब, यह जगत कितना विचित्र है! लाभ ले ले फिर चलते बने! जो लोग अहिल्या अहिल्या के नाम जपते थे, अच्छे संबोधन करते थे आज वे सब भाग खड़े हैं! जब सब हट जाते हैं तब राम आ खड़े हो जाते हैं।

अहल्योद्धार पश्चात् राम आगे बढ़े और जनकपुर पहुंचे हैं। अमराई में निवास था। जनकराजा को पता चला। विश्वामित्र और जनक मिले। वहां बाग में घूमने निकले। राम और लक्ष्मण आए। राम को देखते ही जनक को हुआ कि यह कौन है? नाम-रूप को मिथ्या माननेवाले जनकराज को लगा ऐसा रूप! यह कौन है? विश्वामित्र से पूछा, 'हे मुनि, बताइए कि ये कौन है? इन्हें देखकर मैं वैराग्य भूलने लगा हूं। मेरे मन में अनुराग फूट रहा है।' 'जनक, जगत में जो जड़-चेतन सृष्टि है सबको प्रिय लगे ऐसा तत्त्व है।' ऐसा विश्वामित्र ने कहा और तुलसी केमेरा घूमाते हैं!

मन मुसुकाई भानुकुल भानू।
रामु सहज आनंद निधानू।।

बाबा, विश्वामित्र यों बोले तब रामजी मन ही मन हंसते हैं। संकेत किया कि अभी सारे रहस्य मत खोलिए। जनकजी प्रसन्न हुए। सुंदरसदन में विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण ठहराए गए। दुपहर हुई। भोजन कर सभी ने विश्राम किया।

विश्राम दे वह राम, आराम दे वह राम, विराम दे वह राम। फिर किसी भी चीज से आपको आराम मिले वह राम है। रामको संकीर्ण मत कीजिए। उसकी बुनावट चौड़ी है। आपके घर में बीमार को पूछे, 'भाई, अब कैसे हो?' वह कहे, 'आराम है।' 'यह आराम कैसे हुआ?' कहे कि, 'दवाई ली उससे।' तो, दवा राम है। राम मानी महामंत्र गिनते हैं वह तो है ही पर जो वस्तु हमें आराम दे ऐसे तमाम तत्त्व राम है।

मानस-लोहपुरुष
॥ ८ ॥

सरदार पटेल में लक्ष्मण की जागृति, शत्रुघ्न का मौन, भरत का समर्पण था

ये दोनों (गांधी और सरदार) विभूति विशेष, जिन्हें पुन: एक बार स्मृति में लेकर हम आगे बढ़ें इससे पहले मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करूं। विचार यज्ञ के आचार्य आदरणीय ज्येष्ठजन गुणवंतभाई शाह, उन्होंने तीन तीर्थों की बात कर उसमें निमज्जन कराया। आपने काफ़ी अच्छी बातें बताई। आपके अभ्यास और अनुभव को प्रणाम।

'अथर्ववेद' में एक ऋचा है। जो आचार्य को लेकर है। यह विश्ववंद्य विभूति (गांधीजी) को भी हम आचार्य कह सकते हैं। वेद की वंदना करता हूं तब इन्हें (वल्लभभाई) को भी मान सकते हैं। 'आचार्यो मृत्युर्वरुण: सोम: औषधय: पय:।' 'अथर्ववेद' की यह छोटी ऋचा है।

यहां आचार्य के लक्षण बताए हैं। ऋषि कहते हैं, आचार्य मृत्यु है। 'भगवद्गीता' में कृष्ण कहते हैं कि 'मैं मृत्यु हूं।' गुणवंतभाई, कई चीजों को मारने का काम आप करते हैं। अंधश्रद्धा, मौत के मुंह में धकेल दी जाय, कुरिवाजों को जलाया जाय, दंभिक जड़ परंपराओं का छेद उड़ाया जाय वह जरूरी है। ऐसे दंभ को मारने का काम आचार्य कर रहे हैं, इसका मुझे आनंद है। मेरे 'रामचरित मानस' में ऐसा लिखा है -

दंभ मान मद करहिं न काऊ।
भूलि न देहिं कुमारग पाऊ।।

प्रभु कहते हैं जो दंभ नहीं करता उनके हृदय में रहने की मेरी इच्छा है।

जिन्ह कें कपट दंभ नहि माया।

तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया।।

'रामजी, आपको रहना है न, तो देखिए ऐसे घट में रहो जहां दंभ नहीं।' ऐसा वाल्मीकि कहते हैं -

नथी दीठी कदी भूखने छतांये भूख पर बोले!

अनीतिमय भर्युं जीवन, सभामां पाछो नीति पर बोले!

पराइ नारीने देखी जेनां नयन आमतेम डोले!

अने सभा मध्ये ऊभो पाछो ब्रह्मचर्य पर बोले!

यह दंभ है! आप तो जानते हैं मैं और मेरी पोथीजी खादी पहनते हैं। हमारे रामजी के मंदिर में ठाकुर भी खादी ही पहने। मंदिर पताका भी खादी की है। मैं दबाव नहीं डालता। खादी का विकल्प रहे तो भी चला देता हूं। मैं अडियल या जिद्दी नहीं हूं। जिद्द हिंसा है। आपके सहज व्रत स्वयंभू हो तो दुनिया आपके किसी भी व्रत का भंग न कर सके। दुनिया बहुत शालीन है। हम अडियल हो गए हैं! दुनिया जीने जैसी है।

वाईज़े मोहतरम् इस तरह

बादाखाने में आना बुरी बात है।

अब आ ही गए तो थोड़ी पी लीजिए,

बिन पिए लौट जाना बुरी बात है।

तो, एक प्रकार का अलग अडियलपन खड़ा होता है। ऐसी वस्तु को हमारे आचार्य मारते हैं। अत: आचार्य मृत्यु है। कोई भी बुद्धपुरुष आश्रित की मृत्यु है। वे उसे मारते हैं फिर नवसर्जन करते हैं। 'अथर्ववेद' कहते हैं आचार्य वरुण हैं। वरुण के दो अर्थ है। देवता के रूप में वरुण कितनों का अधिपति है। दूसरे अर्थ में वरुण माने मेघराजा। अनराधार बरसता है। अपने आचार्यों की तरह। जिनके हृदय स्निग्ध हो उसमें बीज बोकर फिर वर्षा भी करते हैं। भूमि तैयार करे, सूत्रबीज भी वही दे। फसल के लिए वर्षा भी वही करते हैं।

सोम, चंद्र आचार्य समान है। उनका भीतरी शैत्य ज्यों का त्यों रहता है। लोगों को विराम देना है, शांति देनी है, प्रसन्न रखने हैं। यह चन्द्रमा की प्रकृति है। ऐसा आचार्य वेद भगवान कहते हैं। आचार्य सोम है और 'औषधय:।' आचार्य मानसिक बीमारी की औषधि है। तुलसी लिखते हैं -

सद्गुरु बैद बचन बिस्वासा।

संजम यह न बिषय कै आसा।।

आचार्य हमारी दवा है। समयांतर ऐसा हुआ आचार्य दवा मिटकर दुआ बन गए! उसे दवा बनना था। उसे समाज की पीड़ हरनी थी। हां, महापुरुष दुआ दे सके पर वह औषधि है। सद्गुरु कौन? जो हमारे मानसिक रोगों की औषधि है।

अंतिम सूत्र, 'पय:।' दूध है। माँ का दूध है। इन महापुरुषों में ऐसी बुद्धता होती है। पहुंचा हुआ फकीर निज़ामुद्दीन ओलिया। एक बार शाम के समय बंदगी पूरी कर बैठे हैं। उनके करीबी आश्रित अमीर खुशरों ने देखा कि बाबा की आंखों में आंसू है। क्या कारण होगा? अमीर को अच्छा नहीं लगता है। पूछने से डर लगता है। वह सोचता है, क्या मेरी कोई भूल हुई होगी? जो बहुत ही करीब हुए हो उन्हें ऐसा ही अनुभव होता है। न तो पास जा सके, न पूछ सके। हिम्मत कर जाते हैं कि मेरी कोई गलती हुई हो तो माफ़ी माग लूं। 'बाबा, क्या मैं पूछ सकता हूं आप उदास क्यों है?' 'नहीं बेटे, ऐसी कोई बातें नहीं है।' 'नहीं, नहीं बाबा! आप बताइए।' 'तुझे ऐसा विचार क्यों आया कि मेरे आचार्य मुझसे नाराज है?' 'हां, मुझे लगा तो था!' 'अभी तक तू मुझे पहचान न सका? मैं तो माँ का दूध हूं।' माँ का दूध रूठता नहीं है, रानियां रूठती है! निज़ाम ने 'दूध' शब्द कहा। ऐसा सेतु तो अपने यहां है ही।

थोड़े दिन पहले मेरे यहां एक भाई आया। उसके साथ बैठा था। हम यूं ही बातें करने लगे। मैंने पूछा, 'कुछ काम है, भाई?' उसने कहा, 'कोई काम नहीं है। मैं एक मुस्लीम युवा हूं।' मैंने पूछा कुछ कहना है? तो कहे, 'ना बापू, आपकी कथा पीपावाव में थी। वहां से मेरा गांव दस कि.मि. दूर था। एक बार दीदार करने थे! पर इतनी बड़ी भीड़! इसलिए तलगाजरडा आया हूं।' फिर मैंने बार-बार पूछा, 'कुछ काम है?' कहे, 'कोई काम नहीं है पर आप बार-बार पूछते हैं तो कहूं, 'मक्का-मदीना जा सकूं ऐसी स्थिति नहीं है। आपके हनुमानजी को कहियेगा कि मदीना में मेरी उपस्थिति मानी जाय।' ऐसा समन्वय तो इन लोगोंने किया है! फराज़ का शे'र है -

तुम्हारी बातें लंबी है, दलीलें है, बहानें है।

हमारी बात सिर्फ़ इतनी है, हमारी ज़िंदगी तू हो।

हम शास्त्र, तर्क नहीं जानते। हमारे लिए तो बस एक तू ही है। इन लोगों (गांधी-सरदार) ने यह सब किया है। एकता निर्मित हुई है। क्या बुद्धपुरुष नाराज़ होते हैं? कौन साधु है, यह ब्रह्मानंद कह गए हैं -

त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी, रीत जगत से न्यारी।

ब्रह्मानंद संतन की सोबत, मिलत है प्रगट मुरारी।।

गांधीबापू ने 'आश्रम भजनावलि' में इस भजन को स्थान दिया है। हम तो आम है, हम रूठ भी जाय!

रमतां रमतां लडी पडै भै, माणस छे.

हसतां हसतां रडी पडे भै, माणस छे.

पहाडथीये कठ्ठण मक्कम माणस छे,

दडदड दडदड दडी पडे भै, माणस छे.

- जयंत पाठक

तो बाप, माँ का दूध रूठता नहीं है। जगद्गुरु शंकराचार्य कहते हैं, 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।' ऐसा राष्ट्र में हो रहा है, होना भी चाहिए। ये विचार दूर-दूर तक पहुंचने चाहिए।

कथा का केन्द्रीय विषय मानस-लोहपुरुष है। मैं यह बता चूका हूं कि तुलसी किन्हें वल्लभ कहते हैं। लक्ष्मण, शंकर, शत्रुघ्न, वल्लभ है और श्रुतकीर्ति का वल्लभ शत्रुघ्न है। कोई किसी की प्रतिलिपि नहीं, हम अपने में जैसे होते हैं वैसे ही होते हैं। परंतु शिव के अंश होने के नाते शिव के लक्षण जीवन में आते हैं। शत्रुघ्न श्रुतकीर्ति के वल्लभ है। शत्रुघ्न के दो-तीन लक्षण सरदारसाहब में दिखते हैं।

सरदारसाहब स्पष्टभाषी थे। जरूरी न हो, गलत विचारणा चले, निर्णय न लिए जाए तब शत्रुघ्न की तरह मौन रहते थे। 'रामायण' का मौन पात्र शत्रुघ्न है। 'रामायण' के गायक रूप में मैं कहूं कि सरदार पटेल में लक्ष्मण की जागृति थी, शत्रुघ्न का मौन था, हनुमान का धैर्य तथा स्थैर्य था। भरत का समर्पण और त्याग सरदार साहब में था। शत्रुघ्न की तरह मौन रहते थे। भीतर से मौन पर जरूरत पड़ने पर स्पष्टभाषी और तू-तड़ाक करनेवाले!

दूसरे, भारत का उपप्रधानमंत्री अनेक कार्यों में घिरे रहते थे। स्वास्थ्य अच्छा रहा तब तक सौ-दो सौ मुलाकाती आते थे। सतत व्यस्त, पर भीतर में तन्हाई! 'रामचरित मानस' में भरत के अनुगामी शत्रुघ्न है। साहब, जिसे त्याग का अनुगमन करना हो वह बातूनी नहीं होता। शत्रुघ्न भरतरूपी त्याग का अनुकरण करता

है। 'रामचरित मानस' में भरत का एक दूसरा रूप है। भरत राम के प्रेम का विग्रह है। 'राम प्रेम मूरति तनु आही।' भरत परमात्मा का प्रेम बनकर आया है। भरत के प्रेम का अनुगमनकर्ता बातूनी नहीं होता। इसीलिए शत्रुघ्न मुक्त है। 'रामायण' में शत्रुघ्न की व्याख्या है, 'सूर सुसील भरत अनुगामी।' मौन है, शूरवीर है। यह लोहपुरुष शूरवीर है। तबीयत ठीक न हो तो मेनन साहब को कहे, हैदराबाद हो जाईए और मुझे कहिए कि अब क्या करना है? निर्णय करने में देर न लगे। वे शूरवीर थे। याद रखिए, अकेली शूरवीरता विधुर है यदि उसका कंथ शील न हो तो! 'रामायण' में बल के बहुत वर्णन है। पर शील न हो तो? 'है कपि एक महा बलसीला।' रावण को चाहे उतना खराब मानिए पर उसे पता है कि मेरे पास बल है। हनुमान के पास बल और शील दोनों है। किसान पुत्र सरदार पटेल में शौर्य और शील दोनों हैं।

शत्रुघ्न महाराज का लक्षण मौन, त्याग, प्रेम का अनुगमन और शौर्य है। साथ ही साथ शील भी है। पटेल साहब में भी है। शत्रुघ्न को अकेले रहने की आदत है। 'एकान्ते सुखमास्यताम्।' यह बात मैंने कई बार रखी है। भगवान राम की पादुका लेकर भरतजी अयोध्या आते हैं। गुरु वशिष्ठजी की आज्ञा से पादुका राजसिंहासन पर स्थापित होती है।

मैं तो शत्रुघ्न की बात सरदार साहब के साथ जोड़ना चाहता हूं। जब भरत उदासीन व्रत धारण कर नंदिग्राम के लिए निकलते हैं तब श्रुतकीर्ति का वल्लभ शत्रुघ्न माँ कौशल्या के राजप्रसाद में एक खंभा पकड़कर मौन खड़ा है। बहुत तेजस्वी है। ऐसे बलिदान होते रहते हैं। ये खंभे मदद करते हैं। गांव के दालान के खंभों ने बहुत धीरज बंधाई है। भरत तो भरत है, कैसे भूले?

भरतजी शत्रुघ्न को पूछते हैं, 'भाई शत्रुघ्न, तुमने सुना न?' आखिर में आदमी की भी कोई सीमा है! आंख में आंसू आ गए। माँ कौशल्या एक दासी का सहारा लेकर खड़ी हुई। माँ उसके पास जाती है। मस्तक पर हाथ फैलाती है। तब यह मौन पात्र केवल इतना बोलता है, माँ! मेरे पिता का स्वर्गवास, रामजी का बनवास, भैया लक्ष्मण और माँ जानकी उनके साथ है। अब भरत नंदिग्रामबास की बात करते हैं। मेरे लिए निर्णय आपको लेना है। छोटा होने के नाते पूछता हूं अब मैं क्या करूं? मुझे क्या करना है?' तुलसी का पद याद आता है -

जाऊं कहां तजि चरन तुम्हारे।

एक तन्हाई! तुलसीदर्शन शत्रुघ्न को वल्लभ कहता है। शत्रुघ्न महाराज के चरित्र में ये सभी लक्षण दिखते हैं। सरदार साहब के जीवन में भी अलग-अलग संदर्भ में दिखते हैं। शत्रुघ्नरूपी वल्लभ की पत्नी का नाम श्रुतकीर्ति है। इस संदर्भ के साथ जब इस (सरदार) वल्लभ की वंदना करते हैं तब श्रुति का एक अर्थ कान होता है। श्रवण; कीर्ति कान से सुनते हैं। सबकी इच्छा होती है कि हमारी कीर्ति हम हो तब हमारे कान से सुने। या ऐसे पात्र हो तो उनकी कीर्ति कानों तक पहुंचे। पर यह मानव परवा नहीं करता था कि उनकी कीर्ति लोगों के कानों तक पहुंचे। उन्हें प्रशंसा की भी परवा नहीं थी। उनके मन में पद की अपेक्षा कार्यमहिमा अधिक था। ये गांधी के अंध अनुयायी नहीं है। किसीका अंध अनुयायी मत बनिए। यदि ऐसा होता तो ईश्वर हमें आंखें ही क्यों देता? इसका सदुपयोग कीजिए। 'फराज़' साहब का शे'र -

उसने मुझे छोड़ दिया तो क्या हुआ 'फराज़',

मैंने भी तो उसके लिए सारा जहां छोड़ दिया था।

तो, 'मानस-लोहपुरुष।' मेरी व्यासपीठ सरदार साहब के बारे में थोड़ी बातचीत कर रही है। अब कथाक्रम लें। राम-लक्ष्मण नगरदर्शन हेतु निकले हैं। समस्त नगरी राम के रूप में डूबी है। दूसरे दिन गुरु की आज्ञा लेकर पुष्पवाटिका जाते हैं। उसी समय किशोरी जानकीजी आठ सखियों के साथ गिरिजापूजन के लिए आती है। जानकी ने सखियों के साथ स्नान किया। फिर मंदिर गई। माँ दुर्गा की पूजा की। इतने में एक सखी राम-लक्ष्मण को देख लेती है। वह दौड़ती हुई जानकी को इत्तला करती है कि सायंकाल जिन दो राजकुमारों के रूप में पूरी नगरी डूब गई थी ये दोनों उद्यान में पुष्प चुन रहे हैं। हम राजकुमारों के दर्शन करें।

जानकी सखीरूपी सद्गुरु को आगे करती है। उनके नक्शे कदम पर हमें चलना चाहिए। ऐसा कर सके तो राम तक पहुंच सकते हैं। जानकीजी सखियों के साथ जाती है। जानकीजी के चलने से उनके गहनों की खनक, हाथ के कंकण, पैरों के नुपूरों की आवाज़ें आती है। रामजी सुनते हैं। जानकीजी का रूप अलौकिक है। हाथ के आभूषण उदारता और दान के प्रतीक है। कटिभाग की करधनी संयम की प्रतीक है। पैरों के नुपूर मंगलमय आचरण के प्रतीक है। जब कोई दिव्य आचरण, संयम और समर्पण आए तब हरि भी उसे देखने में उतावले होते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

लक्ष्मणजी को लगा भगवान का मन प्रलोभन में फंसा है। अब जानकी भी डूबे अत: वे राम को लतामंडप में ले जाते हैं। तुलसीदासजी का इरादा यहीं दोनों का ब्याह रचा देने का है। इसलिए 'लतामंडप' शब्द है। शेष तो सभी औपचारिकता थी। तत्त्वत: वे अलग कहां है? लक्ष्मणजी भगवान राम के बालों में फूल लगाते हैं। पूजारी ठाकुरजी को सजाता है। अब राम को सजाने में एक ही वस्तु बाकी है। कई लोग कहते हैं राम मुकुट पहनते थे। अरे! रामजी भी मोरपिच्छ लगाते थे। जनक के उद्यान में नृत्य करते मयूर का एक पिच्छ गिर पड़ा। जो शुद्ध भाव से नृत्य करे, अपनी निजता में, वह पक्षों से पर हो जाता है। वह फिर पक्षापक्षी में नहीं पड़ता। वह निराग्रही बन जाता है। गिरे हुए पिच्छ को लक्ष्मणजी ने उठाकर रामजी के मस्तक पर लगाया।

मोर पंख सिर सोहत नीके।

राम और कृष्ण मोरपंखवाले हैं। दोनों को अलग मत कीजिए। प्रभु ने दुनिया को दिखा दिया कि शुद्ध भाव से जो नर्तन करते-करते अपने आग्रह छोड़ देंगे उनका पक्षधर मैं बनूंगा।

जानकीजी ने देखा पर मर्यादा है। यह तो जनककन्या है। तुलसी लिखते हैं -

लोचन मग रामहि उर आनी।

कविता देखिए! 'लोचन मग।' नेत्रमार्ग से राम को हृदय में उतारा है। भगवान को अंदर से लिया फिर मेहमान बाहर निकल न जाय अत: जानकी ने आंखों के दरवाजे बंद कर लिए। मानो सीता ध्यानस्थ हो गई। अंतर्मुख होकर राम के रूप का मधुर रसपान करती है। अब देरी हो रही है। उद्यान में झरने बह रहे हैं। झरना कूदते समय जानकीजी मुडकर रामजी को देख लेती है! मुझे इतना ही कहना है कि केवल मूर्ति में ही हरि को न देखिए; बहते झरने में भी देखियेगा। कभी पुष्पाच्छादित लताओं में भी हरि का स्मरण कीजिएगा। कभी पक्षियों के कलशोर में भी, हकीकी संगीत की धून सुनियेगा। परमात्मा हर जगह बिखरा पड़ा है। उसे एक ही जगह पर कैद न करे।

जानकी फिर भवानीमंदिर गई। माँ की स्तुति की है। इतने प्रेम से स्तुति सुन भवानी प्रसन्न हुई है। 'रामायण' में लिखा है कि मूर्ति हंसने लगी। मूर्ति बोली, माला दी, हंसने लगी। यह सब हुआ। अब यह श्रद्धाजगत यों कहता है। हमें लगे कि क्या मूर्ति बोले? उसकी भाषा अलग होती है, साहब! विनोबाजी तो परम प्रज्ञावान, ये कहे कि मैं पंढरपुर के विठ्ठल के दर्शन करूं तो मुझे ऐसा लगे कि विठोबा मुझ से बातें कर रहे हैं! वह भाषा अलग होगी। अमुक वस्तु हमें समझ में न आए तो सिद्धांत मत बनाइए। मूर्ति ने बोलकर जानकीजी को आशीर्वाद दिए -

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सांवरो।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।

'तेरे मन में जो बस गया है, वही सांवला दूल्हा तुझे मिलेगा।' जानकीजी सखियों के साथ घर पहुंची। फिर राम-लक्ष्मण फूल लेकर घर गए। दूसरा दिन पूरा हुआ। धनुषयज्ञ आयोजित हुआ। राम ने धनुष के टूकड़े किए। जानकी ने जयमाला पहनाई। परशुराम आए। प्रभाव देखकर चले गए। माघ सुद पंचमदिन आया। अयोध्या से दशरथजी बारात लेकर आए। धूमधाम से चारों भाईयों का ब्याह हुआ। भगवान ब्याह कर पुन: अयोध्या आए। 'बालकांड' पूरा हुआ।

सरदार साहब जरूर स्पष्टभाषी थे। पर आवश्यक न हो, गलत चर्चा चलती हो, निर्णय न लिए जाते हो, तब शत्रुघ्न की तरह मौन रहता यह मानव! शत्रुघ्न 'रामायण' का मौन पात्र है। 'रामायण' के एक गायक के रूप में मैं सावधानी से कह सकता हूं कि सरदार पटेल में लक्ष्मण की जागृति, शत्रुघ्न का मौन, हनुमान का धैर्य और स्थैर्य था; भरत का त्याग और समर्पण सरदार साहब में था।

भजनानंद से आपका डिप्रेशन कम होगा

आज 'अयोध्याकांड' के आरंभ में कहूं कि राजा राम बने यह बात घोषित हुई। पर रामजी को चौहद वर्ष का बनवास मिला। भगवान राम चित्रकूटबासी बने। सलक्ष्मण, सजानकी। सुमंतजी खाली हाथ लौटे। दशरथजी को आश्वासन देते है। साहब, आखिरी समय में आदमी अध्यात्म का अनुभव करता है। मानव का इतिहास प्रसिद्ध होता है अध्यात्म गोपनीय होता है। हम इतिहास छिपाते हैं, अध्यात्म दंभ करके बहुत बताते हैं! साहब, सरदार साहब को पहले से ही आंतों की बीमारी थी। आखिरी वर्षो में तो सतत बीमार रहे। फिर भी राष्ट्रकार्य में विलंब नहीं होता था। जब ऐसा लगा कि दिल्ली से बम्बई ले जाना पड़ेगा तब एयरपोर्ट पर सरदार को बिदा करने राजेन्द्रबाबू, पंडितजी आए हुए है। बम्बई उतरे। जब ऐसा लगा कि अब सब पूरा हो गया! आज १५ तारीख है, सुबह सरदार साहब ने आंखें मुंद ली! दिल्ही से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मोरारजीभाई सभी महानुभाव आए हैं और जार-जार रो रहे हैं।

बाप! रामकथा के आधार पर मेरा दृढ मानना है कि जो वस्तु विधाता के हाथों है, हानि है, हम उन्हीं के अंश है अत: ऐसा कह सके कि 'हानि तेरे हाथ में पर हानि में मैं हारुं नहीं, यह मेरे हाथ में।' लाभ तेरे हाथ में पर शुभ मेरे हाथ में। मेरा स्पष्ट मानना है कि प्रत्येक लाभ शुभ नहीं होता। परंतु छोटा-सा शुभ बहुत बड़ा लाभ देता है। यह सत्य याद रखना है। जीवन तेरे हाथ में पर उस जीवन को प्रामाणिकता से, सत्य-प्रेम-करुणा से प्रसन्नता से जीना मेरे हाथ में है। आज उनकी पुण्य तिथि है। रामकथा में लिखा है कि मरण विधाता के हाथ में है पर तेरा स्मरण मेरे हाथ में है। यह होगा तो ही ऐसी गहन आध्यात्मिकता आखिर में निकली होगी -

मारी नाड तमारे हाथ, हरि संभाळजो रे,
मुजने पोतानो जाणीने, प्रभुपद पाळजो रे.

तेरा बिरुद बहुत लंबा-चौड़ा है। हम छोटे हैं। तो, स्वाभाविक है कि सरदार साहब इस तरह से बिदा ले।

मैं कह रहा था कि सुमंत समाचार दे तब छ: बार राम बोलकर दशरथ प्राण छोड़ दे। हाहाकार मच गया! वशिष्ठजी ने सब को स्वस्थ रखने की कोशिश की। महाराज दशरथजी के अंतिम संस्कार हुए। फिर पूरी अवध को लेकर भरत निकलते हैं। भरत गंगातट पर पहुंचते हैं तब ये पंक्तियां आई जो हमने 'मानस-लोहपुरुष' की भूमिका में ली। पर बाप, भरत अयोध्या से निकलते हैं। चित्रकूट पहुंचते हैं तब 'रामचरित मानस' के आलेखन अनुसार पांच विघ्न आते हैं। पर इन विघ्नों से प्रेरणा मिलती है। मेरे गुरु ने मुझे समझाया है वह मैं आपके साथ शेर करता हूं।

कथाक्रम में ये पांच अवरोध है। हमें चित्रकूट पहुंचना हो तो उस पावनयात्रा के ये पांच स्पीडब्रेकर है। तमसा तट से यात्रा का आरंभ हुआ। माताएं पालकी में है। गुरुदेव और विप्रवृंद रथ में है। पर भरत सोचते हैं राम-लक्ष्मण और मेरी माँ जानकी यदि 'बिनु पदत्राणा', हो तो मैं रथ का उपयोग कैसे कर सकता हूं? मैं तो सेवक हूं। भरत रथ में से नीचे उतर जाते हैं। शत्रुघ्न तो अनुगमन करते हैं। भरतजी रथ पर न बैठे तो स्वाभाविक है कि अन्य लोग भी न बैठे। पूरी अयोध्या पैदल यात्रा कर रही है। गुरुजन और माताएं अपवाद है। माँ कौशल्या ने यह दृश्य देखा। उन्होंने पालकीवाले से कहा, भरत के पास ले जा। वे भरतजी के पास आते हैं। माँ ने पालकी का पर्दा उठाकर भरतजी के सिर पर हाथ रखकर कहा, 'पहले एक बार देख ले। तू पैदल चले तो पूरी अयोध्या पैदल चले। रामविरह और तेरे पिता के शोक में अयोध्यावासी की शारीरिक स्थिति ऐसी नहीं है कि इस तरह पैदल चलकर चित्रकूट पहुंच सके। बीच में कितने विघ्न आ सकते हैं! अत: कहती हूं रथ पर बैठ जाओ।' भरत निर्णय बदलकर रथ पर बैठ जाते हैं।

मेरी दृष्टि से राममिलन का-साधकयात्रा का यह पहला विघ्न है। माता की भावना का सम्मान करते, लोगों की पीड़ा का विचार करते भरतजी रथ पर बैठ गए। एक बार किए गए निर्णय में परिवर्तन करना हुआ यह एक विघ्न है। जब हमारी आध्यात्मिक यात्रा शुरू होती है तब हमें नियम बदलने पड़ते हैं, ऐसे कितने ही अवसर जीवन में आयेंगे। तब प्रेक्टिकल होना पड़ेगा। इस मानव (सरदार) को भी इनके जीवन में ऐसा नहीं हुआ है कि एक बार निर्णय किया हो और फिर कभी ऐसा बने तो राष्ट्र के हित में समाधान कर ले! भले नियम या व्रत भंग हो।

सभी शृंगबेरपुर पहुंचे। जहां से हमने ये दो पंक्तियां ली है। निषादराज गुह्य को पता चला कि कैकेयीपुत्र चतुरंगी सेना लेकर इस तरफ आ रहा है और मन में गलतफहमी हुई कि राम को अकेला जानकर चतुरंगी सेना लेकर आ रहा है! अत: हे निषादो, तैयार हो जाइए। गंगा के सभी घाट रोक लो। पता है भरत के सामने जीत पानी कठिन है पर पहले से मृत्यु का साज सज ले। मैं स्वयं भरत से लोहा लूंगा। संकल्प करे कि हम जीवित हैं तब तक भरत का एक भी आदमी इस पार नहीं आना चाहिए। फिर ख्याल आया, सत्य समझ में आया और वही गुह्यराज भरतजी की शरण में जाते हैं।

बाप, जीवन की रामयात्रा का दूसरा पड़ाव है। जब समाज हमारे लिए गलतफहमी करे, चाहे कुछ भी हो, पर आगे न बढ़े, अत: उसके लिए घाट रोके जाय। आध्यात्मिक यात्रा के साधकों को इसके लिए तैयार होना चाहिए। इन लोगों ने भरत के बारे में कैसी गलतफहमी की! परंतु रामयात्रा के साधक में सत्य, प्रेम, करुणा जितनी मात्रा में रहे तो उतनी मात्रा में बरकरार रहेगा। गलतफहमीवालों को पैर पकड़ने पड़ेंगे। समाज को होती गलतफहमी, साधक की चित्रकूटी यात्रा का दूसरा विघ्न है। पर यात्री का मूल सही है यह समझ पाने में गुह्यराज को कितना समय लग गया! उसने सब देखा और तुरंत शरण में आया। तुलसीदासजी ने सरस लिखा है, वर्गभेद-वर्णभेद को तोड़ने की कितनी बड़ी प्रक्रिया गंगातट पर हुई है! वशिष्ठजी परमाचार्य है, कर्मकांडी है। जब गुह्यराज गंगा तट पर मिलने आते हैं तब दूर से आशीर्वाद दिया। स्पर्श नहीं किया। वशिष्ठजी ने भरत से कहा, 'भरत, यह गुह्यराज राम के मित्र है।' 'रामसखा' शब्द जब भरत ने सुना वे दौड़कर गुह्यराज को गले लगाता है! गुह्य का हृदय पीघलता है कि मैंने गलतफहमी की! पर वशिष्ठजी छू नहीं पाए। पर सारा अकडूपन पीघल गया जब चित्रकूट पहूंचे तब। सभी चित्रकूट में मिलते हैं। तब फिर गुह्य मिलता है। तब वशिष्ठजी गले मिलते हैं। भेद की दिवारें टूटी। भरत ने तोड़ी है। दूसरा विघ्न गलतफहमी का था, उससे सफलता से बाहर निकल गए।

प्रयाग पहुंचते हैं, भरद्वाजजी के आश्रम में। वहां तीसरा विघ्न है, एक ऋषि भरत की कसौटी करते हैं कि भरत जैसे अतुलित अतिथि आए हैं तो उनका सन्मान कैसे करूं? पर साधु के मन में, भरद्वाज के मन में जहां संकल्प उठते हैं और कहते हैं, रिद्धि-सिद्धि प्रकट होती है। आदेश मांगते हैं बापजी, भरत के पूरे समाज का हम सन्मान करें, सुविधा खड़ी करें। अब रिद्धि-सिद्धि प्रकट हुई माने? कोई प्रामाणिक साधु प्रामाणिकता से तपता हो तो उनकी सेवा करनेवाले तत्पर होते हैं।

बाप, बहुत व्यवस्था हुई। तमाम वैभव प्रकट हुए। सब विराम करते हैं। आगे का विघ्न सिद्धियां है। भीतरी शुद्धि न हो तो सिद्धि नाश करे! सभी वैभव का उपभोग करते हैं पर भरतजी असंग रहे। तुलसीदासजी दृष्टांत देते हैं, संपत्ति चकवी है, भरत चकवा है। मुनि का आश्रम पींजर है। मुनि चकवा-चकवी को रात में एक साथ करना चाहते हैं। पर संपत्ति भरतरूपी चकवा पर प्रभाव न डाल सकी। पूरी रात भजन में बीताई है। हरियात्रा आगे बढ़ती है तब वैभव विघ्न बनते हैं। सदुपयोग करे सुविधाओं का। यह सब दूसरों के लिए खर्च करे। साहब, यह आनंद अनोखा होता है। तीसरा विघ्न वैभवों का है। संपत्ति प्रभाव न डाल सकी। भजन बचाकर ले गए। भजनानंद आपका डिप्रेशन कम करेगा। बिना शिकायत का भजन सर्वश्रेष्ठ है।

भजन का कुछ फल नहीं। भजन कर सके वही उसका फल है। धर्म स्वाभाविक है, पर धर्म का फल अर्थ है। आप सच्चे धार्मिक है तो भगवान रक्षा करते हैं, अर्थ बढ़े। अर्थ का फल काम है। इसी तरह गति हो तो उसका फल मोक्ष है। यों चलते-चलते तीनों पीछे रह जाय और जो शेष रहे वही मोक्ष है। मेरी व्यासपीठ को पूछे मोक्ष का फल क्या? तो, 'भजन।' भजन का फल क्या? कुछ नहीं। भजनानंद तकलीफें कम करता है। गन्ने का रस पीने में ज्यादा मज़ा आए या गन्ने का रस बन जाने में? गन्ने का रस पीने में आनंद है, गन्ने का रस बन जाना मोक्ष है।

भरत पर संपत्ति प्रभाव न डाल सकी। तीसरा विघ्न है, वैभव मानव की साधना में अवरोधक बनता है। भरत की यात्रा आगे बढ़ती है। सभी देवता एकत्र होकर सोचते हैं यह प्रेममूर्ति भरत चित्रकूट जायेंगे तो राम प्रेमबंधन में बंधकर लौट आयेंगे। तो ये राक्षस मरेंगे नहीं। हमारी पूरी योजना निष्फल हो जायगी! अब ऐसा करें कि राम-भरत का मिलन हो ही नहीं। मेरी दृष्टि से यह भगवद्यात्रा का चौथा विघ्न है। देवता अवरोधक बनते हैं! तुलसीजी ने 'उत्तरकांड' में ज्ञानदीपक का वर्णन किया है। तब लिखते हैं कि, हमारे भीरत ज्ञानज्योति प्रकट हो। पर हमारी इन्द्रियों के द्वार एक-एक देव बैठा है। जब विषय का पवन आता है तब इन्द्रियों के देवता द्वार खोल देते हैं। विषय भोग का पवन बहुत मेहनत से जलाया दीया बुझा देता है। ये देवता विघ्न डालते हैं! देवताओं को वह पसंद नहीं कि कोई इस तरह से आगे बढ़े।

मैं सोचता हूं पतंगोत्सव पर सब आनंद से पतंग उड़ाये तो क्या आपत्ति है? दूसरों की क्यों काटते हो? दुकान में ये पतंगे कितने मेल से बैठी है! पर उन्हें डोर दीजिए कि परस्पर काटना शुरू हो जाय! समाज शांत है पर किसी को सत्ता का दौर मिल गया, प्रतिष्ठा का दौर मिला कि परस्पर पतंग काटनी शुरू हो जाय! हमारी पतंग पड़ौसी ही काटता है! अत: सावधान।

देवता विघ्न बनते हैं। बृहस्पति ने देवराज इन्द्र को समझाया कि हजार नेत्र होने के बावजूद तू अंध है। यह रामभक्त भरत है। प्रेम और त्याग का विग्रह है। क्या वह तुझे तकलीफ़ देने के लिए निकला है? वह तो रामभजन चाहता है। देवगुरु बृहस्पति के कहने से इन्द्र ने अपनी योजना छोड़ दी। अपनी अध्यात्मयात्रा बराबर होगी तो देव विघ्नरूप बनेंगे। पर उसे भी कोई सत्य समझानेवाला आयेगा। देवता के विघ्न भी हट जायंगे।

चार विघ्न हटने पर भरत चित्रकूट पहुंचे। आखिरी विघ्न पर समझना कि रामप्राप्ति दो कदम दूर है। वह विघ्न था लक्ष्मण का विरोध। तुलसी छंद लिखते हैं -

सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भए।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गए।।

भरत का समाज आता है और चित्रकूट में भगवान, जानकी ने स्वयं गोबर से लिपा है, ऐसी वेदिका पर मुनिमंडली बैठी है। इतने में उत्तर दिशा से आंधी उठने लगी! चित्रकूट के निर्भीक प्राणी डरडरकर राम के आश्रम

में आने लगे! साधु-संतों का अविवेक न हो जाय अत: खड़े रह गए। इतने में पांच-सात भील दौड़ते आए। भगवान से कहते हैं, 'अयोध्या के राजकुमार भरत और शत्रुघ्न पूरी अयोध्या को लेकर आते हैं।' यह तो राम है। लक्ष्मण कुछ अलग समझते हैं। राम की प्रतिक्रिया देखिए। तुलसी लिखते हैं -

सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल।।

सुमंगल बैन सुनकर मन आनंदित हुआ। शारदीय कमल जैसे जिनके नेत्र है ऐसे राम की आंख में आंसू! दूसरे ही पल, चित्त चकित है। अभी भी सचकित मन शांत नहीं हुआ है। दूसरे ही पल भगवान सोचने लगे। चित्रकूट में राम चिंतित हुए। यह प्रेममूर्ति आएगी तो फिर वह कहे वही मुझे करना होगा। पिता की आज्ञा का भंग तो नहीं हो जायगा? ऐसी स्थिति रामजी की है।

लक्ष्मण ने देखा कि प्रभु खड़े हो गए। भीलों के समाचार देने पर परमात्मा का चित्त सचकित है। लक्ष्मण भी खड़े हो गए। समय पर बोले कि, 'प्रभु, आप सरल हैं। सबको अपने जैसे मानते हैं। पर, कह देता हूं, भरत के आने का हेतु अच्छा नहीं होगा।' वल्कल को कटिभाग पर लपेटा, नेत्र लाल हो गए! किसी आदिवासी के धनुषबाण की तरह आंखें टेढ़ी हो गई। लक्ष्मण कांप रहे हैं! 'आज राम के सेवक रूप में रणांगण में भरत को सीख दूंगा। मैं जिन्दा रहूं तब तक एक को भी जीवित नहीं छोडूंगा!' यह प्रेम बुलाता है।

लक्ष्मण इतना बोल जाए तो राम सहन कर सके? अद्‌भुत बोले हैं! हमें सीखना चाहिए कि उपालंभ कैसे दिया जाय? हाथ पकड़ा, 'लखन, तेरे जैसे भाई का मुझे आनंद है। मैं तेरी बात में सहमत हूं कि राजमद से अच्छे लोग भी होश खो बैठते हैं। पर राजमद किसे सताए? जिसने-जिसने सपने में भी साधु का संग न किया हो। लखन, भरत स्वयं साधु है। चाहे कितना ही प्रगाढ अंधकार हो सूर्य की सत्ता का नाश नहीं होता।' ऐसा कहकर लक्ष्मण को शांत किया। भगवद्‌यात्रा के पांचवें विघ्नरूप में परिवार में से ही कोई विरोध करेगा हत्या कर डालने तक का! यह पारिवारिक विघ्न है। बुद्ध को उनका चचेराभाई मार डालना चाहता था। प्रह्लाद को उसका बाप मारना चाहता था।

आज मुझे एक भाई ने पत्र लिखा है, ''मेरा फेमिलि मोक्षमार्गी है। भाईयों की इच्छा है कि मैं भी मोक्षमार्ग में शामिल हो जाऊं। पर रामकथा सुनते-सुनते चौपाई सुनने के बाद उसे गाने में, सुनने में इतना आनंद आता है कि मुझे मोक्षमार्ग में कोई रुचि नहीं है।'' पहले उन्हें कहिए कि मोक्ष मार्ग कहां से निकला है और कहां जाता है? वे मार्ग बता सके तो मैं भी आऊंगा! सहज बने रहिए। ये सब धर्मांतर है। घर में ही धर्मांतर कराते हैं! गृहस्थों आप संतानों को भोजन की स्वतंत्रता देते हैं तो भजन की भी दीजिए। धर्म झगडा नहीं करवाता। कोर्ट में जाय वह धर्म नहीं, हार्ट में रहे वह धर्म है।

लक्ष्मणजी शांत हुए हैं। रामजी ने सौगंद खाई है। मेरी नजर से देखूं तो रामजी की आंख में आंसू थे! चौबीस घंटे जागनेवाले भाई की सौगंद ली, 'पिता दशरथ और तेरी सौगंद, इस विश्व में भरत जैसा पवित्र और सच्चा भाई ओर कोई नहीं है।'

मुझे आपको भगवद्‌यात्रा के ये पांच विघ्न कहने थे। जिसमें परिवार की करीबी व्यक्ति ही विरोध करे तब समझना कि अब राम बहुत नज़दीक है। इस तरह भरत चित्रकूट आए हैं। पादुका लेकर अयोध्या पधारे हैं। सिंहासन पर पादुका आसीन कर नंदिग्राम निवास करते हैं। 'अयोध्याकांड' पूरा होता है।

'अरण्यकांड' में भगवान तेरह वर्ष चित्रकूट निवास कर अवतार कार्य को आगे बढ़ाना चाहते हैं। चित्रकूट छोड़कर आगे की यात्रा करते हैं। तीनों आगे बढ़ते हैं। अत्रिऋषि के आश्रम में आए। अत्रि ने स्तुति की -

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।।
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं।।

फिर प्रभु आगे बढ़े। शरभंग के आश्रम में आए। फिर सुतीक्ष्ण और वहां से कुंभज के आश्रम में आए। कुंभज के मार्गदर्शन से आगे बढ़े। रास्ते में गीधराज जटायु मिलते हैं। उनसे मैत्री की। प्रभु गोदावरी तट पर पंचवटी में निवास करते हैं। एक दिन लक्ष्मणजी ने पंचवटी में पांच प्रश्न पूछे है। भगवान राम ने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर दिए है। लक्ष्मणजी अधिक जाग्रत बने हैं। फिर शूर्पणखा का आगमन बताया है। आदमी जाग्रत बने तभी शूर्पणखा का प्रवेश होता है। शूर्पणखा माने वासना, कामना। वह आती है, दंडित होती है, रावण को बहकाती है।

रावण ने मारीच के पास जाकर योजना बनाई। रावण संन्यासी के वेश में प्रतिबिंबित जानकीजी का

अपहरण करता है। जटायु घायल होता है। रावण अशोकवाटिका में सीताजी को ले गया। नरलीला करते भगवान बगैर सीता का आश्रम देखकर रो पड़ते हैं। जटायु, कबंध का उद्धार किया। सीता की खोज करते-करते प्रभु शबरी के आश्रम में आए। शबरी योगाग्नि से प्रभु में लीन हो गई। भगवान पंपासरोवर पधारे हैं। वहां नारद के मिलन पर 'अरण्यकांड' पूरा होता है।

'किष्किन्धाकांड' शुरू होता है। राम-लक्ष्मण के आगे बढ़ने पर ब्राह्मण के रूप में हनुमानजी मिलते हैं। सुग्रीव और वालि का युद्ध होता है। वालि को मुक्ति देकर सुग्रीव को राज्य दिया। सत्ता मिलने पर अच्छे से अच्छे काम करना भूल जाते हैं! आज हो रहा है वैसा ही उन दिनों भी हुआ करता था! ऐसा होता है तब कोई लक्ष्मण क्रोधित होकर आते हैं। शासक को जगाता है। मेरे हरि ने चातुर्मास किया। वर्षाऋतु के बाद शरदऋतु आई पर सीता के समाचार नहीं मिले। सुग्रीव को जगाया है। जानकी खोज का अभियान शुरू होता है। तीनों दिशाओं में भालू-बानर भेजे हैं। आखिर हनुमानजी है। संपाति ने मार्गदर्शन दिया। जामवंत ने हनुमानजी का आह्वान किया। इतने में हनुमानजी पर्वताकार हो गए हैं। 'किष्किन्धा' पूरा हुआ।

'सुन्दरकांड' के आरंभ में हनुमानजी प्रभु की मुद्रिका लेकर समुद्र का उल्लंघन करते हैं। विभीषण-हनुमानजी का मिलन हुआ। विभीषण ने जानकी का पता बताया। हनुमान-सीताजी का मिलन हुआ। हनुमान ने सीताजी को अपना परिचय दिया, सारी जानकारी दी। हनुमानजी ने रावण के बाग के फलफूल खाए। अक्षय का क्षय हुआ। रावण की सभा में हनुमानजी बांधे गए। वार्तालाप होता है। हनुमानजी दो-टूक जवाब देते हैं। रावण क्रोधित हुआ, 'इसे मृत्युदंड' दो! पर विभीषण ने कहा, दूत अवध्य होता है। कोई दूसरा दंड दीजिए। हरि के जन को कोई मारने की बात करे इतने में कोई रक्षक आ पहुंचता है। रावण ने मंत्री परिषद बुलाई। सभी ने कहा, बंदर को पूंछ प्रिय होती है। इनकी पूंछ पर घी-तेल युक्त कपड़े लपेट कर आग लगा दे। जब पूंछहीन बानर राम के पास जायगा तब राम भी डर कर लौट जायेंगे!

हनुमानजी ने लंका में आग लगाई। लंका जलने लगी। विभीषण का घर सलामत रहा। पूरी लंका जलाकर समुद्र में स्नान किया। फिर माताजी के पास जाकर प्रणाम किए। हनुमानजी महाराज चूडामणि लेकर लौटे। प्रभु का पड़ाव समुद्र तट पर हुआ। यहां विभीषण शरण में आया। फिर समुद्र ने सेतु बांधने का मार्गदर्शन दिया। सेतु राम का स्वभाव है। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। 'सुन्दरकांड' पूरा हुआ।

'लंकाकांड' के प्रारंभ में सेतुबंध की रचना हुई। परम रमणीय धरिणी को देखकर प्रभु को लगा यहां महादेव की स्थापना करनी है। भगवान रामेश्वर की स्थापना हुई। प्रभु ने लंका में सुबेल पर्वत पर मुकाम किया। रावण मनोरंजन हेतु अपने अखाडे में आया। प्रभु ने महारस भंग किया। दूसरे दिन राजदूत अंगद संधि प्रस्ताव लेकर गया। संधि विफल हुई। युद्ध अनिवार्य बना। एक के बाद एक राक्षसों का निर्वाण हुआ। रावण इकत्तीसवें बाण पर निर्वाण पाता है। रावण का तेज प्रभु में समा गया। विभीषण का राजतिलक हुआ। जानकी राम का पुन:मिलन हुआ। मूल जानकीरूप प्रकट हुआ।

भगवान पुष्पक विमान में सबको लेकर अयोध्या आते हैं। हनुमानजी ने आकर भरतजी को खबर दी। प्रभु अयोध्या में सबको साथ लेकर उतरते हैं। भगवान सबको प्रणाम कर दौडे हैं। शस्त्र एक ओर फेंककर गुरुदेव को प्रणाम किया। भगवान ने सबको साक्षात्कार करवाया। प्रभु ने देखा कि माँ कैकेयी ग्लानियुक्त है। अत: प्रभु ने कहा कि मुझे उनके घर जाना है। माँ की ग्लानि का निवारण किया। कौशल्या-सुमित्रा से मिलने पर करुणा का सागर उमड़ पड़ा।

वशिष्ठजी ने कहा, 'आज ही राजतिलक कीजिए।' भगवान राम-जानकी दिव्य सिंहासन पर आसीन हुए। राम सत्ता के पास नहीं जाते। सत्ता सत् के पास आई है। भगवान राम सबको प्रणाम कर गद्दी पर बिराजमान हुए। विश्व को प्रेमराज्य का दान दिया। तुलसी लिखते हैं -

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

वशिष्ठजी के प्रथम राजतिलक करने पर त्रिभुवन में जयजयकार हुआ। दिव्य रामराज्य की स्थापना हुई। छ: माह बीते। मित्रों को बिदाई दी। हनुमानजी रुके हुए हैं। समयमर्यादा पूरी होते जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। रघुकुल के वारिस के नाम लिखकर रामकथा को विराम दिया। फिर तो कागभुशुंडिजी महाराज का चरित्र और गरुड ने पूछे सात प्रश्नों के जवाब है। भुशुंडिजी ने गरुड के पास कथा पूरी की। याज्ञवल्क्यजी ने भरद्वाजजी के पास पूरा किया या नहीं इसका पता नहीं। तीनों आचार्यों ने कथा को विराम दिया। तुलसी ने अपने मन को समझाते कथा को विराम दिया।

यह व्यासपीठ नौ दिनों तक आपके सामने मुखर रही। मैं अपनी वाणी को विराम दूं इससे पहले अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। समग्र कथा किसे अर्पित करूं? इतना सारा सुक्रित इकठ्ठा हुआ। आज सरदारश्री की पुण्यतिथि है। आईए, हम सब इकठ्ठे होकर यह नौ दिवसीय रामकथा 'मानस-लोहपुरुष' का जो सुक्रित है उन सरदारश्री की चेतना के चरण में समर्पित करें।

भजन का कोई फल नहीं। भजन कर सके वही फल है। धर्म स्वाभाविक है पर धर्म का फल अर्थ है। आप सच्चे धार्मिक है तो भगवान रक्षण करते है। साहब, अर्थ बढ़े। अर्थ का फल काम है। इस तरह गति हो तो फिर उसका फल मोक्ष है। इस तरह चलते-चलते तीनों पीछे रह जाय और जो शेष रहे उसका नाम मोक्ष है। पर मेरी व्यासपीठ को कोई पूछे कि मोक्ष का फल क्या? भजन है। भजन का फल? कुछ नहीं। भजनानंद तकलीफ़ों को कम करता है। गन्ने का रस पीने में आनंद आए या गन्ने का रस बन जाने में? गन्ने का रस पीने में आनंद आए यह भजनानंद है, गन्ने का रस बन जाना यह तो मोक्ष है।

मानस-मुशायरा

तुम्हारी बातें लंबी है, दलीलें है, बहानें है।
हमारी बात सिर्फ़ इतनी है, हमारी ज़िंदगी तू हो।

•

उसने मुझे छोड़ दिया तो क्या हुआ 'फराज़',
मैंने भी तो उसके लिए सारा जहां छोड़ दिया था।

– अहमद फराज़

या तो कुबूल कर मुझे कमज़ोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तनहाईयों के साथ।

– दीक्षित दनकौरी

वो जिधर भी रहेगा रोशनी फ़ैलाएगा,
चरागों को अपना मकां नहीं होता।

– 'वसीम' बरेलवी

अक्ल और दिल अपनी अपनी कहे 'खुमार',
तो अक्ल की सुनिए दिल का कहा कीजिए।

– खुमार बाराबंकवी

मोहब्बत का कानों में रस घोलते हैं।
ये ऊर्दू जूबां है, जो हम बोलते हैं।

– शरफ़ नानपारवी

ये अलग बात है कि खामौश खड़े रहते हैं।
जो लोग बड़े हैं वो हंमेशा बड़े रहते हैं।

– राहत इन्दौरी

कवचिदन्यतोऽपि

संचालक कलवान, शिक्षक शीलवान और विद्यार्थी बलवान होना चाहिए

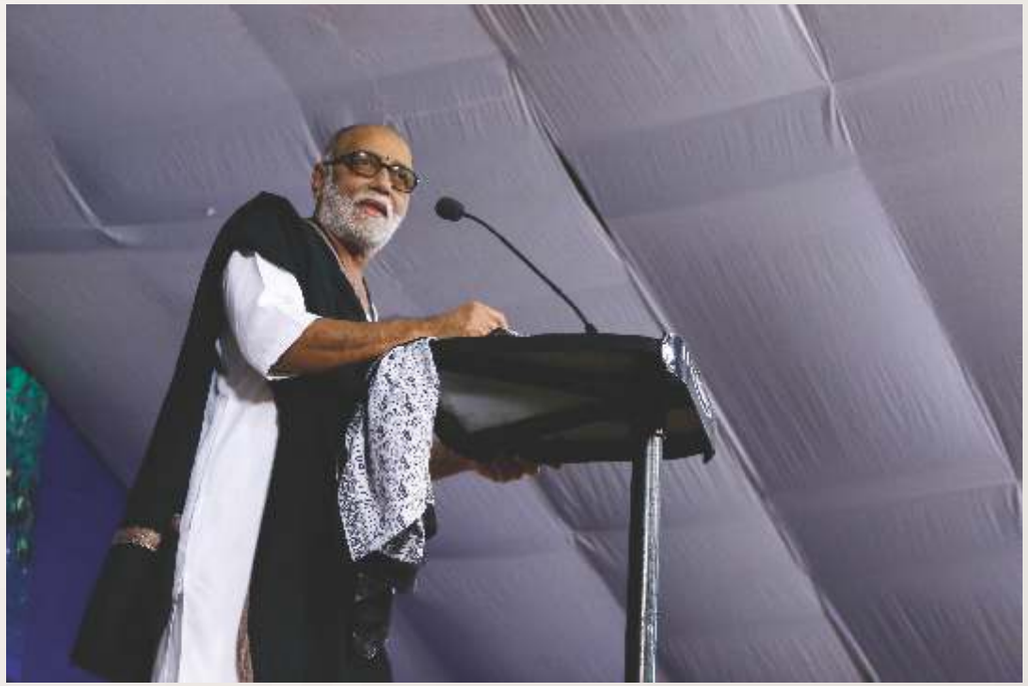

नई तालीम शिबिर, बारडोली में मोरारिबापू का प्रासंगिक वक्तव्य

क्या आपको ऐसा लग रहा है कि अब मुझे कुछ बोलना चाहिए? क्या ऐसा नहीं लगता कि नई तालीम का एक नया अध्याय दे दिया? पर मैं यहां आया हूं और मुझे थोड़ा बोलना है अत: बोलूंगा। ऐसे कार्यक्रम में मैं हंमेशा खड़े रहकर बोलता हूं ताकि मुझे ख्याल रहे कि यह कथा नहीं है।

इस देश में बैठे हुए खड़े हो जाय और कुछेक समय से जो खड़े हैं वे बैठ जाय तो बहुत सारे काम निपट सकते हैं! मैंने धर्ममंच पर देखा है कि धर्मजगत के महापुरुष बैठे हो तब बेचारे दो-तीन जने अकेले खड़े रहते हैं। एक ऐसी सभा में मुझे बोलना था, तब सभी पूजनीय जनों की क्षमा मागते मैंने कहा था कि हम

कितने समय से गद्दी पर बैठे हैं यदि हम खड़े हो जाए और ये बेचारे छत्र लेकर हमारे आसपास खड़े रहते हैं उन्हें जिस दिन हम बैठने का अवसर देंगे उसी क्षण राष्ट्र के उद्धार का जन्मदिन होगा।

विवेकानंदजी ने 'कठोपनिषद' में से कहा कि 'उत्तिष्ठा।' अब मैं नईतालीम के बारे में क्या कहूं? जुगतरामबापा की संस्था में आप इतने वर्षों से हैं, अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। इन लोगों ने लोकमंगल में इतने सारे वर्ष दिए हैं। भद्रायुभाई इतनी युवावय में कितना ताज़गीमय चिंतन प्रस्तुत करते हैं।

नई तालीम की बात करनी है। वेद के मूल सूत्र में से थोड़ी बात करनी है। नई तालीम का मूल सनातन में दिखाई देता है। यजुर्वेद में कहा है, 'आधत पितरो गर्भम् कुमारम्।' पांच साल के छोटे बच्चे को साफ-बबूल के जो फूल मिले हो, अपने आसपास से, उसकी छोटी माला पहनाकर, बालक के भाल पर कुमकुम, वंदन या सिर्फ पानी का तिलक कर उस पर चावल चिपका कर, साफ सुथरे कपड़े पहनाकर उसका पिता उसे आचार्य के पास ले जाय और कहे, 'हमने इसे जन्म दिया है पर आप इसे नया जन्म दे इसीलिए लाये हैं।' यह वेद की नई तालीम है। वह पिता अद्‌भुत बात करता है कि मेरी स्त्री ने इसे गर्भ में धारण किया है समें से वह बाहर आ गया है। इतना बड़ा हो गया अत: हे शिक्षक, हे आचार्य हमारी इच्छा है कि आप हमारे इस बालक को 'गर्भम् कुमारम्।' वर्ग में नहीं, गर्भ में लीजिए। फिर चाहे A या A+ मिले इसकी चिन्ता वेद ने नहीं की है। पर हे आचार्य आप इसे थोड़े समय के लिए अपने गर्भ में रखिए। फिर नव जन्म दीजिए। इसे 'द्विजत्व' कहते है। वेद की यह सनातन ऋचा नई तालीम का स्पर्श करती है। यह इसका मूल है। 'आप इसे गर्भ में रखिए' ये शब्द पसंददीदा है। माता-पिता विद्यार्थी को छोड़ जाय शिक्षक उस पर नज़र रखेगा ही। संरक्षण में रखेगा ही। 'भागवत्' से शब्द ले तो 'प्रेमविक्षण' में रखेगा ही। अपने गर्भ में रखना सबसे बड़ी बात है। जिससे उसमें से नया प्रकट हो, नवसर्जन हो यही बात नई तालीम के मूल में है।

भद्रायुभाई ने कहा कि हम अपने ही बारे में सोचते हैं। मनुदादा पंचोळी यूं कहते थे कि मैं स्कूल में जाता हूं तो उसकी पायदान का नाप शिक्षक को होता है। विद्यार्थी केनाप के कहां होते हैं? बालक सरलता से सीढ़ी चढ़ सकें ऐसे पायदान बनाइए। दर्शक दादा ऐसा सूक्ष्म विचार देतें थे। बापू के बाद भी नई तालीम का कार्य अविरत चल रहा है। मेरी दृष्टि में नई तालीम में तीन वस्तुओं का विशेष ख्याल रखना चाहिए। एक, संचालक कलवान हो माने वह आनेवाले कल को देखता हो; उसके पास एक विज़न होना चाहिए। स्कूल के संचालक, व्यवस्थापक, माँ-बाप के पास भी होना चाहिए। माँ-बाप कहां रुचि रखते हैं? हमारे महेता साहब कहते थे कि ऐसी स्थिति आ गई है कि युनिवर्सिटी का परिणाम कमजोर आए तो युनिवर्सिटी के ही जिम्मेदार लोग हाईस्कूल पर दोष डालते हैं। हाईस्कूल का परिणाम कमजोर आए तो वे प्राईमरी स्कूल पर दोषारोपण करते हैं। प्राईमरी स्कूलवाले कहते हैं कि बालमंदिर में नास्ता और खेल के सिवा क्या करते हैं? बालमंदिरवाले कहे कि, 'हम क्या करे, बच्चे ही ऐसे आते हैं!' माँ-बाप से कहे तो जवाब मिले, इसमें हमारा क्या दोष, हरि ने ही ऐसे दिये हैं! यह हरि इसीलिए भजे जाते हैं कि वे पूरा खेल तमाशा अपने पर ले लेते हैं।

बाप, संचालक, माँ-बाप कलवान होने ही चाहिए। आधुनिक जगत की समझ होनी चाहिए। सत्योपासक ताज़ी गंगा लेकर घूमता है। सत्य, फ्रेश-ताज़ा ही होता है। गुणवंतभाई ने ठीक ही कहा, 'शिक्षक निश्चेतन होकर आता है।' बाप, संचालकगण कलवान होना चाहिए। शिक्षकगण शीलवान होना चाहिए। इस चरित्र पर जब भी धब्बे पड़े है तो शर्म के मारे सिर झुक जाता है। चरित्र शुद्ध होना चाहिए। शूरवीरता नामक पुत्री का पिता चरित्र है। शिक्षकगण शीलवान होगा तो विद्यार्थी बलवान बनेगा। बलवान का अर्थ केवल शरीर ही नहीं, परंतु आत्मबल और मनोबल ज्यादा मजबूत होना चाहिए। ऐसी त्रिवेणी से ही शिक्षण सार्थक होगा। मैं यह नहीं कहता कि ऐसा नहीं हो रहा है, ऐसा हो रहा है पर इसे ओर ज्यादा तेजस्वी बनाए।

विशेष क्या कहना? हमारे आचार्य (गुणवंत शाह) ने एक नया अध्याय हमारे सामने रखा है। उस अध्याय का स्वाध्याय करे। 'शिक्षक से बढ़कर ओर कोई पद नहीं है।' उनकी इस बात को हम याद रखे। नई तालीम में नई रोशनी धूले ऐसा करते रहे। ये गुरुजन इसमें अपनी आहुति देते हैं। हम उनसे जुड़ जाए। मैं पुन: कहता हूं 'आधत पितरो गर्भम् कुमारम्।' और अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

बुनियादी शिक्षण रचनात्मक संघ, बारडोली आयोजित नई तालीम के छठ्ठे महासंमेलन में प्रस्तुत वक्तव्य : दिनांक १४-१२-२०१३

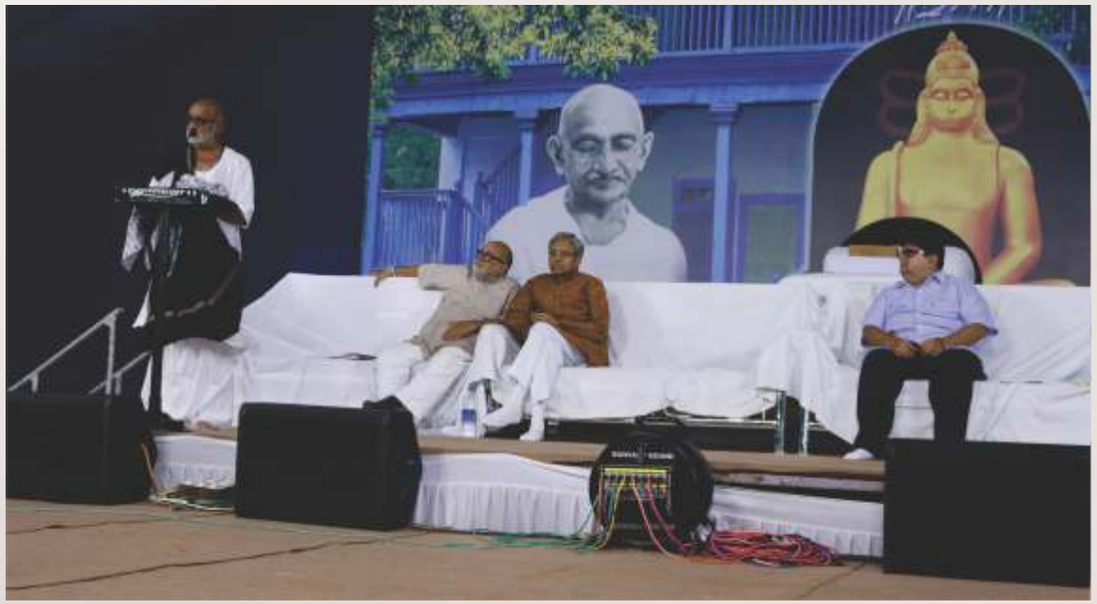

सरदार स्मृति-वंदना

नगीनदास संघवी

गुणवंत शाह

जय वसावडा

आरिफ़ मोहम्मदखान

दक्षाबहन पट्टणी

श्रोता-समुदाय

'सरदार' का अर्थ अगर मुझे करना हो तो मैं अपने ढंग से यों करूं। 'स' मानी सहजता। इनमें काफ़ी सहजता है। 'र' मानी रक्षण करना। समग्र राष्ट्र के रक्षण हेतु जीवन समर्पित किया और देश के रक्षण के लिए कठोर निर्णय लेने पड़ें। 'दा' मानी 'दायित्व।' सरदार को अपने दायित्व का ज्ञान है। जिसे अपने दायित्व का ज्ञान न हो वे दादागीरी करते हैं। 'र' मानी रहम। जिसके दिल में रहमत हो वह दूर होगा तो भी रक्षण करेगा। दायित्व का ज्ञान होने से वे राष्ट्रीय विभूति होंगे। यदि नई 'गीता' लिखी जाय और दसवां अध्याय 'विभूति योग' हो तो कृष्ण अवश्य कहे 'जगत में फ़ौलादी तत्त्व में वल्लभ मैं हूं।'

– मोरारिबापू